Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीसीतापतये नमः

श्रीवाल्मीकिमहामुनिकृतशतकोटिरामचरितान्तर्गतं-

आनन्दरामायणम्

'ज्योत्स्ना'ऽभिधया भाषाटीकयाऽऽटीकितम्

पूर्णकाण्डम्

प्रथमः सर्गः

(सोमवंशी राजाओंकी कथाका विस्तार)

श्रीरामदास उवाच

अथ शासति राजेन्द्रे रामे सीताभिरञ्जिते । सभायामेकदा दूतः सुषेणस्य गजाह्वयात् ॥ १ ॥
समाययौ स विकलो रामं नत्वाऽब्रवीद्वचः । राम राजीवपत्राक्ष सोमवंशोद्भवैर्नृपैः ॥ २ ॥
संवेष्टितं गजपुरं नलाद्यैश्चिरजीविभिः । तद्दूतवचनं श्रुत्वा राघवोऽतीव विस्मितः ॥ ३ ॥
वसिष्ठं प्राह मद्राज्ये न कदा पार्थिवोत्तमाः । समागता मया योद्धुं किमिदानीं हि श्रूयते ॥ ४ ॥
किं कारणं गुरो ह्यत्र विचारय सविस्तरम् । तद्रामवचनं श्रुत्वा तं गुरुः प्रत्यभाषत ॥ ५ ॥
प्रष्टव्यमद्य वाल्मीकिं येन ते चरितं कृतम् । तच्छ्रुत्वा लक्ष्मण प्रेष्य समाहूयाथ तं मुनिम् ॥ ६ ॥
सीतया पूजनं कृत्वा रामो वृत्तं न्यवेदयत् । वाल्मीकिस्तु तदा प्राह रामं किंचिद्विहस्य सः ॥ ७ ॥
किं त्वं न वेत्सि राजेन्द्र विनोदान्मां तु पृच्छसि । शृणुष्व तर्हि मे वाक्यं सर्वे शृण्वन्तु ते प्रियाः ॥ ८ ॥
एकादश सहस्राणि वत्सराणि तथा पुनः । एकादश समाश्चापि मासास्त्वेकादशैव हि ॥ ९ ॥

श्रीरामदास कहने लगे—जब कि रामचन्द्रजी सीताके साथ सुख भोगते हुए अयोध्याका राज कर रहे थे। उन्हीं दिनों सुषेणका एक घबड़ाया हुआ दूत हस्तिनापुरसे आ पहुँचा। उसने भगवान्‌को प्रणाम करके कहा—हे राजीवपत्राक्ष राम ! सोमवंशी राजे नल आदिने हस्तिनापुरको चारों ओरसे घेर लिया है। दूतकी यह बात सुनकर रामचन्द्रजी बड़े विस्मित हुए॥ १–३ ॥ वे गुरु वसिष्ठसे बोले—हे गुरुवर ! यह मैं क्या सुन रहा हूं ? आज तक तो कभी ये राजे मेरे साथ युद्ध करने नहीं आये थे॥ ४॥ कृपा करके आप इसपर सविस्तार विचार करिए। रामकी बात सुनकर वसिष्ठजीने कहा कि यह बात आप वाल्मीकिजीसे पूछें। क्योंकि उन्होंने ही आपके चरित्रकी रचना की है। यह सुनकर रामने लक्ष्मणको भेजकर वाल्मीकिजीको बुलवाया॥ ५ ॥ ६ ॥ वाल्मीकिके आनेपर सीताके साथ-साथ रामने उनकी पूजा की और हस्तिनापुरका सब समाचार कह सुनाया। वाल्मीकिने हँसकर कहा—क्या आपको ये बातें नहीं मालूम हैं ? मालूम हैं। किन्तु कौतुक वश आप हमसे पूछ रहे हैं। अच्छा, आपकी यही इच्छा है तो सुनिए। आपके प्रियजन भी सावधानीके साथ मेरी बात सुनें ॥ ७॥ ८॥ ग्यारह हजार ग्यारह वर्ष, ग्यारह महीना, ग्यारह दिन, ग्यारह घड़ी और ग्यारह पलका समय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकादश दिनान्यत्र घटिकाश्चापि तन्मिताः । एकादश पलान्येव ते राज्यं निश्चितं मया ॥१०॥
शतकोटिमिते काव्ये पुरैव तेऽवतारतः ।
तन्मध्येऽत्र ह्यतीतानि सहस्राणि तथा समाः । अतीताः शेषभूताश्च मासाः शेषं दिनादिकम् ॥११॥
अष्टादशदिनैर्न्यूनमग्रे वर्षं प्रभोऽत्र यत् । शेषभूतं सङ्गरेण परिपूर्णं भविष्यति ॥१२॥
अयं कालोऽवतारस्य समाप्तेस्ते समागतः । गत्वा भागीरथीं पुण्यां पूर्वजेनावनीतलम् ॥१३॥
प्रापितां तव राजेन्द्र तस्यां स्नात्वा यथाविधि । स्तुतो ब्रह्मादिकैः सर्वैः पदं स्वीयं गमिष्यसि ॥१४॥
तन्मुनेर्वचनं श्रुत्वा राघवो वाक्यमब्रवीत् । एतावत्कालपर्यन्तं नलाद्याः कुत्र संस्थिताः ॥१५॥
कुतोऽधुना समायातास्तत्सर्वं विस्तराद्वद । तद्रामवचनं श्रुत्वा वाल्मीकिर्वाक्यमब्रवीत् ॥१६॥
शृणु राम महाबाहो सर्वं ते कथयाम्यहम् । अत्रिर्मुनिः पुरा राम पूर्णिमायां कृते युगे ॥१७॥
वैशाख्यामेकदा सोमं दृष्ट्वा नारीमुखोपमम् । मुमोच वीर्यं भूम्यां स तस्मात्पुत्रो बभूव ह ॥१८॥
सोमस्य दर्शनाज्जातः सोमाख्यः स बभूव ह । सोऽरण्ये जाह्नवीतरे चकार तप उत्तमम् ॥१९॥
एतस्मिन्समये तत्र कश्चिद्धस्ती समाययौ । निहतः पक्षिभिस्तत्र तद्दृष्ट्वा कौतुकं महत् ॥२०॥
सोमो विचारयामास पक्षिभिर्निहतः करी । अस्या भूम्याः प्रभावोऽयं पुरं तत्र चकार सः ॥२१॥
हस्तिनाशात्पुरं जातं तस्मात्तद्धहस्तिनापुरम् । तत्र पौरैः कृतो राजा सोम एव रघूत्तम ॥२२॥
तस्य जातो बुधः पुत्रस्तावुभौ जगतीतलम् । सद्वीपं स्ववशं कृत्वा सुरलोकं प्रजग्मतुः ॥२३॥
तत्र जित्वा सुरान्सर्वान्सुरस्त्रीभिश्च संयुतौ । मुक्त्वा देवान्स्वर्गलोके निवासं चक्रतुर्मुदा ॥२४॥
तयोर्ददौ वरान्ब्रह्मा युवां मद्वंशसंभवौ । युवाभ्यां मोचितस्त्वद्य देवसंघयुतस्त्वहम् ॥२५॥
युवाभ्यां तर्ह्यहं वच्मि वरांश्छृणुत बालकौ । युष्मद्वंशे नृपाः केचिदग्रे त्रिपुरुषोर्ध्वतः ॥२६॥

आपको राज्य करनेके लिए मैंने निर्द्धारित किया था ॥ ९ ॥ १० ॥ ये बातें मैं आपके अवतारके पहले ही अपने शतकोटिसंख्यात्मक रामायणमें लिख चुका हूँ। वे ग्यारह हजार ग्यारह वर्ष व्यतीत हो गये। अब ग्यारह महीना और ग्यारह दिन तथा घड़ी-पल आदि ही बाकी बचे हैं ॥११॥ सब मिलाकर अष्टादश दिवस न्यून एक वर्ष बाकी हैं। वह समय संग्राममें समाप्त होगा ॥ १२ ॥ आपके अवतारका समय समाप्त हो रहा है। अब आप अपने पूर्वज अर्थात् भगीरथ द्वारा लायी हुई गङ्गामें विधिवत् स्नान करके ब्रह्मादिक समस्त देवताओंसे संस्तुत होकर अपने परम धामको जायँगे ॥ १३ ॥ १४ ॥ वाल्मीकिकी बात सुनकर रामने कहा कि अबतक ये नल आदि राजे कहाँ थे ? ॥ १५ ॥ इस समय कहाँसे आ गये है, यह सब आप हमें विस्तारपूर्वक बतलाइए। रामका वचन सुनकर वाल्मीकि बोले–हे राम ! हे महाबाहो ! मैं सब कुछ कहता हूं, सुनिए। बहुत दिन हुए, सत्ययुगमें अत्रि ऋषिने वैशाखकी पूर्णिमाको चन्द्रमाका मुख एक स्त्रीके समान सुन्दर देखकर अपना वीर्य त्याग दिया और उससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ ॥ १६-१८ ॥ चन्द्रमाको देखनेसे वह पुत्र उत्पन्न हुआ था। इसलिए वह सोम कहलाया और वनमें जाकर गङ्गाजीके तटपर उत्तम तप करने लगा ॥ १९ ॥ उसी समय वहाँ एक हाथी आ गया। उस हाथीको कुछ पक्षियोंने मिलकर मार डाला। यह महाकौतुक देखकर सोमने अपने मनमें सोचा कि यहाँके पक्षियोंने हाथीको मार डाला है। यह अवश्य इस भूमिका ही प्रभाव है। ऐसा विचार करके सोमने उसी स्थानपर एक नगर बसाया ॥ २० ॥ २१ ॥ उसी स्थानपर पक्षियोंने हाथीका विनाश किया था। इस कारण उसका हस्तिनापुर नाम पड़ गया। हे रघूतम ! वहाँके पुरवासियोंने आग्रह करके सोमको ही वहाँका राजा बनाया ॥ २२ ॥ सोमके बुध नामका पुत्र हुआ। फिर क्या था, बुध और सोमने मिलकर सब द्वीपोंको अपने अधीन कर लिया और कुछ दिनोंके अनन्तर स्वर्गलोकको गये ॥ २३ ॥ उन्होंने स्वर्गमें देवताओंको जीतकर छोड़ दिया और वे सस्त्रीक वहाँ रहने लगे ॥ २४ ॥ उन दोनोंको ब्रह्माने अनेक वरदान दिये। ब्रह्माने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अन्यैः पराजिताः सप्त पुरुषा न भवंति हि । इति दत्त्वा वरं ब्रह्मा ययौ निजपदं प्रति ॥२७॥
ततः सोमाय दौहित्री दत्ता पद्मावती शुभा । इन्द्रेण तत्र तौ सोमबुधौ स्वैरं स्थितौ चिरम् ॥२८॥
बुधस्य तनयो भूम्यां नाम्नाख्यातः पुरूरवाः । चकार राज्यं धर्मेण तथा तद्धस्तिनापुरे ॥२९॥
तस्य पुत्रश्च गव्योऽभूद्गव्यपुत्रोऽल्प उच्यते । अल्पपुत्रो नलः श्रीमान् दिक्पालान् जेतुमुद्यतः ॥३०॥
राज्ये पुरूरवादींश्च त्रीन् स्थाप्य निजपूर्वजान् । सप्तद्वीपनृपैर्युक्तः प्रययौ मेरुमुन्नतम् ॥३१॥
आदौ जित्वा स वह्निं हि यमं जित्वाऽथ निर्ऋतिम् । प्रययौ वरुणं जेतुं रावणादिभिरन्वितः ॥३२॥
एतस्मिन्नंतरे राम तूर्णं सैन्येन रावणः । प्रययौ नाकलोकं हि सुरानिंद्रादिकान् रणे ॥३३॥
जित्वा निनाय स्वां लंकां सोमो युद्धाय सात्मजः । निर्ययौ सुहृदः सर्वान्सेन्द्रान् मोचयितुं सुरान् ३४॥
तदा निवारयामास ब्रह्मा सोमं त्वरान्वितः । विष्णुर्भूत्वा नृवेषेण रावणं हि हनिष्यति ॥३५॥
त्वं माऽद्य रावणं याहि वरस्तस्मै मयाऽर्पितः । तद्ब्रह्मवचनं श्रुत्वा ययौ सोमोऽमरावतीम् ॥३६॥
भूम्यां नलस्ततो गत्वा वरुणं पवनं तथा । जित्वा कुबेरमीशानं कृतकार्यममन्यत ॥३७॥
आत्मानं च ततः स्वर्गे चेंद्रं जेतुं समुद्यतः । एवं नलेन भ्रमता गतं तच्च कृतं युगम् ॥३८॥
त्रेतायुगसमाप्तौ स ददर्श सकलं बलम् । तत्रादृष्ट्वा रावणं स दूताच्छ्रुत्वाऽवनौ स्थिति ॥३९॥
देवान्स्ववशगान् कृत्वा लंकां स्वां स गतः पुराः । तत्र मार्गे तु भ्रमतो नलस्य नघुकः सुतः ॥४०॥
पुत्रस्तस्य जातीकरस्तत्सुतो वसुदः स्मृतः । तस्य पुत्रो लघुश्रुतः सुरथस्तत्सुतः स्मृतः ॥४१॥
अजमीढस्तु तत्पुत्रस्त्वेवं वंशोऽभवत्पथि । ततः स मंत्रयामास नलो मंत्रिजनैः सह ॥४२॥
किमर्थमिंद्रलोकं तं गन्तव्यमधुना यदि । भुवि देवाः समानीता लङ्कायां रावणेन हि ॥४३॥

कहा-तुम दोनों मेरे वंशज हो। तुमने मेरे सहित समस्त देवताओंको जीतकर भी छोड़ दिया है। इसलिए मैं तुम्हें यह वरदान देता हूँ कि तुम्हारे वंशमें तीन पीढ़ीके आगे सात पुश्त तक जितने राजे होंगे, वे किसीसे भी पराजित नहीं होंगे। इस प्रकार वरदान देकर ब्रह्मा अपने स्थानको चले गये ॥ २५-२७ ॥ इसके अनन्तर इन्द्रने पद्मावती नामकी अपनी सुन्दरी नतिनी सोमको दे दी। इस तरह वे सोम और बुध आनन्दके साथ बहुत दिनों तक स्वर्गलोकमें रहे ॥ २८ ॥ बुधका पुत्र इस संसारमें पुरूरवा नामसे विख्यात हुआ। उसने धर्मपूर्वक हस्तिनापुरमें राज्य किया ॥ २९ ॥ उसका पुत्र गव्य हुआ। गव्यका पुत्र अल्प और अल्पका पुत्र नल हुआ। नल इतना प्रबल वीर था कि उसने दसों दिक्पालोंको जीतनेकी इच्छा की। सेनाकी तैयारी करके वह हस्तिनापुरमें पुरूरवा आदि तीन पूर्वजोंको छोड़कर सातों द्वीपोंके राजाओंके साथ उन्नत शिखरवाले मेरु-पर्वतपर चढ़ गया ॥ ३० ॥ ३१ ॥ वहाँ पहुँचकर उसने पहले अग्निको, फिर यमको और उनके बाद निर्ऋ-तिको जीतकर रावण आदि दैत्योंके साथ वरुणको जीतनेके लिए गया ॥ ३२ ॥ उसी समय रावण अपनी सेनाके साथ स्वर्गलोक पहुँचा और इन्द्रादि देवताओंको संग्राममें जीतकर अपनी लंकाको वापस चल गया। तब सोम अपने मित्रों तथा पुत्रोंको साथ लेकर रावणसे युद्ध करने तथा इन्द्रादि देवोंको छुड़ानेके लिए चल पड़ा ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ उसी समय ब्रह्माजीने आकर सोमको रावणपर चढ़ाई करनेसे रोक दिया और कहा कि स्वयं विष्णुभगवान् मनुष्यका रूप धारण करके रावणका संहार करेंगे। तुम आज रावणके पास मत जाओ। ब्रह्माकी बात मानकर सोम लंका न जाकर अमरावतीपुरी गया ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ इसके अनन्तर वही सोम नलरूपसे इस पृथ्वीपर अवतीर्ण हुआ और अपने पराक्रमसे कुबेर एवं ईशानको परास्त करके उसने अपनेको कृतकृत्य माना ॥ ३७ ॥ कुछ दिनों बाद इन्द्रको जीतनेके लिए नल स्वर्गलोकमें जा पहुँचा। इस तरह उसके घूमते-फिरते सत्ययुग बीत गया ॥ ३८ ॥ त्रेतायुगके समाप्त हो जानेपर नलने सब वीरोंको तो देखा, किन्तु रावण नहीं मिला। अन्तमें नलने फिर सब देवताओंको वशमें किया। लंकापर भी आधिपत्य जमाया। आगे चलकर नलके नघुक, नघुकके जातीकर, जातीकरके वसुद, वसुदके लघुश्रुत, लघुश्रुतके सुरथ, सुरथके अजमीढ पुत्र हुआ और इस प्रकार नलकी सन्तति बढ़ी। एक दिन नलने अपने मंत्रियों-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अस्माकं सेवकः सोऽस्ति दशास्यः करभारदः । निजं पुरं प्रगन्तव्यमधुना चिरकालतः ॥४४॥
दिगाश्रयाद्वयं सर्वे जीविताः स्म चिरं त्विह । पुरूरवादिकास्ते नः पूर्वजाः संति वा मृताः ॥४५॥
नास्माभिश्चिरकालं हि तद्वृत्तं भ्रमतः श्रुतम् । अतः स्वीयपुरं गत्वा द्रष्टव्यास्तेऽत्रिपूर्वजाः ॥४६॥
चेत्सोमबुधयोर्नाकं गन्तव्यं दर्शनेच्छया । तर्हि ताभ्यां युता देवाः किं जेता रावणेन हि ॥४७॥
किं ताभ्यां रहिता देवा जिताश्चेति न वेद्मयहम् । अतस्तत्सकलं वृत्तं विदितं हस्तिनापुरे ॥४८॥
भविष्यति ततो यद्धि कर्तव्यं तत्करोम्यहम् । इति निश्चित्य स नलः शनैः स्वनगरं ययौ ॥४९॥
एतस्मिन्नंतरे राम त्वं जातोऽस्यवनीतले । हत्वा तं रावणं देवा मोचितास्ते दिवं गताः ॥५०॥
सप्तद्वीपांतरस्था ये नृपास्ते स्ववशीकृताः । पुरूरवादिकाः स्त्रीश्च निष्कास्यात्र गजाह्वये ॥५१॥
सुषेणः स्थापितः पूर्वं वानरैः सहितस्त्वया । ततः पुरूरवाद्यास्ते स्वकालेन मृतास्त्विह ॥५२॥
इदानीं ते समायाताः सोमवंशोद्भवा नृपाः । नलाद्याः सप्त स्वपुरं सप्तद्वीपनृपोत्तमाः ॥५३॥
त्वत्कृताः स्ववशगा ये च द्वीपांतरस्थिताः । नृपास्तेषां पूर्वजाश्च स्वसैन्यैस्ते नृपोत्तमाः ॥५४॥
बलिनः कोटिशः सर्वे समायाता गजाह्वयम् । भविष्यति त्वया तैश्च संगरः सोमवंशजैः ॥५५॥
तदा ब्रह्मा सुरैर्युक्तः समागत्य तवांतिकम् । पादयोस्ते प्रणामांश्च नलाद्यैः कारयिष्यति ॥५६॥
कृत्वा कः प्रार्थनां तेऽपि त्वां वैकुंठं प्रणेष्यति । एवं राम सविस्तारं तवाग्रे कथितं मया ॥५७॥
यत्पृष्टं मां त्वया पूर्वं नलादीनां कथानकम् । विवाहकांडमारभ्य रम्यं रामायणं शुभम् ॥५८॥
समग्रं हि मया राम पुराणं श्रावितं तव । पुत्राभ्यामधुना सर्वं शृणुष्व रघुनंदन ॥५९॥
इत्युक्त्वा कुशलवयोश्चकाराज्ञां मुनिस्ततः । विवाहकाण्डात्काण्डानि चत्वारि जगतुः शिशू ॥६०॥

से मंत्रणा की कि जब रावण सब देवताओंको पकड़कर पृथ्वीतलपर ही ले आया है, तब हम स्वर्गलोकको क्यों चलें ॥ ३९–४३ ॥ रावण हमारा सेवक है, वह हमें कर देता है। हम लोगोंको घूमते-घूमते भी बहुत दिन हो गये हैं। इसलिए अब अपनी पुरीको लौट चलना चाहिए। कितनी दिशाओंमें घूमते-फिरते हमलोग बहुत समय तक जीवित रहे, किन्तु पुरूरवा आदि हमारे पूर्वज जीवित हैं या मर गये। मुझे उनकी कुछ भी खबर नहीं है ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ अतएव चलो, अपनी राजधानीको वापस चलें। वहांका हाल-चाल देखें और अपने तीनों पूर्वजोंका दर्शन करें ॥ ४६ ॥ लेकिन हमको यह बात भी नहीं ज्ञात है कि सोम और बुध भी तो और-और देवताओंके साथ रावण द्वारा बन्दी नहीं बना लिये गये। हस्तिनापुर चजनेसे ये बातें भी ज्ञात हो जायँगी। उसके बाद जो करना उचित होगा, सो किया जायगा। ऐसा निश्चय करके वह अपने नगरको लौटा ॥ ४७–४९ ॥ इसी समय हे राम! आपका अवतार हो गया। आपने रावणको मार डाला और देवताओंको छुड़ा लिया। जिससे वे सब देवता स्वर्गलोकको चले गये ॥ ५० ॥ सातों द्वीपोंमें रहनेवाले राजाओंको आपने अपने वशमें कर लिया, वे पुरूरवा आदि तीन राजे भी आपके वशमें हो गये। तब आपने उनको हस्तिनापुरसे निकालकर वानरोंके साथ सुषेणको उसकी गद्दीपर बिठाल दिया। कुछ दिनों बाद समय आनेपर पुरूरवा आदि भी मर गये ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ इस समय नल आदि सोमवंशी राजे उन सात राजाओंके साथ यहाँ आ रहे हैं, जिनको कि आपने अपने वशमें कर लिया था और अब तक वे किसी दूसरे द्वीपमें रहा करते थे। वे राजे अकेले नहीं, बल्कि अपने पूर्वजों तथा करोड़ोंकी विशाल सेनाके साथ हस्तिनापुरपर चढ़े आ रहे हैं। उन सोमवंशियोंके साथ आपको युद्ध करना पड़ेगा ॥ ५३–५५ ॥ उस समय सब देवोंके साथ ब्रह्माजी आकर नल आदिसे आपको प्रणाम करवायेंगे ॥ ५६ ॥ इसके बाद ब्रह्मा आपकी विधिवत् स्तुति करके अपने साथ आपको वैकुण्ठलोक ले जायँगे। हे राम! इस तरह मैंने आपकी आज्ञासे उन नल आदि चन्द्रवंशी राजाओंका वृत्तांत विस्तारपूर्वक बताया ॥ ५७ ॥ हे रघुनन्दन! बहुत दिन हुए, जब मैंने विवाहकांड-से लेकर सारी रामायण आपको सुनायी थी। अब आप अपने पुत्रोंके मुखसे वह पुनीत कथा सुनिए ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ इतना कहकर वाल्मीकिने कुश और लवको रामायण सुनानेकी आज्ञा दी और वे विवाहकांड-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्सर्वं राघवः श्रुत्वा परां मुदमवाप सः । विदुः सर्वे जनाश्चापि वैकुंठारोहणं प्रभोः ॥६१॥

इति शतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानंदरामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये मनोहरकाण्डे सोमवंशनृपकथाविस्तारो नाम प्रथमः सर्गः ॥ ८ ॥

द्वितीयः सर्गः

(रामका सोमवंशियोंसे युद्धके लिए प्रस्थान)

श्रीरामदास उवाच

अथ रामस्तदा प्राह वाल्मीकिं मुनिसत्तमम् । आगंतव्यं त्वया तत्र मुनिभिस्तु गजाह्वयम् ॥ १ ॥
तथेति स मुनिः प्राह राघवं भक्तवत्सलम् । ततः स लक्ष्मणं शीघ्रं राघवो वाक्यमब्रवीत् ॥ २ ॥
पत्राणि प्रेषयस्वाद्य कुमारान्राज्यसंस्थितान् । स्वस्वराज्ये मंत्रिणश्च कृत्वाऽत्रागम्यतां बलैः ॥ ३ ॥
एवमेव प्रलेख्यानि जंबूद्वीपपतीन्वरान् । तथा द्वीपपतींश्चापि दूतास्तांस्त्वरयंतु नः ॥ ४ ॥
तथेति लक्ष्मणश्चोक्त्वा तथा चक्रे यथोदितम् । राघवेण सभामध्ये वाल्मीकिगुरुसन्निधौ ॥ ५ ॥
ततः प्राह पुनः श्रीमान् राघवो लक्ष्मणं मुदा । वासोगेहानि नेयानि बहिर्मम रघूद्वह ॥ ६ ॥
मुहूर्तो वर्त्तते श्वो वै सेनां चोदय सादरात् । आयुधान्यथ यंत्राणि जीर्णानि च बहूनि हि ॥ ७ ॥
पूर्वजैर्विहितान्येव कोशागारेषु वै सदा । तानि निष्कासनीयानि तेषां कालोऽद्य वर्त्तते ॥ ८ ॥
अन्तःपुराणि सर्वाणि बहिर्नेयानि मेऽग्रतः । अग्निहोत्रं पुरस्कृत्य सीताप्यग्रेऽनुगच्छतु ॥ ९ ॥
कोशागाराणि सर्वाणि बहिर्नेयानि वाहनैः । हस्त्यश्वरथपादाता नेयाः सर्वे बहिस्त्वया ॥१०॥
इत्याज्ञाप्य रघुश्रेष्ठो लक्ष्मणं विनयान्वितम् । मन्त्रिणौ नैगमाश्चैव वसिष्ठं चेदमब्रवीत् ॥११॥
अभिषेक्ष्यामि भरतं सप्तद्वीपपतेः पदे । लक्ष्मणो मां विना नैव भूम्यां वासं करिष्यति ॥१२॥

के बादवाले कांडोंकी कथाओंको मिल-जुलकर गाने लगे ॥ ६० ॥ यह सब कथायें सुनकर रामचन्द्रजी बड़े प्रसन्न हुए और सर्वसाधारणके लोगोंको भी भगवान्‌की स्वर्गारोहणसम्बन्धी बातें ज्ञात हो गयीं ॥ ६१ ॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पं० रामतेजपाण्डेयकृत 'ज्योत्स्ना' भाषाटीका-सहिते पूर्णकांडे प्रथमः सर्गः ॥ १ ॥

श्रीरामदास बोले—इतनी कथा सुनकर रामचन्द्रजीने वाल्मीकिसे कहा कि आप भी हस्तिनापुर अवश्य आइएगा ॥ १ ॥ महर्षि वाल्मीकिने भक्तवत्सल रामसे कहा—"बहुत अच्छा"। इसके बाद राम लक्ष्मणसे कहने लगे कि सब राज्योंके सिंहासनपर बैठे हुए कुमारोंके पास पत्र लिख दो कि वे अपने-अपने मन्त्रियोंके ऊपर राज्यका भार छोड़कर अपनी सेनाके साथ यहाँ आ जायँ ॥ २ ॥ ३ ॥ इसी प्रकारके पत्र जम्बूद्वीपवाले तथा द्वीपान्तरनिवासी राजाओंके पास लिख दो और दूतोंको कहो कि उन्हें शीघ्र यहाँ आनेको कहें ॥ ४ ॥ "तथास्तु" कहकर लक्ष्मणजीने भी वैसा ही किया, जैसा कि रामचन्द्रजीने सभामें वाल्मीकि तथा गुरु वसिष्ठके सम्मुख कहा था ॥ ५ ॥ इसके बाद श्रीरामचन्द्रजीने फिर लक्ष्मणसे कहा कि हमारे तम्बू-कनात आदि सामान बाहर ले चलो ॥ ६ ॥ कल बड़ा अच्छा मुहूर्त है। सेनाको भी शीघ्र तैयार हो जानेकी आज्ञा दे दो। बहुतसे शस्त्र जीर्ण हो गये थे, जिनको मेरे पूर्वजोंने घरोंमें बन्द कर दिये थे, उनको निकाल लो। क्योंकि आज उनके उपयोगका समय आ पहुँचा है ॥७॥८॥ अन्तःपुरकी जितनी स्त्रियाँ हैं, उनको भी बाहर ले आओ। अग्निहोत्र लेकर सीता भी मेरे साथ चलें ॥ ९ ॥ मेरे जितने खजाने हैं उनको हाथी, घोड़े तथा रथकी सहायतासे बाहर ले आओ ॥१०॥ इस तरह लक्ष्मणजीको आज्ञा देकर मन्त्रियों, विद्वानों तथा वसिष्ठजीसे कहा कि अब मैं सातों द्वीपोंके आधिपत्यके पदपर भरतजीको बिठाऊँगा। क्योंकि मेरे बिना लक्ष्मण इस भूमण्डल-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एवं वदति राजेंद्रे पौरास्ते भयविह्वलाः । द्रुमा इव छिन्नमूला दुःखार्ताः पतिता भुवि ॥१३॥
मूर्छितो भरतश्चापि श्रुत्वा रामाभिभाषितम् । गर्हयामास राज्यं स प्राह दुःखाद्रघूत्तमम् ॥१४॥
सत्येन तु शपे नाहं त्वां विना दिवि वा भुवि । कांक्षे राज्यं रघुश्रेष्ठ शपे त्वत्पादयोः प्रभो ॥१५॥
अमुं योग्यं वरं राजन्नभिषिंचस्व राघव । अयोध्यायां कुशं वीरं सप्तद्वीपपतेः पदे ॥१६॥
अस्त्युत्तरकुरुष्वत्र जंबुद्वीपपतेः पदे । लवोऽभिषेचितः पूर्वं स एव तेषु गच्छतु ॥१७॥
भरतेनोदितं श्रुत्वा पतितास्ताः समीक्ष्य च । प्रजा वै भयसंविग्ना रामविश्लेषकातराः ॥१८॥
वसिष्ठो भगवान् राममुवाच सदयं वचः । पश्यतामादरात्सर्वाः पतिता भूतले प्रजाः ॥१९॥
तासां भावानुगं राम प्रसादं कर्तुमर्हसि । श्रुत्वा वसिष्ठवचनं ताः समुत्थाप्य पूज्य च ॥२०॥
सस्नेहो रघुनाथस्ताः किं करोमीति चाब्रवीत् । ततः प्रांजलयः प्रोचुः प्रजा भक्त्या रघूद्वहम् ॥२१॥
गन्तुमिच्छसि वैकुंठं त्वमस्माकं नय प्रभो । यत्र गच्छसि त्वं राम ह्यनुगच्छामहे वयम् ॥२२॥
अस्माकमेषा परमा प्राप्तिर्धर्मोऽयमक्षयः । तवानुगमने राम हृद्गता नो दृढा मतिः ॥२३॥
पुत्रदारादिभिः सार्द्धमनुयामोऽद्य सर्वथा । तपोवनं वा स्वर्गं वा पुरं वा रघुनन्दन ॥२४॥
ज्ञात्वा तेषां मनोदार्ढ्यं कारुण्याद्रघुनायकः । भक्तं पौरजनं दीनं बाढमित्यब्रवीद्वचः ॥२५॥
कृत्वैवं निश्चयं रामस्तस्मिन्नेवाहनि प्रभुः । कुशं तमभिषेक्तुं वै चोदयामास लक्ष्मणम् ॥२६॥
सौमित्रिश्चापि गुरुणा विप्रैः पौरजनैस्तदा । शोभयित्वा स्वनगरीं मुदा तमभ्यषेचयत् ॥२७॥
अभिषेके कुशस्यासीन्महोत्साहो गृहे गृहे । रामावरोधे सुमहान्समुत्साहस्तदाऽभवत् ॥२८॥
तदा सिंहासनारूढं छत्रचामरशोभितम् । प्रजाः कुशं पतिं प्राप्य प्रणामं चक्रुरादरात् ॥२९॥

पर नहीं रह सकते ॥ ११ ॥ १२ ॥ श्रीरामचन्द्रजीके ऐसा कहनेपर वे सब पुरवासी जड़से कटे हुए वृक्षोंकी भाँति पृथ्वीपर गिर पड़े। रामकी बात सुनकर भरतजी भी मूर्छित हो गये। होश आनेपर उन्होंने राज्यकी भरपूर निन्दा की और दुःखित होकर उन्होंने रामचन्द्रजीसे कहा—मैं आपके चरणोंकी शपथ खाकर कहता हूँ कि आपके बिना मैं पृथ्वी अथवा स्वर्गलोकका भी राज्य नहीं चाहता ॥ १३–१५ ॥ हे राजन् ! हे राघव ! आप वीर कुशको इस सप्तद्वीपपतिके आसनपर बिठाल दीजिए ॥ १६ ॥ उत्तरकुरु नामके देशमें जम्बूद्वीपपतिके पदपर तो आपने लवका बहुत दिनों पहले ही अभिषेक कर दिया है, वह अपने पदपर चला जाय ॥ १७ ॥ इस प्रकार भरतकी बात सुनकर वहाँके जितने प्रजाजन थे, वे सब रामके वियोगरूपी दुःखसे विह्वल और भयभीत हो गये ॥१८॥ उनकी यह दशा देखकर दयालु वसिष्ठजीने रामसे आदरपूर्वक कहा— हे राम ! देखिए, ये सब कितने दुःखी हैं। अब जिस तरह इनकी सन्तोष हो सके, वही काम करिए। वसिष्ठजीकी बात सुनकर रामने उन लोगोंको उठाया, उनका सत्कार किया और पूछा कि मैं क्या करूँ, जिससे आप लोग लोग प्रसन्न हो सकेंगे। यह सुना तो सब लोग हाथ जोड़कर भक्तिपूर्वक रामचन्द्रजीसे कहने लगे—हे राम ! आप अब यदि वैकुण्ठलोकको जाना चाहते हों तो हमें भी अपने साथ लेते चलिए, हम सब भी आपके साथ-साथ चलेंगे ॥ १९–२२ ॥ इससे बढ़कर हमको और कोई लाभ नहीं होगा। हम लोगोंके लिए यह अक्षय धर्मकार्य है। हे राम ! आपके साथ चलनेके लिए हमने दृढ़ निश्चय कर लिया है ॥ २३ ॥ आज हम सब अपने परिवारके साथ आपके सङ्ग वैकुण्ठलोकको, तपोवनको, स्वर्गको अथवा अयोध्याको जायँगे ॥ २४ ॥ रामचन्द्रजीने जब भक्तों और पुरजनोंकी इतनी दृढ़ता देखी तो साथ ले चलनेकी स्वीकृति दे दी ॥ २५ ॥ इस तरह निश्चय करके रामने उसी दिन कुशका अभिषेक करनेके लिए लक्ष्मणसे कहा और रामके आज्ञानुसार गुरु, विप्र एवं पुरवासियोंके साथ लक्ष्मणने उसी दिन कुशका राज्याभिषेक कर दिया ॥ २६ ॥ २७ ॥ कुशका अभिषेक करते समय अयोध्याके घर-घरमें महान् उत्सव मनाया गया। विशेषकर रामके अन्तःपुरकी नारियोंने उत्सव मनाया ॥ २८ ॥ जब छत्र और चमर आदिसे सुसज्जित होकर कुश सिंहासनपर

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तदा कुशो नृपो विप्रान्धनं बहुतरं ददौ । प्रजास्तं पूजयामासुर्वस्त्रालंकारवाहनैः ॥३०॥
ततः प्रापूजयत्सर्वाः प्रजाः स कुशभूपतिः । भोजयामास विप्रौघान्कोटिशः स कुशेश्वरः ॥३१॥
अथ रामाज्ञया शीघ्रं सौमित्रिः सीतया सह । अन्तःपुराणि सर्वाणि निनाय नगराद्बहिः ॥३२॥
नानावाहनसंस्थानि नृत्यवाद्यादिमंगलैः । ततो रामः स्वयं बन्धुपुत्राद्यैः सर्वतो वृतः ॥३३॥
मुनिभिर्जयशब्दैश्च स्तुतो मंगलनिःस्वनैः । अयोध्याया बहिः पौरैर्ययौ मागधसंस्तुतः ॥३४॥
रथारूढश्चामराद्यैर्वीजितश्च शनैर्मुदा । विवेश वासोगेहानि तदा रामो जनैः सह ॥३५॥
ननृतुर्वारनार्यश्च तदा श्रीराघवाग्रतः । ततः पौराः सावरोधाश्चांडालान्ता विनिर्ययुः ॥३६॥
निन्युस्ते सारमेयांतान् पुर्याः पौराश्चतुष्पदान् । नासन्पक्षिकुलांताद्यास्तत्पुर्यां ते बहिर्ययुः ॥३७॥
नासीत्कोऽपि तदा पुर्यां जनशून्या बभूव सा । अयोध्यानगरी पुण्या गजभुक्तकपित्थवत् ॥३८॥
एतस्मिन्नन्तरे सर्वे द्वीपांतरनिवासिनः । जंबूद्वीपांतरस्थाश्च ययुः सैन्यैर्नृपोत्तमाः ॥३९॥
कोटिशो राघवं नेमुस्ततो नेमुः कुशेश्वरम् । उपायनानि रामाय कुशाय च पृथक् पृथक् ॥४०॥
दत्त्वा संपूजितास्ताभ्यां तस्थुः सर्वे नृपोत्तमाः । ततोऽङ्गदश्चित्रकेतुः पुष्करस्तक्ष एव च ॥४१॥
सुबाहुर्यूपकेतुश्च ययुः सर्वे निजैर्बलैः । सावरोधाः सपुत्राश्च सपौत्रास्ते स्नुषादिभिः ॥४२॥
प्रणेमू राघवादींश्च सीतादींश्चापि सादरात् । रामेणालिंगिताः सर्वे सीतया भोजिता अपि ॥४३॥
तस्थुः सर्वे सभायां ते स्वस्वपौरजनैः सह । तदागतान् नृपान्सर्वान् रामो वृत्तं न्यवेदयत् ॥४४॥

बैठे, उस समय सब प्रजाजनोंने उनको साष्टांग प्रणाम किया ॥ २९ ॥ उस समय कुशने ब्राह्मणोंको बहुत-सा धन दिया और प्रजाजनने विविध प्रकारके वस्त्रों तथा आभूषणोंसे कुशकी पूजा की ॥ ३० ॥ इसके बाद कुशने सब लोगोंका आदर-सत्कार किया और करोड़ों ब्राह्मणोंको भोजन कराया ॥ ३१ ॥ इसके अनन्तर रामकी आज्ञासे लक्ष्मण सीता आदि अन्तःपुरकी सब नारियोंको विविध सवारियोंपर बिठाकर नगरके बाहर ले गये ॥ ३२ ॥ उस समय तरह-तरहके नृत्य-गीत आदि मङ्गलमय कार्य हो रहे थे। इसके अनन्तर राम भी बन्धुओं, पुत्रादिकों तथा अनेक ऋषियोंके साथ अयोध्याके सब पुरवासियोंको साथ लिये हुए अयोध्याके बाहर आ गये। उस समय कितने ही तरहके बाजे बज रहे थे और बन्दीजन भगवानकी विरुदावलीका गान कर रहे थे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ जाते समय राम एक रथपर बैठे थे, उनपर छत्र लगा हुआ था और चमर चल रहे थे। इस तरह चलते-चलते राम उस स्थानपर पहुँचे, जहाँ ठहरनेको डेरा डाला गया था ॥ ३५ ॥ राम वहाँ जाकर आसनपर बैठ गये। वेश्यायें रामके सामने आकर नाचने लगीं। कुछ देर बाद उच्च जातिसे लेकर चाण्डाल जाति तकके अयोध्याके समस्त पुरवासी अपने बाल-बच्चोंको साथ लिये अयोध्यासे बाहर निकल आये। वे लोग अपने-अपने कुत्तों तथा बैल-गाय आदि पशुओंको भी साथ लेते आये थे। यहाँ तक कि पक्षियोंके कुल तक बाहर आ गये ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ उस समय सारी अयोध्या सुनी हो गयी। कोई भी उस नगरीमें नहीं रह गया। उस पुनीत नगरीकी वही दशा हो गयी थी, जो दशा हाथीके पेटसे निकले कैथेकी होती है। मतलब यह कि हाथी जब कैथेके फल खाने लगता है तो समूचाका समूचा ही फल खा जाता है और मलत्याग करते समय ये कैथे देखनेमें समूचे ही निकलते हैं, किन्तु उन्हें तनिक-सी ठोकर मार दी जाय तो फूट जाते हैं, उनमें कुल तत्त्व नहीं रह जाता। वही दशा अयोध्याकी भी हो गयी थी। ऊपरसे देखनेमें तो अयोध्या ज्योंकी त्यों दीखती थी, किन्तु उसमें कोई रहनेवाला नहीं था ॥ ३८ ॥ उसी समय अनेक द्वीपोंके कितने ही राजे भी अपनी-अपनी सेनाके साथ आ पहुँचे ॥ ३९ ॥ उन्होंने वहाँ आकर रामको तथा नवीन राजा कुशको प्रणाम किया और दोनोंको अलग-अलग विविध प्रकारके उपहार दिये ॥ ४० ॥ ४१ ॥ उधर यूपकेतु तथा सुबाहु आदि राजपुत्र भी अपने अन्तःपुरकी स्त्रियों और पुत्रादिकोंके साथ जा पहुँचे। वहाँ आकर उन्होंने सीता आदि माताओं तथा रामको प्रणाम किया। रामने उनको उठाकर हृदयसे लगाया और सीताने उनको अपने हाथोंसे परोसकर भोजन कराया ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ इसके बाद वे सब अपने-अपने नागरिकोंके साथ आकर सभा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पुनः पप्रच्छ तान्सर्वान्संस्थितान् रघुनन्दनः । युष्माकं पूर्वजाः सर्वे समायाता गजाह्वये ॥४५॥
भवतां रोचते युद्धं यदि तैः पूर्वजैः सह । आगन्तव्यं तर्हि सर्वं मया सह गजाह्वयम् ॥४६॥
नोचेद्भवद्भिर्गन्तव्यमित एव निजस्थलम् । निर्बन्धोऽत्र न मे ज्ञेयः सर्वैः पार्थिवसत्तमैः ॥४७॥
इति रामवचः श्रुत्वा नृपा राघवमब्रुवन् । राम राम महावीर्य वयं सर्वे तवानुगाः ॥४८॥
त्वयैव वर्द्धिताः सर्वे तवान्नैः पोषिता वयम् । वीराः क्षत्रियवंशीया रणे तातप्रहारिणः ॥४९॥
तवाज्ञया वधामोऽद्य पितृपुत्रान् रणाजिरे । नास्मांस्त्वं विद्धि राजेन्द्र स्वामिकार्ये पराङ्मुखान्॥५०॥
इति तेषां वचः श्रुत्वा तानालिंग्य स राघवः । संपूज्याभरणैर्वस्त्रैः सुखं सुष्वाप सीतया ॥५१॥
ततः प्रभाते श्रीरामो गत्वा तां सरयूनदीम् । स्नात्वा दानादि वै दत्त्वा सीतया विधिपूर्वकम् ॥५२॥
नत्वा तां सरयूं पुण्यां गन्तुं पप्रच्छ वै मुहुः । तद्रामवचनं श्रुत्वा सरयू राममब्रवीत् ॥५३॥
एतावत्कालपर्यन्तं स्थिता त्वद्दर्शनेच्छया । अहमद्य त्वया राम यास्यामि त्वत्पदं त्वितः ॥५४॥
तत्तस्या वचनं श्रुत्वा तामाह राघवः पुनः । यावत्कथा मम शुभा स्थास्यत्यत्राघनाशिनी ॥५५॥
तावत्त्वमंशरूपाऽत्र वस लोकाघनाशिनी । तथेति रामवचनादंशरूपं निधाय सा ॥५६॥
साकेतेऽत्र पूर्णरूपं ययौ रामेण तत्पदम् । अथ रामः सरय्वाऽसौ परिक्रम्य निजां पुरीम् ॥५७॥
साष्टांगं तां नमस्कृत्य गन्तुं पप्रच्छ पूज्य ताम् । अयोध्येऽम्ब नमस्तेऽस्तु त्वयाऽहं रक्षितस्त्विह ॥५८॥
आज्ञां ददस्व पृच्छामि स्वस्थलं गन्तुमुद्यतः । क्षमस्व मेऽपराधांस्त्वं पुनर्दर्शनमस्तु ते ॥५९॥
इति रामवचः श्रुत्वा पुरी राघवमब्रवीत् । एतावत्कालपर्यंतं स्थिता त्वद्दर्शनेच्छया ॥६०॥
यास्ये त्वया समर्था न सोढुं त्वद्विरहं त्वहम् । तत्तस्या वचनं श्रुत्वा पुरीमाह रघूत्तमः ॥६१॥

में बैठे। और-और राजे भी वहाँ एकत्रित हुए तो रामने उनको अपना विचार सुनाया ॥ ४४ ॥ इसके अनन्तर रामने उन राजाओंसे कहा कि आपके पूर्वज हस्तिनापुरीमें युद्धके लिए गये थे ॥ ४५ ॥ सो यदि आपलोगों-को भी युद्ध करना हो तो मेरे साथ हस्तिनापुरी चलिए ॥ ४६ ॥ यदि न इच्छा हो तो आप लोग अपनी-अपनी राजधानीको लौट जाइये । मैं आपलोगोंसे किसी प्रकारका आग्रह नहीं करना चाहता ॥ ४७ ॥ इस प्रकार रामकी बात सुनकर उन राजाओंने कहा—हे राम ! हे महाबाहो ! हम सब आपके अनुगामी हैं। आपने ही हम लोगोंका अभ्युदय किया है। आपके ही अन्नसे हम पले हैं। वीर क्षत्रियोंके वंशमें मेरा जन्म हुआ है। इस कारण आप यदि आज्ञा देंगे तो हम अपने पितृघातियोंको संग्राममें अवश्य मारेंगे। हे राजेन्द्र ! आप कभी भी ऐसा न समझियेगा कि हम स्वामी (आप) के कामसे पराङ्मुख होंगे ॥ ४८–५० ॥ इस प्रकार उनकी बातें सुनीं तो रामने उन सब राजाओंको हृदयसे लगाया, विविध प्रकारके वस्त्र-आभूषणोंसे उनकी पूजा की और जाकर आनन्दपूर्वक सीताके साथ शयन किया ॥ ५१ ॥ इसके अनन्तर सबेरे सीताके साथ रामचन्द्रजीने सरयूके तटपर जाकर स्नान-दान किया। इसके बाद उन्होंने प्रणाम करके सरयूजीसे अपने लिए परम धाम जानेकी आज्ञा माँगी। रामकी प्रार्थना सुनकर सरयूने कहा—॥ ५२ ॥ ५३ ॥ अबतक आपके दर्शनोंकी इच्छासे मैं भी यहाँ थी। किन्तु हे राम ! जब आप जा रहे हैं तो मैं भी आपके श्रीचरणोंके साथ चलूँगी ॥ ५४ ॥ सरयूकी बात सुनकर रामने कहा—जबतक सब पापोंको नष्ट करने-वाली मेरी पुनीत कथा इस संसारमें विद्यमान है, तबतक अंशरूपसे तुम भी यहाँ रहती हुई सबके पाप दूर करती रहो। रामके कहनेपर सरयूने तत्काल अपना एक अंशरूप बनाया, जिससे वह अयोध्यामें रह गयी और पूर्णरूपसे रामके साथ चल पड़ी। सरयूको साथ लेकर रामने अपनी पावन पुरीकी परिक्रमा की और साष्टांग प्रणाम एवं पूजन करके परमधाम जानेकी आज्ञा माँगी और कहा—हे अम्ब अयोध्ये ! तुमने मेरी रक्षा की है। मैं अब अपने वैकुण्ठलोक जानेकी आज्ञा माँगता हूँ। मेरे अपराधोंको क्षमा करो और मुझे आशीर्वाद दो कि फिर कभी मैं तुम्हारा दर्शन कर सकूँ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ इस प्रकार रामकी बात सुनकर अयोध्यापुरीने कहा कि इतने दिनों तक मैं आपका दर्शन करनेके लिए यहाँ रही। आपके चले जानेपर यहाँ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यावत्कथा मम शुभा स्थास्यत्राघनाशिनी । तावत्त्वमंशरूपेण वसात्र मृन्मयी चिरम् ॥६२॥
तथेति रामवचनादंशरूपाऽत्र मृन्मयी । अयोध्या संस्थिता दिव्या हैमा रामेण सा ययौ ॥६३॥
अयोध्यया सरय्वाऽपि रामः सेनास्थलं ययौ । अयोध्यायाः सरय्वाश्च प्रभावौ न गतौ त्वितः ॥६४॥
अथ सीता महानागीमारुरोह सखीजनैः । पृथक् नागीमुर्मिलाद्यास्ताः समारुरुहुस्तदा ॥६५॥
अथ रामो मुदा वेगात्समारुह्य गजोपरि । उवाच लक्ष्मण वाक्यं पुष्पके सकलान् जनान् ॥६६॥
पौरानारोहयस्व त्वं स्वबंधुभ्यां सुतादिभिः । नागारूढैः पृथक् शीघ्रं समारुह्य गजोपरि ॥६७॥
अनुगच्छस्व मत्पृष्ठे लक्ष्मणः स तथाऽकरोत् । अथ सर्वे नृपतयो नानायानेषु संस्थिताः ॥६८॥
ययुः स्वस्वबलैर्युक्ताः शीघ्र श्रीरामपार्श्वतः । ययावग्रे त्वग्रसरो रज्जुकुद्दालधारिभिः ॥६९॥
दृषत्कारैस्ततक्षकैश्च कुठारटंकपाणिभिः । ततो ययौ महानागः पताकाध्वजशोभितः ॥७०॥
ततो ययुर्यन्त्रहस्ता नानावाहनसंस्थिताः । ततो ययुः शतघ्नीभिः पूरिताः शकटाः शुभाः ॥७१॥
ततोऽश्वसंस्था वाद्यानि वादयन्तो ययुर्भटाः । ततोऽश्वसंस्थाः शतशो ययुस्ते वेत्रपाणयः ॥७२॥
ततो ययुर्मागधाश्च वंदिनो यानसंस्थिताः । ततो नटाश्चारणाश्च यानस्थाः सुविभूषिताः ॥७३॥
ततस्ता वारनार्यश्च काष्ठमंचकवाहिताः । मस्तकेषु भटैर्मार्गे नृत्यंत्यः प्रययुः सुखम् ॥७४॥
ततो ययुर्भूषितास्ते श्रीरामस्य तुरङ्गमाः । ततः पुरुषवद्वेषान्बिभ्रन्त्यः प्रमदोत्तमाः ॥७५॥
ययुस्तरुण्यः शतशः शस्त्रहस्ताः सुभूषिताः । गोपितास्याः कंचुकिन्यस्तुरंगादिषु संस्थिताः ॥७६॥
ततो ययुर्दंडहस्ता दासीपुत्राः सुभूषिताः । ततो ययौ रामचन्द्रस्तत्पृष्ठ लक्ष्मणो ययौ ॥७७॥

रहती हुई मैं आपके वियोगका दुःख नहीं सह सकूँगी। इसलिए मैं भी आपके साथ ही चलनेको तैयार बैठी हूँ। उसकी ऐसी बात सुनकर रामने अयोध्यापुरीसे कहा कि जबतक जगत्में मेरी पापनाशिनी कथा विद्यमान रहे, तबतक तुम अंशरूपसे मृन्मयी होकर यहाँ निवास करो ॥ ५७–६२ ॥ रामके कथनानुसार उसने अपने अंशरूपसे मृन्मयी होकर रहना स्वीकार कर लिया और सुवर्णमयो तथा रूपवती अयोध्या रामके साथ चल पड़ी ॥ ६३ ॥ इसके बाद राम अयोध्या तथा सरयूके साथ अपने सेनाशिविरको लौट गये। यद्यपि अयोध्या तथा सरयू ये दोनों अपने-अपने स्थानसे चली गयी थीं, किन्तु संसारमें उनका प्रभाव ज्योंका त्यों बना रहा। वह नहीं गया ॥ ६४ ॥ इसके अनन्तर सीता एक अच्छी-सी हथिनीपर सवार हुईं और उर्मिला आदि दूसरी हथिनियोंपर जा बैठीं ॥ ६५ ॥ इसके बाद राम भी प्रसन्नतापूर्वक हाथीपर सवार हुए और लक्ष्मणसे कहा कि समस्त बन्धु-बान्धवोंके साथ अयोध्यावासियोंको पुष्पक विमानपर सवार करा दो। इसके बाद तुम अपने परिवारवालोंको हाथीपर बिठाकर मेरे पीछे-पीछे आओ। रामके आज्ञानुसार लक्ष्मणने सब प्रबन्ध ठीक कर दिया। इसके बाद सब राजे अनेक प्रकारकी सवारियोंपर सवार हो-होकर अपनी-अपनी सेनाके साथ रामके पास आये। आगे-आगे वे मजदूर चले, जो रस्सियें तथा कुदाल लिये थे। पत्थर काटनेवाले तथा बढ़ई आदि विविध प्रकारके औजार लिये थे। उनके पीछे-पीछे एक बड़ा हाथी पताका और ध्वजाओंसे अलंकृत होकर चला। उसके पीछे अपने-अपने हाथोंमें बन्दूक आदि विविध प्रकारके शस्त्रधारी सैनिक तरह-तरहके वाहनोंपर सवार होकर चले। उनके पीछे तोप आदिसे लदी बैलगाड़ियें चली जा रही थीं ॥ ६६–७१ ॥ उनके पीछे-पीछे अनेक प्रकारके बाजे बजानेवाले लोग घोड़ोंपर बैठ-बैठकर चले। उनके पीछे बहुतसे घुड़सवार हाथमें बेंत लिये हुए चले ॥ ७२ ॥ उनके पीछे वाहनोंपर आरूढ़ होकर बहुतसे मागध और बन्दीजन चले जा रहे थे। उनके पीछे नटलोग और सजी चौकियोंपर बैठी हुई वेश्यायें गाती-बजाती और नाचती हुई चली जा रही थीं ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ उनके भी पीछे रामके सजाये हुए घोड़े और उनके पीछे पुरुषके समान वेष धारण किये, अनेक प्रकारके अलंकार पहने, तरह-तरहके शस्त्र लिये, पर्देसे अपना मुख छिपाये और घोड़े आदि विविध सवारियोंपर सवार स्त्रियें चली जा रही थीं ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ उनके पीछे हाथमें लाठियें लिये तरह-तरहके आभूषण पहने दासीपुत्रगण चले जा रहे थे। उनके पीछे भगवान् रामचन्द्र और लक्ष्मण, भरत,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्पृष्ठे भरतश्चापि शत्रुघ्नश्च ततो ययौ । ततः कुशो लवश्चाथ ततः सोऽप्यंगदो ययौ ॥७८॥
ययौ ततश्चित्रकेतुः पुष्करश्च ततो ययौ । ततस्तक्षः सुबाहुश्च यूपकेतुस्ततो ययौ ॥७९॥
ततः सीता ययौ शीघ्रमुर्मिला च ततः परम् । मांडवी श्रुतकीर्तिश्च स्नुषाः सर्वाः क्रमाद्ययुः ॥८०॥
ततस्ते मंत्रिणः सर्व शिबिकासंस्थिता ययुः । ततो ययुर्वानराश्च कोटिशः पर्वतोपमाः ॥८१॥
ततो ययुर्नृपाः सर्वे कोटिशो वारणस्थिताः । ततो नृपाणां सैन्यानि ययुर्वाजिस्थितानि हि ॥८२॥
ययुस्ततस्ते यंत्राणां शकटाः कोटिशो वराः । शतघ्नीखड्गचर्मादिपूरिताः शकटास्तदा ॥८३॥
ततो वारणमुख्याश्च नववाद्यसमन्विताः । ततश्चोष्ट्राः सुवर्णानां ततः पृष्ठे खरादयः ॥८४॥
एवं रामः शनैर्मार्गे चामराद्यैः सुवीजितः । सीतया जालरन्ध्रैश्च वीक्षितश्च मुहुर्मुहुः ॥८५॥
ययौ शनैः शनैः श्रीमान्स्तुतो मागधवंदिभिः । पश्यन्नृत्यान्यप्सरसां शृण्वन्स गायनान्यपि ॥८६॥
सेनानिवेशस्थानानां यात्राकांडे यथोदिता । मया पूर्वं सुरचना तद्वदासीत्पुनस्त्विह ॥८७॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानंदरामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये पूर्णकांडे
रामदासविष्णुसंवादे रामप्रस्थानं नाम द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥

तृतीयः सर्गः

(रामका सोमसोशियोंके साथ युद्ध)

श्रीरामदास उवाच

अथ रामः शनैर्मार्गे नानादेशान्विलंघ्य च । एकादशदिनैः प्राप सेनया तद्गजाह्वयम् ॥ १ ॥
राममागतमाज्ञाय सुषेणो वेगवत्तरः । प्रत्युद्ययौ स्वकपिभिर्विंशल्लक्षसमन्वितैः ॥ २ ॥
नत्वा रामं च सीतां च सर्वं वृत्तं न्यवेदयेत् । राम राम महाबाहो प्रतापात्तव वै मया ॥ ३ ॥

शत्रुघ्न, कुश, अङ्गद, चित्रकेतु, पुष्कर, तक्ष और उनके पीछे राजपुत्र सुबाहु चले जा रहे थे । राजपुत्रोंकी टोलीके पीछे सीता, उर्मिला, मांडवी, श्रुतकीर्ति और उनके पीछे उनकी पतोहुएँ चली जा रही थीं। उनके पीछे रामके मन्त्रिगण पालकियोंपर बैठे चले जा रहे थे। उनके भी पीछे पर्वतके समान बड़े-बड़े आकारवाले वानर और उनके पीछे विविध प्रकारकी सवारियोंपर सवार सब राजे चले जा रहे थे। उनके पीछे उन राजाओंकी सेनायें घोड़ोंपर सवार होकर चली जा रही थीं। उनके पीछे कितनी ही बैलगाड़ियोंपर लदे हुए तोप आदि यन्त्र चले जा रहे थे ॥ ७७–८३ ॥ उनके पीछे मुख्य-मुख्य हाथी अनेक प्रकारके बाजे लादे हुए चले जा रहे थे और उनके भी पीछे एक बहुत बड़ा हाथी चल रहा था, जिसपर राष्ट्रकी पताका सुशोभित हो रही थी। उनके पीछे सुवर्णसे लदे हुए ऊँट और उनके पीछे और-और सामान लादे हुए गधे तथा खच्चर आदि चल रहे थे ॥ ८४ ॥ इस तरह राम धीरे-धीरे चले जा रहे थे। उनके ऊपर चमर-व्यजन आदि चल रहे थे और सीताजी अपनी सवारीके झरोखोंसे बार बार रामको निहार रही थीं ॥ ८५ ॥ मागध-बन्दीजन आदि विविध प्रकारकी स्तुतियें कर रहे थे और कितनी ही अप्सराओंके नृत्य-गान हो रहे थे ॥ ८६ ॥ रामचन्द्रजीके पड़ाव ठीक उसी तरह इस समय भी थे, जैसे कि पीछे यात्राकांडमें बतलाये जा चुके हैं ॥ ८७ ॥
इति श्रीशतकोटिरामचरितान्तर्गते श्रीमदानन्दरामायणे पूर्णकाण्डे द्वितीयः सर्गः ॥ २ ॥

इस तरह धीरे-धीरे चलते हुए राम अपनी सेनाके साथ अनेक देशोंको लाँघते हुए ग्यारह दिनमें हस्तिनापुर पहुँचे ॥ १ ॥ रामके पहुँचनेका समाचार पाते ही सुषेण बीस लाख सैनिकोंको लेकर आ पहुँचा ॥ २ ॥ रामके समक्ष पहुँचकर उसने सीता-रामको प्रणाम किया और कहने लगा—हे महाबाहो राम ! आपके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Nagarsheth Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्दशदिनं युद्धं कृतमेभिः सुदुष्करम् । अधुना त्वं समायातः क्वैते स्थास्यंन्ति भूतले ॥ ४ ॥
सुषेणस्य वचः श्रुत्वा तमभ्याश्वासयत्प्रभुः । अथ रामः स जाह्नव्याश्चोत्तरे परमे तटे ॥ ५ ॥
सेनानिवासमकरोद्दर्श रिपुवाहिनीम् । तां निशां समतिक्रम्य द्वितीये दिवसे ततः ॥ ६ ॥
चोदयामास युद्धाय वानरान् रघुनंदनः । ततस्ते वानराः सर्वे जाह्नव्यामवप्लुत्य च ॥ ७ ॥
रामं सीतां नमस्कृत्य निर्ययुः समरं मुदा । ततस्ते वानराश्चक्रुः सिंहनादान्भयंकरान् ॥ ८ ॥
वादयामासुर्वाद्यानि दुद्रुवुः शत्रुवाहिनीम् ।नलाद्यास्तेऽपि श्रीरामसेनां दृष्ट्वाऽतिविस्मिताः॥ ९ ॥
चकिता भयभीताश्च निर्ययुः संगरं जवात् । ततस्ते वानराः सर्वे गंगामुल्लंघ्य वेगतः ॥१०॥
दृषद्भिः पर्वतैर्वृक्षैः शिलाभिर्मुष्टिभिः पदैः । निजघ्नुः शत्रुवीरांस्ते कीर्तयंतो रघूत्तमम् ॥११॥
नलवीराश्च ते सर्वे शस्त्रैस्तीक्ष्णैः कपीश्वरान् । निजघ्नुः समरे वेगाद्बभूव तुमुलो रणः ॥१२॥
अथ तैर्वानरैः सर्वे बलाद्वृक्षैः प्रपीडिताः । पराङ्मुखाः कृताः सर्वे रणात्ते नलसैनिकाः ॥१३॥
तान् दृष्ट्वा ते नलाद्याश्च रणाद्वीरान् पराङ्मुखान् । निहतान्कपिवीरैश्चाचोदयन्नृपतींस्तदा ॥१४॥
ततस्ते पार्थिवाः सर्वे जंबूद्वीपनिवासिनः । तथा द्वीपांतरोद्भूता ये वृद्धाश्च पुरोदिताः ॥१५॥
ययुर्युद्धाय सन्नद्धा नानावाहनसंस्थिताः । तान्सर्वानागतान्दृष्ट्वा ययुः श्रीरामसैनिकाः ॥१६॥
जंबूद्वीपांतरस्थाश्च तथा द्वीपांतरस्थिताः । युवानश्च नृपाः सर्वे नानावाहनसंस्थिताः ॥१७॥
सुग्रीवश्चांगदश्चाथ हनुमांश्च विभीषणः । जांबवांश्च सुषेणश्च संपातिर्मकरध्वजः ॥१८॥
गुहको भूरिकीर्तिश्च कंबुकंठः प्रतापवान् । तथाऽन्ये जनकाद्याश्च ययुः संग्रामभूतलम् ॥१९॥
तदोभयोर्महानासीत्सैन्ययोर्वीरनिःस्वनः । नववाद्यानि वै नेदुरुभयोः सैन्ययोः पृथक् ॥२०॥
तदा ब्रह्मादयो देवाः शिवेन सहिताश्च खे । सबुधेनाथ सोमेन देवेंद्रेण युता मुदा ॥२१॥
नानाविमानमारूढा ददृशुर्युद्धकौतुकम् । अथ चंद्रादयो देवाश्चक्रुर्मंत्रं परस्परम् ॥२२॥

प्रतापसे मैंने चौदह दिनों तक इन लोगोंके साथ भयंकर युद्ध किया है । अब आप भी आगये हैं तो ये दुष्ट बचकर कहाँ जायँगे ॥ ३ ॥ ४ ॥ सुषेणकी बात सुनकर रामने भी उसे आश्वासन दिया और गङ्गाके उत्तरी तटपर अपना सेनानिवास बनाया ॥ ५ ॥ वहाँसे ही शत्रुकी सेना देखी। रात बीत जानेपर सबेरे ही रामने वानरोंको युद्धके लिए बिदा किया। रामकी आज्ञासे वे लोग सीता तथा रामको प्रणाम करके बड़ी प्रसन्नतासे गंगाजीको पार करके संग्रामभूमिमें जा पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने भयंकर सिंहनाद किया, विविध प्रकारके मारू बाजे बजाये और शत्रुकी सेनापर धावा बोल दिया। रामकी सेनाको देखकर वे नल आदि राजे बड़े विस्मित हुए ॥ ६-९ ॥ वे तुरन्त अपनी सेनाके साथ युद्धके लिए जा डटे। इसके अनन्तर वे सब वानर पत्थरके बड़े-बड़े खण्ड और वृक्ष ले-लेकर रामचन्द्रजीकी जयजयकार करते हुए शत्रुपक्षके वीरों-का संहार करने लगे ॥ १० ॥ ११ ॥ उधर नलकी सेनाके भी वीर अपने तीखे शस्त्रोंसे वानरोंको मारने लगे। इस तरह कुछ देर तक घमासान युद्ध हुआ और वानरोंने अपनी वृक्ष-पाषाणवर्षासे शत्रुओंके छक्के छुड़ा दिये। जिससे नलके सैनिकोंको वहाँसे पीछे हटना पड़ा ॥ १२ ॥ १३ ॥ इस तरह अपने वीरोंको भागते देखकर नल आदिने और-और राजाओंको प्रोत्साहित किया ॥ १४ ॥ इससे जम्बूद्वीपके अन्यान्य द्वीपोंके राजे जिनकी गणना पीछे कर आये हैं, वे सब अनेक प्रकारके वाहनोंपर आरूढ़ हो-होकर बड़ी तैयारीके साथ निकल पड़े। उन लोगोंको युद्धभूमिमें उपस्थित देखकर रामके सैनिक जा डटे ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ उधर जम्बूद्वीप तथा अन्यान्य द्वीपोंके राजे उपस्थित थे। इधर सुग्रीव, अङ्गद, हनुमान्, विभीषण, जाम्बवान्, सुषेण, सम्पाती, मकरध्वज, भूरिकीर्ति, कंबुकण्ठ तथा जनक आदि वीर लड़नेके लिए संग्राम-भूमिमें डटे हुए थे। उस समय दोनों ओरके सैनिक बहुत जोर-जोरसे सिंहनाद कर रहे थे और विविध प्रकार-के बाजे बज रहे थे ॥ १७-२० ॥ उस समय शिव, बुध, सोम और इन्द्र आदि देवताओंको साथ लेकर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महाभयं समुत्पन्नं प्रलयोऽद्य भविष्यति । ब्रह्मदत्तवराश्चैते सोमवंशोद्भवा नृपाः ॥२३॥
रामो विष्णुरयं साक्षात्कथं जयपराजयौ । भविष्यतः कथं युद्धान्निवृत्तिरुभयोरपि ॥२४॥
भविष्यति उपायः कः कार्यो युद्धनिवारणे । तदा ब्रह्मा सुरानाह किंचिद्दृष्ट्वा वयं रणम् ॥२५॥
करिष्यामस्तयोः सख्यं रामसोमजयोस्त्विह । इत्युक्त्वा सकलान्वेधा ददर्श रणकौतुकम् ॥२६॥
तथोभयोः सैन्ययोश्च वभुवुर्यंत्रनिःस्वनाः । यंत्रोत्थवह्निज्वालाभिर्व्याप्ता दश दिशोऽभवन् ॥२७॥
यंत्रोत्थनानागुटिकाभिर्निजघ्नुस्ते परस्परम् । शतघ्नीभिस्तथा जग्मुः शकटस्थाभिरादरात् ॥२८॥
तथा वीरा निजघ्नुस्ते बाणैः खड्गैः परश्वधैः । परस्परं तोमरैश्च भिंदिपालैश्च मुद्गरैः ॥२९॥
परिघैश्चक्रबाणैश्च कुंतैः शूलैश्च पट्टिशैः । तदा जघान पितरं पुत्रः पुत्रं तथा पिता ॥३०॥
पितामहस्तथा पौत्रं पौत्रश्चापि पितामहम् । अन्योन्यं कुलजात्याख्यादिकं संश्राव्य वै मुहुः ॥३१॥
तथा रणे प्रपौत्रं च जघान प्रपितामहः । तथा बाणैः प्रपौत्रोऽपि जघान प्रपितामहम् ॥३२॥
मातामहं तु दौहित्रस्तदा बाणैरताडयत् । तथा मातामहश्चापि दौहित्रं च रणेऽहनत् ॥३३॥
एवं परस्परं चासीद्युद्धं तल्लोमहर्षणम् । तत्र ये ये हता वीराः संगरे रामसेवकाः ॥३४॥
तान्सर्वान् जीवयामास तदा पवननंदनः । द्रोणाचलौषधीभिश्च वारं वारं स्वसैनिकान् ॥३५॥
रिपुसैन्ये मृता ये ते मृता एव तु नोत्थिताः । एवं तदा सोमवंशनृपास्ते क्षीणतां ययुः ॥३६॥
तदा लोहितपूरा सा बभूव सुरनिम्नगा । अर्कपद्ममिता सेना नलादीनां तदा रणे ॥३७॥
निपातिता राघवीयैर्नृपैः सा वरसंगरैः । एवं बभूव समरः षण्मासं हस्तिनापुरे ॥३८॥
ततस्ते सोमवंशस्था नृपाः किंचिद्बलैर्युताः । विषण्णा विगतोत्साहा निर्ययुः संगरं स्वयम् ॥३९॥
तानागतांस्तदा वीक्ष्य कुशाद्या बालकाश्च ते । रामदीनां ययुस्त्वग्रे रथस्था रणभूतलम् ॥४०॥

अपने वाहनपर बैठे हुए ब्रह्माजी आकाशमण्डलमें आ पहुँचे और उन लोगोंका वह भयानक युद्ध देखने लगे । कुछ देर बाद चन्द्रमा आदि देवताओंने आपसमें कहा कि यह बड़ा भयावह समय आ पहुँचा है । ऐसा लगता है कि आज प्रलय हो जायगा । इधर ये सोमवंशी राजे ब्रह्मासे वर प्राप्त किये हुए हैं, इसलिए किसीसे पराजित नहीं होंगे । उधर रामरूप धारण किये साक्षात् विष्णुभगवान् लड़ने आये हैं । ऐसी अवस्थामें जय-पराजय कैसे हो सकता है ? और यदि यह झगड़ा तैं करानेका विचार किया जाय तो कैसे हो ॥२१-२४॥ उनकी बात सुनकर ब्रह्माने कहा कि हम थोड़ी देरतक इनका युद्ध देखकर इन दोनोंमें सन्धि करवा देंगे । ऐसा कहकर ब्रह्माजी युद्धकौतुक देखने लगे । उस समय दोनों सेनाओंसे तोप बन्दूक आदिकी भयंकर गर्जना सुनायी पड़ रही थी । उन यंत्रोंके मुखसे निकली आगकी लपटोंसे दसों दिशायें व्याप्त हो गयीं ॥ २५—२७ ॥ बन्दूककी गोलियोंसे आपसमें एक दूसरेको मार रहा था । दूसरी ओर बड़ी-बड़ी गाड़ियोंपर रक्खी हुई तोपें अलग आग उगल रही थीं । दोनों पक्षके वीर आपसमें पट्टिश आदिसे लड़ रहे थे । उस समय युद्धके मदसे मतवाले होकर पिता पुत्रको, पुत्र पिताको, पौत्र पितामहको तथा पितामह पौत्रको अपना ग्राम-कुल आदि बतलाकर मार रहा था । प्रपितामह प्रपौत्रको, प्रपौत्र प्रपितामहको, दौहित्र मातामहको और मातामह दौहित्रको निःशङ्कभावसे मार रहा था ॥ २८—३३ ॥ इस तरह परस्पर लोमहर्षक युद्ध हो रहा था । उस समय संग्राम-भूमिमें जो-जो रामके सैनिक मरते थे, उन्हें हनुमान्जी द्रोणाचलकी संजीवनी बूटीसे जीवित कर लिया करते थे ॥ ३४ ॥ किन्तु शत्रुकी सेनामें जो मरे, वे मरे ही रह गये । इस कारण वे सब सोमवंशी राजे धीरे-धीरे क्षीणबल हो गये ॥ ३६ ॥ उस संग्रामसे रुधिरकी गंगा बह चली और रामके सैनिकोंने नल आदि राजाओंकी बारह पद्म सेनाका संहार कर डाला । इस तरह छः महीने तक हस्तिनापुरीमें वह महासंग्राम होता रहा ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ अन्तमें वे सोमवंशी राजे अपनी थोड़ी-सी सेना लेकर स्वयं संग्रामभूमिमें आये ॥ ३९ ॥ उनको आये देखकर कुश आदि बालक रथ-

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection / Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नलं ययौ कुशः शीघ्रं नद्युकं स ययौ लवः। जातीकरमंगदश्च तथा च वसुदं नृपम् ॥४१॥
चित्रकेतुर्ययौ शीघ्रं तथा लघुश्रुतं नृपम्। ययौ स पुष्करः शीघ्रं तक्षकः सुरथं ययौ ॥४२॥
अजमीढं सुबाहुश्च यूपकेतुर्ययौ बलम्। यूपकेतुर्हि तत्सैन्यं चकारागोचरं शरैः ॥४३॥
वायव्यास्त्रेण चिक्षेप लवस्तं लवणांभसि। तदा ते सप्त वीराश्च नलाद्याः पर्वता इव ॥४४॥
युयुधू रघुवीरस्य बालकैः सह संगरे। न विरेजुर्बलैर्हीनाः स्कंधहीननगोपमाः ॥४५॥
कुशो विव्याध बाणैस्तं नलं संग्राममूर्धनि। तदा नलः प्रभिन्नांगः स्वबाणैस्तं व्यतर्जयत् ॥४६॥
ततः कुशः स्वबाणौघैर्नलस्याश्वान्ध्वजं धनुः। छत्रं सारथिनं छित्त्वा नलं बाणैरताडयत् ॥४७॥
नद्युकं चापि विव्याध स्वबाणौघैर्लवस्ततः। नद्युकश्च लवं बाणैस्तदा व्याकुलमातनोत् ॥४८॥
नद्युकं निजबाणौघैश्चकार विरथं लवः। एवं जातीकरं बाणैरंगदः संप्रताडयत् ॥४९॥
प्रताडयज्जातीकरः परिघेणांगदं तदा। ततो जातीकरं बाणैरंगदोऽपातयद्भुवि ॥५०॥
चित्रकेतुः स्वबाणौघैः क्रोशेन वसुदं नृपम्। चिक्षेप स्यंदनाद्वेगात्तदद्भुतमिवाभवत् ॥५१॥
तथा लघुश्रुतो बाणैर्हृदि विव्याध पुष्करम्। तदा स पुष्करः क्रोधाद्बाणैर्लघुश्रुतं रथे ॥५२॥
भित्तिचित्रोपमं कृत्वा वादयामास दुन्दुभिम्। सुरथश्चापि तक्षं स ववर्ष शरवृष्टिभिः ॥५३॥
ततस्तक्षः स्वबाणौघैः सुरथं गगनांगणे। सरथं भ्रामयामास शुष्कपर्णं यथा मरुत् ॥५४॥
अजमीढस्तदा सर्वान्पूर्वजान्व्याकुलीकृतान्। वीक्ष्य रामात्मजाद्यैस्तैर्ववर्ष शरवृष्टिभिः ॥५५॥
सुबाहुस्तं स्वबाणौघैश्चकार विरथं तदा। अजमीढस्ततोऽन्ये स रथे स्थित्वा ययौ पुनः ॥५६॥
मुमोच पवनास्त्रं स कुशादीनां वधे क्रुधा। तं दृष्ट्वा यूपकेतुस्तं पन्नगास्त्रं मुमोच सः ॥५७॥
तदा ते कोटिशः सर्पाः पपुस्तं कंपनं क्षणात्। रथस्थः स नलः सर्पान्दृष्ट्वा गारुडमुत्तमम् ॥५८॥

पर सवार होकर रणभूमिमें जा डटे ॥ ४० ॥ उस समय नलके सम्मुख कुश, नद्युकके समक्ष लव, जातीकरके सामने अङ्गद, वसुदके सम्मुख चित्रकेतु, लघुश्रुतके सामने पुष्कर, सुरथके समक्ष तक्षक, अजमीढ़के सामने सुबाहु और बल नामक राजाके सामने यूपकेतु जा पहुँचे। यूपकेतुने थोड़े ही समयमें समस्त सेनाका नाश कर डाला ॥ ४१–४३ ॥ लवने अपने वायव्य अस्त्रसे उन मरे हुए सैनिकोंको खारे समुद्रमें फेंक दिया। ऐसी अवस्थामें पर्वतकी नाईं बड़े-बड़े वे नल आदि सातों वीर रामजीके बालकोंके साथ युद्ध करने लगे। यह सब करते हुए भी वे राजे उसी तरह ओछे लग रहे थे, जिस तरह डाली और पत्तोंसे विहीन वृक्ष हों ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ थोड़ी देर बाद कुशने अपने बाणोंसे नलको घायल कर दिया। तब नल भी दूने वेगके साथ कुशपर झपटा, किन्तु मौका पाकर कुशने बाणों द्वारा नलके रथ, घोड़े, ध्वजा, धनुष, छत्र और सारथीको नष्ट करके उसके शरीरपर भी प्रहार किया ॥४६॥४७॥ उधर लवने अपने बाणसमूहसे नद्युकको और नद्युकने अपने शस्त्रोंसे लवको व्याकुल कर दिया ॥ ४८ ॥ अन्तमें लवने अपनो बाणवर्षासे नद्युकके रथको काट डाला। इसी तरह अङ्गदने जातीकरपर प्रहार किया और जातीकरने परिघ चलाकर अङ्गदपर प्रहार किया। अन्तमें अङ्गदने अपने बाणोंसे जातीकरको धराशायी कर दिया ॥ ४९ ॥ ५० ॥ इसी प्रकार चित्रकेतुने अपने बाणोंसे वसुदको उसके रथसे उठाकर दूर फेंक दिया। यह एक बड़ी कौतुकमयी घटना थी ॥ ५१ ॥ उधर लघुश्रुतने अपने बाणोंसे पुष्करपर प्रहार किया और पुष्करने कुपित होकर अपने बाणोंसे बहुश्रुतको एक तसवीरकी तरह उसके रथमें ही जड़ दिया और अपनी विजयदुन्दुभी बजा दी ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ इसके अनन्तर तक्षकने अपनी बाणवर्षासे सुरथको रथ समेत नचा दिया, जैसे सूखे पत्तोंको वायु नचा देता है ॥ ५४ ॥ उसी समय अजमीढ़ने जब देखा कि रामके वीर पुत्र उसके पूर्वजोंको बहुत सता रहे हैं तो वह इन लोगोंपर घोर बाणवृष्टि करने लगा ॥ ५५ ॥ इसी बीच सुबाहुने अजमीढ़के रथको काट डाला और वह दूसरे रथपर आरूढ़ होकर फिर संग्राम-भूमिमें आ डटा ॥ ५६ ॥ आते ही उसने कुश आदिको मारनेके लिए पवनास्त्रका प्रयोग किया। उसके भयङ्कर पवनास्त्रको देखकर यूपकेतुने पन्नगास्त्र चलाया ॥ ५७ ॥ जिससे करोड़ों साँपोंने सब वायु पी ली। उधर

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Nagpur Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मुमोच पन्नगास्त्रस्य निवृत्त्यर्थं ततोऽस्त्रवित् । तदा कुशः प्रमुमोच राक्षसास्त्रं भयावहम् ॥५९॥
नघुकश्च तदा वेगाद्वह्नयस्त्रं तं व्यसर्जयत् । तदा क्रोधाल्लवश्चापि मेघास्त्रं तं व्यसर्जयत् ॥६०॥
तदा लघुश्रुतश्चापि पवनास्त्रं मुमोच सः । तदा स हनुमान् शीघ्रं व्यादाय विकटाननम् ॥६१॥
प्रपिबन्मरुतं वेगान्ननाद जलदस्वनः । एवं तच्च महायुद्धं पुष्पकारामसंस्थितौ ॥६२॥
सीतारामौ मुदा युक्तौ लक्ष्मणाद्यैर्ददर्शतुः । एवं युद्धं पञ्चमासान्सैकादश दिनान्यभूत् ॥६३॥
एकादशे दिने मार्गे गतास्तेऽस्मिन्समीरिताः । एवमेकादशैर्मासैरेकादशदिनैरपि ॥६४॥
त्रेतायुगभवैर्दिव्यैः समाप्तिं संगरस्य च । अदृष्ट्वा स कुशो वेगाद्ब्रह्मास्त्रं संदधे तदा ॥६५॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पूर्णकाण्डे रामदास-विष्णुदाससंवादे सोमवंशोद्भवनृपाणां युद्धवर्णनं नाम षोडशः सर्गः ॥ ३ ॥

चतुर्थः सर्गः

(सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी राजाओंमें मैत्री)

श्रीरामदास उवाच

ब्रह्मास्त्रं संदधानं तं दृष्ट्वा वेधाः सुरैः सह । सोमेन च बुधेनापि विमानेन ययौ भुवम् ॥१॥
विमानादवरुह्याथ तदा ब्रह्मा कुशं ययौ । कुशं तं प्रार्थयामास मा त्वमस्त्रं विसर्जय ॥२॥
पालयस्व वचो मेऽद्य नाके सोमाय वै मया । द्वापरांतं वरो दत्तस्त्वजेयाश्च रणाजिरे ॥३॥
भविष्यन्ति नलाद्याश्च सर्वे युष्मत्कुलोद्भवाः । पुरा त्विति सुराग्रे हि कस्मिंश्चित्कारणांतरे ॥४॥
अतस्त्वं कुश माऽस्त्रं मे नलाद्येषु विसर्जय । तद्ब्रह्मवचनं श्रुत्वा कुशो वाक्यमथाब्रवीत् ॥५॥
अधुना क्षणमात्रेण सर्वान्दग्धान्करोम्यहम् । नोचेत्कथय रामाय तस्याज्ञां मानयाम्यहम् ॥६॥

रथपरसे नलने जब पन्नगास्त्र देखा तो गारुडास्त्रका प्रयोग किया ॥ ५८ ॥ उसकी निवृत्तिके लिए कुशने बड़े ही भयानक राक्षसास्त्रका प्रयोग किया ॥ ५९ ॥ उसी समय नघुकने वह्नयस्त्र चलाया । तब मारे क्रोधके लवने उसपर मेघास्त्रका प्रयोग कर दिया ॥ ६० ॥ इसके अनन्तर लघुश्रुतने पवनास्त्र छोड़ा । इसी समय हनुमान्‌जीने अपना मुख फैलाकर सब हवा पी ली और मेघकी तरह बीभत्स स्वरमें गरजे । उधर विमानपर बैठे हुए पुष्कर, राम तथा सीताजी उस महायुद्धको देख रही थीं । इस तरह वह युद्ध पाँच महीना ग्यारह दिन चला ॥ ६१-६३ ॥ ग्यारह ही दिनके लगभग अयोध्यासे हस्तिनापुर आनेमें लगे थे । सब मिलाकर त्रेतायुगके दिनोंके हिसाबसे उस युद्धमें ग्यारह महीने और ग्यारह दिन लगे ॥ ६४ ॥ उधर जब कुशने देखा कि अब कोई अन्य उपाय नहीं है तो ब्रह्मास्त्रका संधान किया ॥ ६५ ॥ इति श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पं० रामतेजपाण्डेयकृत'ज्योत्स्ना'भाषाटीकासहिते पूर्णकाण्डे तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

श्रीरामदासने कहा-जब ब्रह्माने देखा कि कुश ब्रह्मास्त्रका प्रयोग करने जा रहा है तो वे बहुतसे देवताओं और बुध तथा सोमको साथ लिये हुए विमानपर बैठकर पृथ्वीतलपर आये । यहाँ पहुँचे तो विमानसे उतरकर कुशके पास गये और प्रार्थना की कि तुम इस ब्रह्मास्त्रका प्रयोग मत करो ॥ १ ॥ २ ॥ आज मेरे कहनेसे मेरी बात मान लो । क्योंकि एक वार मैंने स्वर्गलोकमें इन सोमवंशियोंको वरदान दिया था कि द्वापर तक संग्रामभूमिमें तुम किसीसे भी पराजित नहीं होओगे ॥ ३ ॥ आगे चलकर तुम्हारे वंशमें नल आदि बड़े प्रतापशाली राजे होंगे ॥ ४ ॥ इस कारण हे कुश ! तुम इन नल आदि राजाओंपर ब्रह्मास्त्रका प्रयोग न करो । ब्रह्माकी बात सुनकर कुशने कहा कि मैं अभी क्षणमात्रमें इन दुष्टोंको भस्म किये देता हूँ । यदि आप कुछ कहना चाहते हों तो जाकर रामचन्द्रजीसे कहिये, मैं उन्हींकी बात मानूँगा ॥ ५ ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यदा त्वया वरो दत्तस्तदा किं विदितं तव । नासीच्छ्रीरामसामर्थ्यं ह्यधुना प्रार्थ्यसे मुधा ॥ ७ ॥
त्वयि चेद्वर्तते किंचित्सारं धर्तुं रणं मया । तर्हि कुरुष्व साहाय्यं नलादीनां सुरैर्युतः ॥ ८ ॥
त्वया रणे संगरोऽद्य मम पश्यतु राघवः । सीताऽपि पुष्पकासीना जालरंध्रैश्च पश्यतु ॥ ९ ॥
एवं कुशस्य वचनं श्रुत्वा लज्जायुतो विधिः । सोमेनाथ बुधेनापि नलाद्यान्प्राह वेगतः ॥ १० ॥
रे रे मूढाः शृणुध्वं मे वचनं हि गतायुषः । साक्षान्नारायणं रामं यूयं योद्धुं समुद्यताः ॥ ११ ॥
केनेयं शिक्षिता बुद्धिः सर्वेषां घातकारिणी । गच्छध्वं शरणं रामं नोचेद्यूयं मरिष्यथ ॥ १२ ॥
ममायं जनकः साक्षाद्रामो विष्णुर्न संशयः । इति धिक्कृत्य तान्वेधाः कुशं वचनमब्रवीत् ॥ १३ ॥
यावद्यास्याम्यहं रामात्पुनस्त्वां कुशबालक । तावच्चेन्मोक्ष्यसे बाणं तर्हि मां हतवानसि ॥ १४ ॥
इत्युक्त्वा तं कुशं वेधा नलाद्यैः परिवेष्टितः । ययौ रामं सुरैर्युक्तः पुरस्कृत्य वृषध्वजम् ॥ १५ ॥
शिवमागतमाज्ञाय पुष्पकाद्रघुनन्दनः । प्रत्युद्गम्य शिवं नत्वा प्रणनाम ततो विधिम् ॥ १६ ॥
ततस्तान्पूजयामास शिवादीन्रघुनन्दनः । ततः सभायां रामस्य तिष्ठन्वेधा नलादिभिः ॥ १७ ॥
प्रणामान्कारयामास सोमेन च बुधेन च । ततस्तान्सहसोत्थाय रामचन्द्रः करेण हि ॥ १८ ॥
श्रुत्वा तेषां हि नामानि विधेरास्यात्पृथक् पृथक् । ततः पप्रच्छ वेगेन ब्रह्माणं पुरतः स्थितम् ॥ १९ ॥
सर्वे किमर्थमानीतास्त्वत्रैते सोमवंशजाः । वद त्वं कारणं शीघ्रं सत्यमेव ममाग्रतः ॥ २० ॥
तद्रामवचनं श्रुत्वा रामं वेधा वचोऽब्रवीत् । राम राम महाबाहो पालयस्वाद्य मे वचः ॥ २१ ॥
रक्षस्वैतान्नृपानद्य वरदानान्मम प्रभो । द्वापरांतमजेयत्वं दत्तमस्ति मया पुरा ॥ २२ ॥
ममास्त्रं सन्दधानं निवारय कुशं सुतम् । इति तद्वचनं श्रुत्वा विहस्य रघुनायकः ॥ २३ ॥
सभायामाह ब्रह्माणमजेयत्वं त्वयोदितम् । क्व गतं चाद्य समरात्किमर्थमिह चागताः ॥ २४ ॥

जब आपने उनको वरदान दिया था, तब क्या रामकी सामर्थ्यका आपको ध्यान नहीं था ? तब तो रामको कुछ समझे नहीं, अब झूठ-मूठकी प्रार्थना करने आये हैं ॥ ७ ॥ मैं कहता हूँ कि यदि आपमें कुछ शक्ति हो तो देवताओंको साथ लेकर आप नल आदिकी सहायता करिए। मैं आपके साथ घनघोर युद्ध करूँ और रामचन्द्रजी तथा सीता पुष्पक विमानके झरोखोंसे मेरा और आपका संघर्ष देखें ॥ ८ ॥ ९ ॥ इस प्रकार कुशकी बात सुनी तो ब्रह्माजी लज्जित हो गये और नल आदिको फटकारते हुए कहने लगे—अरे मूढ़ो ! जान पड़ता है कि तुम लोगोंकी आयु समाप्त हो गयी है, जो साक्षान्नारायणस्वरूप रामचन्द्रजीसे युद्ध करने आये हो ॥ १० ॥ ११ ॥ सर्वनाश उपस्थित करनेवाली यह दुर्बुद्धि तुमको किसने दी है ? अब यदि अपना कल्याण चाहते हो तो रामकी शरणमें जाओ, नहीं तो एक एक करके तुम सब मार डाले जाओगे ॥ १२ ॥ मेरे पिता विष्णुभगवान् ही तो रामरूपसे इस पृथ्वीतलपर अवतरे हैं। इस तरह उन लोगोंको डाँट-फटकार करके ब्रह्माजी कुशसे कहने लगे कि मैं रामके पास जा रहा हूँ । जबतक उनके पाससे न लौट आऊँ, तबतक बाणका प्रहार न करना। ऐसा करोगे तो मानों उनका नहीं, तुमने मेरा वध किया ॥ १३ ॥ १४ ॥ ऐसा कुशसे कहकर ब्रह्माजी शिवजीको आगे करके नल आदिके साथ-साथ श्रीरामचन्द्रजीके पास गये। जब रामने सुना कि शिवजी आ रहे हैं तो पुष्पक विमानसे उतरकर उनका स्वागत और प्रणाम करके ब्रह्माजीको भी अभिवादन किया ॥ १५ ॥ १६ ॥ इसके अनन्तर रामने शिवजी आदिकी विधिवत् पूजा की और सब लोग सभाभवनमें गये। वहाँ ब्रह्माने सोम और बुधसे श्रीरामको प्रणाम करवाया। तब रामने उनको अपने हाथोंसे उठा लिया और ब्रह्माजीके मुखसे उनका नाम सुना। कुछ देर बाद रामने ब्रह्मासे पूछा कि आप इन सोमवंशियोंको यहाँ किस लिए लाये हैं ? जो इसका वास्तविक कारण हो, वह मुझे बतलाइए ॥ १७–२० ॥ रामकी बात सुनकर ब्रह्माने कहा—हे राम ! हे महाबाहो ! आज आप मेरी बात मानकर इन नल आदि राजाओंकी रक्षा कीजिए। मैंने इन लोगोंको यह वरदान दे रक्खा है कि द्वापरपर्यन्त तुम लोग किसीसे पराजित नहीं होओगे ॥ २१ ॥ २२ ॥ उधर कुश मेरे अस्त्र (ब्रह्मास्त्र) का सन्धान करके खड़े हैं। उन्हें भी

CC0. In Public Domain. Nirikant Sharma (Najafgarh) Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तद्रामवचनं श्रुत्वा रामं प्राह विधिः पुनः। सर्वेषां पुरतो मेऽस्ति बलं न तु तवाग्रतः ॥२५॥
त्वं तु मे जनकः साक्षादतस्त्वां प्रार्थयाम्यहम्। ततो रामः पुनः प्राह विहस्य चतुराननम् ॥२६॥
न श्रोष्यति वचो मेऽद्य कुशोऽयं यौवनस्थितः। प्रायः कुमारा वृद्धानां वाक्यमग्रे भजन्ति न ॥२७॥
अन्यच्चापि शृणुष्व त्वं यच्छास्त्रेऽप्युच्यते वचः। लालयेत्पंच वर्षाणि दश वर्षाणि ताडयेत् ॥२८॥
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्। अतस्ते बालकाः सर्वे कुशाद्याः स्वार्थतत्पराः ॥२९॥
न श्रोष्यंति वचो मेऽद्य तान्गत्वा प्रार्थयस्व हि। ततः प्राह पुनर्ब्रह्मा रणक्रोधात्कुशो मया ॥३०॥
वाक्यं रम्यं मंजुलं च नैवाद्य वदति प्रभो। ततः प्राह विधिं रामः पुनर्वाक्यं विनोदयन् ॥३१॥
विधे त्वं गच्छ वाल्मीकिं स त्वां युक्तिं वदिष्यति। ततः स रामवाक्येन वाल्मीकिं पुष्पके स्थितम् ॥३२॥
मुनिभिर्मुनिशालायामूर्ध्वं सर्वैः स्थितं विधिः। नलाद्यैः सहितो गत्वा वृत्तं सर्वं न्यवेदयत् ॥३३॥
विधिमाहाथ वाल्मीकिर्ज्ञात्वा राममनोगतम्। स्त्रीलब्धजीविताश्चैते भवन्तु सुखिनस्त्विति ॥३४॥
नलादीनां स्त्रियः सर्वाः प्रार्थयन्तु विदेहजाम्। कुशोऽपि जानकीवाक्याच्छान्तिमेष्यति बालकः ३५
तथेति ते नलाद्याश्च दूतान् प्रेष्याथ सादरम्। आनीय स्वकलत्राणि शतशस्तु तदा जवात् ॥३६॥
जानकीं प्रेषयामासुस्ताः सर्वाः पार्थिवस्त्रियः। उपायनानि संगृह्य जानकीं प्रययुर्जवात् ॥३७॥
ददृशुर्जानकीं नारीशलायां स्वसखीवृताम्। स्नुषाभिः सेवितपदां पर्यंके निद्रितां मुदा ॥३८॥
ततः स्त्रीः समागताः सीता दृष्ट्वा चामरजीविता। मंचकादवरुह्याथ घृतपार्श्वोपबर्हणा ॥३९॥
स्वपृष्ठे मंचकं कृत्वा संस्थिताऽऽसीत्सखीवृता। स्नुषाभिर्वीजिता रम्यां प्रणेमुस्तां परस्त्रियः ॥४०॥
तासां सीमन्तरत्नौघप्रभया पदपंकजे। विरेजतुस्ते सीतायाश्चित्ररागविचित्रिते ॥४१॥
उपायनानि संगृह्य ताभ्यः सा जनकात्मजा। समालिंग्य निवेश्याथ ताः प्राह सुस्वरं वचः ॥४२॥

आप रोक दीजिए। ब्रह्माकी बात सुनकर रामने कहा कि आपने जब इनको अजेय कर दिया था, तब फिर ये लोग संग्रामभूमि छोड़कर यहाँ मेरे पास क्यों आये हैं? ॥ २३॥ २४॥ रामकी यह बात सुनकर ब्रह्मा कहने लगे—सब लोगोंके लिए तो मेरे पास बल है, किन्तु आपके लिए मेरेमें कुछ भी सामर्थ्य नहीं है ॥ २५॥ आप मेरे पिता हैं, इसी नाते मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ। फिर राम बोले कि कुश युवावस्थामें है। संसारमें प्रायः देखा जाता है कि कुमार लोग वृद्धोंकी बात नहीं मानते ॥ २६॥ २७॥ इसके अतिरिक्त शास्त्रमें भी कहा गया है कि पाँच वर्षकी अवस्थातक बच्चोंका दुलार करे, दस वर्षकी अवस्था तक डराये-धमकाये, किन्तु सोलह वर्षका हो जानेपर बेटेके साथ मित्रताका व्यवहार करना चाहिए। इसी कारण वे स्वार्थी बालक मेरी बात नहीं मानेंगे। आप स्वयं जाकर उनसे प्रार्थना कीजिए। ब्रह्माने कहा कि संग्रामजनित क्रोधके कारण आज तो वह हमसे सीधी बात भी नहीं करता। फिर विनोदवश रामने ब्रह्मासे कहा कि आप वाल्मीकिके पास जाइए। वे आपको कोई युक्ति बतलायेंगे। रामके कथनानुसार ब्रह्मा नल आदिको अपने साथ लेकर वाल्मीकिके पास गये। वाल्मीकिजी उस समय रामके साथ पुष्पक विमानपर ही रहा करते थे। इससे उनके पास पहुँचनेमें विशेष समय नहीं लगा। वहाँ जाकर ब्रह्माने वाल्मीकिको सब वृत्तांत कह सुनाया ॥ २८–३३॥ रामका मनोगत अभिप्राय जानकर वाल्मीकिने ब्रह्माजीसे कहा कि अपनी स्त्रियोंकी कृपासे ये लोग जीवनदान पा सकते हैं। उसका उपाय यह है कि नल आदिकी स्त्रियाँ सीताके पास जाकर अपने पतियोंके जीवनकी भीख माँगें। यदि सीता प्रसन्न हो गयीं तो कुश भी मान जायगा ॥ ३४॥ ३५॥ वाल्मीकिके कथनानुसार नल आदिने अपनी स्त्रियोंको लिवा लानेके लिए सैकड़ों दूत भेजे और वे तुरन्त उनको लिये हुए आ पहुँचे। इसके अनन्तर वे स्त्रियाँ विविध प्रकारके उपहार लेकर सीताके पास गयीं। वहाँ पहुँचकर उन स्त्रियोंने देखा कि सीता अपनी सखियोंसे घिरी हुई बैठी झपकी ले रही हैं और पतोहुएँ उनकी सेवामें तत्पर हैं ॥ ३६–३८॥ जब सीताने उन स्त्रियोंको देखा तो तकिया बगलमें कर ली और उठ बैठीं। उस समय उन स्त्रियोंने उनको प्रणाम किया ॥ ३९॥ ४०॥ उन राजरानियोंके सीमन्तरत्नकी प्रभासे सीताके पैर चित्र-विचित्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किमर्थमागता यूयं मा भेतव्यमितः परम् । कथयध्वं स्त्रीयमिष्टं यत्तद्द्योऽद्य करोम्यहम् ॥४३॥
तदा ताः कथयामासुः सर्वं वृत्तं सविस्तरम् । देहि कंकणदानानि कुशं युद्धान्निवारय ॥४४॥
तथेति जानकी चोक्त्वा ज्ञात्वा राममनोगतम् । नारीहस्तान्मोचनीयाश्चैते निर्जरवश्चिति ॥४५
आरुह्य शिबिकायां सा ताभिर्युक्ता कुशं ययौ । तदा तं सान्त्वयामास क्रोधं त्यज कुशाधुना ॥४६॥
निवर्त्तस्व रणादद्य शृणु मे वचनं शिशो । तथेति जानकीवाक्याद्विहस्याथ कुशस्तदा ॥४७॥
मात्रा तैर्बंधुभिर्युक्तः सेनया संन्यवर्तत । पुष्पकं प्रययौ सीता नृपस्त्रीपरिवेष्टिता ॥४८॥
कुशाद्यास्ते कुमाराश्च सभायां राघवं ययुः । ततो वाल्मीकिना ब्रह्मा नलाद्यैः सहितस्तदा ॥४९॥
सनिर्जरः सभां गत्वा तस्थौ श्रीराघवाग्रतः । कुशाद्यास्तेऽपि श्रीरामं प्रणम्य तस्य संनिधौ ॥५०॥
तस्थुस्तेनालिंगिताश्च स्त्रीभिर्नीराजिता अपि । तदा रामोऽब्रवीद्वाक्यं ब्रह्माणं सदसि स्थितम् ॥५१॥
रणान्निवर्तिता बालाः किमग्रे तव वांछितम् । न मे राज्ये छत्रपतिर्द्वितीयोऽत्र भविष्यति ॥५२॥
करणीयं नलाद्यैः किं तद्वदस्व सविस्तरम् । तदाऽऽसनादुत्थितः सः वेधा रामाग्रतः स्थितः ॥५३॥
उवाच मधुरं वाक्यं सभायां रघुनन्दनम् । राम राम महाबाहो भूभारश्च त्वया हृतः ॥५४॥
चिरकालं कृतं राज्यं वैकुण्ठं पालयाधुना । कुरु सत्यं वचो मेऽद्य ददस्व हस्तिनापुरम् ॥५५॥
नलादिभ्यस्त्वयोध्यायां कुशो राज्यं प्रशासतु । तदा रामो विधिं प्राह ममाप्येतत्तु रोचते ॥५६॥
वैकुण्ठं श्वो गमिष्यामि सीतया बन्धुभिर्युतः । दशवर्षसहस्राणि प्रोक्तमायुर्युगेऽत्र हि ॥५७॥
तन्मया स्वीयसामर्थ्यात्कृतमत्र विधे मृषा । एकादश सहस्राणि समास्त्वेकादशैव तु ॥५८॥
तथैकादश मासाश्च गता मे दिवसा अपि । शेषमायुश्च किंचिन्मे तच्छ्वः पूर्णं भविष्यति ॥५९॥

प्रकारके दीख रहे थे ॥ ४१ ॥ इसके बाद सीताने उनकी भेंटें स्वीकार कीं और उनको हृदयसे लगाकर कहने लगीं कि तुम लोग यहाँ किस कामसे आयी हो ? अपनी इच्छा प्रकट करो । तुम जो कुछ भी चाहोगी मैं उसका प्रबन्ध कर दूँगी ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ तब उन रानियोंने युद्धसम्बन्धी सब वृत्तान्त बताते हुए कहा–हे देवि ! आज आप मेरी उतरती हुई चूड़ी रखनेके लिए कुशको युद्ध करनेसे रोक दीजिए ॥ ४४ ॥ सीताने मन ही मन रामकी इच्छा जान ली । उन्होंने सोचा–वे चाहते हैं कि स्त्रियोंके द्वारा नल आदिको जीवनदान मिले । यह सोचकर उन्होंने उन स्त्रियोंसे कहा–अच्छी बात है । इसके अनन्तर वे तुरन्त पालकीपर सवार हुईं और कुशके पास जा पहुँचीं और कहा—बेटे कुश ! अब तुम अपने क्रोधका परित्याग कर दो ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ मेरी बात मानकर संग्रामभूमिसे लौट चलो । जानकीकी बात सुनकर कुश मुस्कराये और अपने बन्धु-बान्धवों तथा सेनाको साथ लेकर लौट पड़े । सीता कुशको तथा उन स्त्रियोंको अपने साथ लिये अपने पुष्पक विमानपर आ पहुँचीं । वहाँ पहुँचनेपर कुश आदि बालक सभामें रामचन्द्रजीके पास चले गये । इसके अनन्तर ब्रह्माजी भी वाल्मीकि तथा नल आदिको साथ लेकर सभामें रामचन्द्रजीके पास पहुँचे । कुश आदि बालक भगवान्‌को प्रणाम करके एक ओर खड़े हो गये ॥ ४७–५० ॥ रामने उनको अपने हृदयसे लगा लिया और स्त्रियोंने उनकी आरती उतारी । कुछ देर बाद रामने ब्रह्माजीसे कहा कि आपके इच्छानुसार कुश आदि बालक तो संग्रामभूमिसे लौट आये । अब आपकी क्या इच्छा है ? अबसे मेरे राज्यमें कोई दूसरा छत्रधारी राजा नहीं रहेगा ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ अब आप यह भी बतला दीजिए कि नल आदिको क्या करना चाहिए । रामकी यह बात सुनते ही ब्रह्माजी उठकर रामके आगे जा बैठे और कहने लगे-हे राम ! हे महाबाहो ! आपने पृथ्वीका भार उतार लिया । बहुत दिनों तक पृथ्वीपर राज्य भी किया । अब चलकर वैकुण्ठधामकी रक्षा करिए और मेरी बात सच करनेके लिए नल आदिको हस्तिनापुरी दे डालिए ॥ ५३–५५ ॥ कुश आनन्दके साथ अयोध्याका राज्य करें । तब रामने ब्रह्मासे कहा कि यही बात मुझे भी जँच रही है ॥ ५६ ॥ कल मैं सीता तथा अपने बान्धवोंके साथ वैकुंठधामको चल दूँगा । इस युगमें मनुष्यकी आयु दस हजार वर्ष निर्धारित की गयी है । किन्तु हे ब्रह्माजी ! मैं अपनी सामर्थ्यसे उस नियमको व्यर्थ करके ग्यारह हजार ग्यारह वर्ष और ग्यारह

CC-0. In Public Domain. Krutikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वादशायां घटिकायां सोऽहं वैकुण्ठमाश्रये । ततो विधिं कुशः प्राह नलाद्या यदि मां विधे ॥६०॥
दास्यंति करभारं मे तर्हि तिष्ठतु चात्र ते । मदाज्ञां पालयंत्वेते तव वाक्यात्सुरक्षिताः ॥६१॥
छत्रहीनाः सुखं त्वद्य वसन्तु हस्तिनापुरे । तद्वाक्यं स विधिः श्रुत्वा पुनः प्राह कुशं प्रति ॥६२॥
छत्रमाज्ञापयस्वैतांस्तवाज्ञावशवर्तिनः । दास्यंति करभारं त्वां मम वाक्यं हि पालय ॥६३॥
तथेति स कुशः प्राह विधिं किंचित्स्मिताननः । अथ ते सोमवंशस्था नृपाः सर्वे विधिं तदा ॥६४॥
प्रोचुर्वयं त्वया स्त्रीभिर्यास्यामो दिवमद्य वै । अजमीढोऽद्य नृपतिर्भवत्वत्र गजाह्वये ॥६५॥

तथेति तान् विधिश्चोक्त्वा सभायां समुपाविशत् ।
अथ ब्रह्माऽजमीढाय ब्राह्मणैरभिषिच्य च । गजाह्वये तं राजानं चकार राघवाज्ञया ॥६६॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पूर्णकाण्डे सोमसूर्यवंशजयो मैत्रीकरणं नाम चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥

पञ्चमः सर्गः

(रामका मित्रों तथा राजाओंको विदा करना)

श्रीरामचन्द्र उवाच

अथ रामं सुषेणश्च सुग्रीवश्च विभीषणः । वानराः प्रार्थयामासुर्वयं राम त्वया दिवम् ॥ १ ॥
यास्यामो नात्र जीवामस्त्वया राम विना भुवि । ददस्वाज्ञां त्वया गंतुं तथाह राघवोऽपि सः ॥ २ ॥
विभीषण त्वया स्थेयं लंकायां मम वाक्यतः । प्रचरिष्यति यावन्मे रामनामावनीतले ॥ ३ ॥
त्वं गच्छाद्यैव मे वाक्यात्तथेति स विभीषणः । नत्वा रामं ययौ लंकां राघवेणातिमानितः ॥ ४ ॥
ततः प्राह जांबवतं राघवः पुरतः स्थितम् । हे जाम्बवँस्त्वया स्थेयं यावद्भूम्यां कथा मम ॥ ५ ॥

महीने इस संसारमें रहा ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ थोड़ी-सी आयु शेष बची थी, सो भी कल पूरी हो जायगी ॥ ५९ ॥ ठीक बारह घड़ी बाद मैं वैकुण्ठधामके लिए चल दूँगा। तदनन्तर कुशने ब्रह्माजीसे कहा कि यदि नल आदि राजे मुझे करभार दें और मेरे आज्ञानुसार चलें तो मैं आपकी आज्ञासे इनको हर तरहसे सुरक्षित रक्खूँगा। इनको छत्र धारण करनेका अधिकार नहीं रहेगा । अर्थात् छत्रविहीन होकर ये लोग आनन्दके साथ रह सकेंगे। कुशकी बात सुनकर ब्रह्माने कहा कि आप इन्हें छत्र धारण करनेकी आज्ञा दे दीजिए । हाँ, ये सदैव आपकी आज्ञाका पालन करते हुए करभार देते रहेंगे ॥ ६०-६४ ॥ कुशने ब्रह्माकी बात स्वीकार कर ली। इसके अनन्तर उन सोमवंशी राजाओंने ब्रह्मासे कहा कि हमलोग अपनी स्त्रियें लिये हुए आपके साथ स्वर्गको चले चलेंगे । अब इस हस्तिनापुरीका राजा यह अजमीढ़ बनेगा ॥ ६५ ॥ ब्रह्माने भी उनकी बात स्वीकार कर ली और सभामें बैठ गये । इसके बाद रामकी आज्ञासे ब्रह्माने ब्राह्मणों द्वारा अजमीढ़का राज्याभिषेक कराके हस्तिनापुरीका राजा बना दिया ॥ ६६ ॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पं० रामतेजपाण्डेयकृत'ज्योत्स्ना'भाषाटीकासहिते पूर्णकांडे चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥

श्रीरामदासने कहा–इसके बाद सुषेण, सुग्रीव, विभीषण तथा अन्यान्य वानरोंने भगवान्से प्रार्थना की–हे राम ! हमलोग भी आपके साथ स्वर्गको चलेंगे। आपके बिना हमारा इस पृथ्वीपर जीवित रहना कठिन है। कृपया हमें भी अपने साथ चलनेकी आज्ञा दीजिए। यह सुनकर रामने कहा–हे विभीषण ! तुम मेरे कहनेसे तबतक लंकामें ही रहो, जबतक संसारमें मेरे नामका प्रचार होता रहे । तुम आज ही लंका चले जाओ। विभीषणने भी भगवान्की बात मान ली और प्रणाम करके लङ्काको प्रस्थान कर दिया। चलते समय भगवान्ने विभीषणका बहुत सम्मान किया ॥ १-४ ॥ इसके अनन्तर जाम्बवान्से बोले–हे जाम्बवान् ! जबतक इस संसार मेरी कथा प्रचलित रहे, तब तक तुम इसी लोकमें रहो । द्वापरके अन्तमें फिर तुम हमारा दर्शन

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रचरिष्यति तावच्च द्वापरांते पुनर्मम । भविष्यति दर्शनं ते गच्छाद्यैव सुखं वस ॥ ६ ॥
त्वया कृतं यत्साहाय्यं लंकायां मे वनेऽपि च । अतस्त्वं श्वशुरो भूत्वा द्वापरे ख्यातिमेष्यसि ॥ ७ ॥
तथेति रामवचनाद्रामं सीतां प्रणम्य सः । जांबवान्निर्ययौ शीघ्रं राघवेणातिपूजितः ॥ ८ ॥
रामः प्राह हनूमन्तं वत्स तिष्ठ यथासुखम् । यदा सेतौ पणस्पे हि द्वापरांतेऽर्जुनेन वै ॥ ९ ॥
भविष्यति शरैः सेतुं कर्तुं मे दर्शनं तदा । त्वं लभिष्यसि गच्छाद्य सुखं वस भजस्व माम् ॥१०॥
तद्रामवचनं श्रुत्वा नत्वा रामं च लक्ष्मणम् । सीतां प्रणम्य हनुमान् गमनायोपचक्रमे ॥११॥
ततो रामो निजात्कंठान्नवरत्नविभूषितम् । हारं ददौ तथा सीता तं ददौ बाहुभूषणे ॥१२॥
ततो नत्वा रामचन्द्रं सार्द्रनेत्रः स मारुतिः । परिक्रम्य ययौ वेगात्तप्तुं तु हिमपर्वतम् ॥१३॥
ततोऽङ्गदं रामचन्द्रः पूज्य वस्त्रादिमण्डनैः । प्रेषयामास किष्किंधां श्रृंगवेरं तु गूहकम् ॥१४॥
पातालं प्रेषयामास राघवो मकरध्वजम् । वस्त्रादिभिस्तोषयित्वा सुहृदः स्वस्थलानि हि ॥१५॥
ततो रामः समाहूय यूपकेतुं महामनाः । वस्त्रादिभिस्तोषयित्वा विदिशानगरं प्रति ॥१६॥
प्रेषयामास सैन्येन सोऽपि नत्वा रघूत्तमम् । जानकीं च ययौ वेगात्स्त्रीपुत्रैः परिवारितः ॥१७॥
एवं रामः सुबाहुं तं मथुरां प्रैषयत्तदा । एवं रामः पुष्करं च प्रेषयामास बालकम् ॥१८॥
सैन्येन पुष्करावत्यां तक्षं तक्षशिलाह्वये । ततोऽङ्गदं गजाश्वं तं प्रेषयामास राघवः ॥१९॥
धनरत्नं चित्रकेतुं स्त्रीपुत्रबलवाहनैः । प्रेषयामास श्रीरामस्तोषितं वसनादिभिः ॥२०॥
ततो लवं समाहूय ससीतो रघुनन्दनः । वस्त्रालंकारयानाद्यैस्तोष्य स्त्रीपुत्रसंयुतम् ॥२१॥
उत्तरेषु कुरुष्वत्र प्रेषयामास सेनया । कामधेनुं ददौ सीता लवाय व्रजते मुदा ॥२२॥
ततः कुशं समाहूय रामः स्त्रीपुत्रसंयुतम् । प्रेषयामास साकेतं सैन्येन पार्थिवैर्युतम् ॥२३॥

करोगे। तुम भी आज ही प्रस्थान कर दो और आनन्दके साथ किसी स्थानपर निवास करो ॥ ५ ॥ ६ ॥ तुमने लंका और वनमें मेरी जो सहायता की है, उसीके प्रभावसे द्वापरमें तुम मेरे श्वशुरके रूपमें विख्यात होओगे ॥ ७ ॥ रामकी बात स्वीकार करके जाम्बवान् सीताजी तथा रामको प्रणाम करके चल दिये। चलते समय रामने उनका भी अच्छी तरह सम्मान किया ॥ ८ ॥ तदनन्तर हनुमान्‌जीसे रामने कहा—हे वत्स! तुम भी आनन्दके साथ इसी लोकमें निवास करो। द्वापर युगके अन्तमें जब तुम्हारी अर्जुनके साथ सेतुविषयक होड़ होगी, उस समय तुम मेरा दर्शन करोगे। अब जाओ और मेरा भजन करते हुए आनन्दके साथ रहो ॥ ९ ॥ १० ॥ रामकी यह बात सुनकर हनुमान्‌जीने राम-लक्ष्मण तथा सीताको प्रणाम किया और चलनेकी तैयारी कर दी ॥ ११ ॥ चलते समय रामने अपने गलेसे एक रत्नमाला उतारकर हनुमान्‌जीको दी और सीताने अपना बाहुभूषण उतारकर दे दिया ॥ १२ ॥ इसके पश्चात् हनुमान्‌जीने आँखोंमें आँसू भरकर भगवान्‌को प्रणाम किया और परिक्रमा करके तपस्या करनेके लिए हिमवान् पर्वतपर चले गये ॥ १३ ॥ इसके बाद रामने अङ्गदको विविध प्रकारके वस्त्र-आभूषण दिये और उन्हें किष्किन्धा भेज दिया। निषादराजको शृंगबेरपुर भेज दिया ॥ १४ ॥ इसके बाद रामचन्द्रजीने मकरध्वजको पातालपुरी भेजा। मकरध्वजको चलते समय रामने विविध प्रकारकी भेंटें दीं। इनके अतिरिक्त और-और मित्रोंको भी आदर-सत्कार करके अपने-अपने स्थानको भेज दिया ॥ १५ ॥ थोड़ी देर बाद रामने यूपकेतुको बुलाया और विविध प्रकारके वस्त्राभूषण देकर विदिशानगरीको भेज दिया। यूपकेतुने भी राम तथा सीताको प्रणाम किया और अपनी सेना तथा परिवारको साथ लेकर चल पड़े ॥ १६ ॥ १७ ॥ इसी तरह रामने सुबाहुको मथुरा भेज दिया। पुष्करको भी उनकी सेनाके साथ पुष्करावती तथा तक्षको तक्षशिला भेज दिया। फिर अङ्गदको हस्तिनापुरीके लिए और चित्रकेतुको स्त्री-सेना तथा वाहनोंके साथ उनकी राजधानीको भेज दिया। चलते समय विविध प्रकारके वस्त्र-आभूषणोंसे रामने इनका भी सत्कार किया ॥ १८-२० ॥ तदनन्तर राम और सीताने लवको बुलाकर कितने ही प्रकारके वस्त्राभूषण प्रदान किये और उनकी स्त्री तथा पुत्रके साथ उन्हें उत्तरकुरु देशमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दत्त्वा स्वीयानि शस्त्राणि कोदंडं च महोज्ज्वलम्। नानायानानि वस्त्राणि रामश्चिंतामणिं ददौ ॥२४॥
सस्त्रीपुत्रं कुशं तोष्य राघवो वाक्यमब्रवीत्। वत्स गच्छ सुखं तिष्ठ भूमिं धर्मेण पालय ॥२५॥
जंबूद्वीपनृपान्सर्वांस्तथा द्वीपांतरस्थितान्। सर्वानेतान्पालयस्त्र पुत्रवत्कुशबालक ॥२६॥
इत्युक्त्वा तान्नृपान्प्राह युष्माभिः कुशबालकः। मत्स्थाने माननीयोऽयं रक्षणीयस्त्वहर्निशम् ॥२७॥
तद्रामवचनं श्रुत्वा नृपाः प्रोचू रघूत्तमम्। त्वत्तेजःपूरितो बालस्त्वत्तोऽस्माकं शताधिकः ॥२८॥
अस्त्येव नात्र संदेहः सत्यं विद्धि रघूत्तम। यथा त्वया पालिताः स्मो वयं तद्वत्कुशोऽप्ययम् ॥२९॥
रक्षिष्यति सदाऽस्माकं दृष्टोऽबालपराक्रमः। इत्युक्त्वा राघवं नत्वा सर्वे ते पार्थिवोत्तमाः ॥३०॥
रामेण पूजिताः सम्यक् वस्त्रालंकारवाहनैः। ययुः कुशं पुरस्कृत्य स्वस्वसैन्यसमन्विताः ॥३१॥
कुशोऽपि राघवं नत्वा मूर्ध्नि सीताऽवघ्रापितः। वसिष्ठेन रथे स्थित्वा पुरीं गन्तुं प्रचक्रमे ॥३२॥
तदा रामस्तं रजकं मंथरां प्रैषयत्पुरीम्। कुशेन सह वेगेन समाहूयाथ सादरम् ॥३३॥
पूर्ववैरमनुस्मृत्य नाभ्रं यातामधर्मिणौ। कृष्णावतारे तावेव रजको रजकोऽभवत् ॥३४॥
मंथरा पूतना जाता हतौ तौ पूर्ववैरतः। ततः कुशः सार्द्रनेत्रः पश्यन् रामं च जानकीम् ॥३५॥
परिवर्त्य मुखं पृष्ठे वारं वारं रथे स्थितः। गच्छ गच्छेति रामेण सीतयाऽपि निजैः करैः ॥३६॥
सूचितः सन्ययौ सैन्यैर्वेष्टितः स्वपुरीं प्रति। ददर्श नगरीं शून्यां श्रीरामविरहातुराम् ॥३७॥
गत्वा पुर्यां महोत्साहैर्निजसिंहासनस्थितः। पूज्य सर्वान्पार्थिवांश्च समालिंग्य व्यसर्जयत् ॥३८॥

भेज दिया। जिस समय लव चलने लगे तो सीताने उन्हें कामधेनु गौ दी ॥ २१ ॥ २२ ॥ इसके बाद रामने कुशको बुलाया और उन्हें भी स्त्री-पुत्र तथा मित्रता रखनेवाले राजाओं और सेना आदिके साथ अयोध्या भेज दिया ॥ २३ ॥ चलते समय कुशको रामने अपने दिव्य शस्त्र, महान् उज्ज्वल धनुष, विविध प्रकारकी सवारियें, वस्त्र और चिन्तामणि दिया। इस तरह नाना प्रकारकी वस्तुएँ देकर रामने कुशसे कहा—हे वत्स! अब तुम अयोध्या जाओ और धर्मपूर्वक पृथ्वीकी रक्षा करो। हे बच्चे कुश! इस जम्बूद्वीप तथा अन्यान्य द्वीपोंके रहनेवाले राजाओंका भली-भाँति पालन करना ॥ २४–२६ ॥ ऐसा कहनेके बाद रामने उन सब राजाओंसे कहा कि तुम लोग भी कुशको मेरे समान ही मानना और सदा इसकी रक्षा करते रहना ॥ २७ ॥ रामकी बातें सुनकर उन राजाओंने कहा कि यह बालक कुश आपही के तेजसे परिपूर्ण है। इस कारण मेरे लिए तो यह आपसे भी सैकड़ोंगुना अधिक माननीय है। हे रघूत्तम! हम जो कुछ कह रहे हैं, उसे आप सच मानिए। जिस तरह अब तक आप हमारी रक्षा करते आये हैं, उसी तरह यह भी हमारी रक्षा करेगा। यह बालक अवश्य है, किन्तु इसका पराक्रम बच्चे जैसा नहीं है। ऐसा कहकर उन राजाओंने रामको प्रणाम किया और रामने विविध प्रकारके वस्त्र-आभूषण तथा सवारियें आदि देकर उन्हें हँसी-खुशी विदा किया। वे सब कुशको अपने आगे करके अपनी विशाल सेनाके साथ चल पड़े ॥ २८–३१ ॥ कुशने चलते समय रामको प्रणाम किया और सीताने कुशका माथा सूँघा। इसके बाद वे कुलगुरु वसिष्ठके साथ रथपर सवार होकर अयोध्यापुरीको चलनेकी तैयारी करने लगे ॥ ३२ ॥ उसी समय रामने उस निन्दक रजक (धोबी) तथा दासी मन्थराको सादर बुलाया और कुशके साथ अयोध्यापुरी भेज दिया ॥ ३३ ॥ पिछले वैरका स्मरण करके ही रामचन्द्रजी इन दोनोंको अपने साथ स्वर्गलोक नहीं ले गये। कृष्णावतारमें वह रजक राजा कंसका धोबी होकर उत्पन्न हुआ और दासी मन्थरा पूतना हुई। श्रीकृष्णचन्द्रजीने अपने हाथों इन दोनोंका संहार किया। रथपर बैठकर चलते समय बार-बार मुँह घुमाकर कुश आँसूभरे नेत्रोंसे राम और जानकीकी ओर निहार रहे थे। इधर राम और सीता भी अपने हाथोंसे कुशको जानेका संकेत कर रहे थे ॥ ३४–३६ ॥ इस तरह संकेत करनेपर कुश अपनी विशाल सेना लिये हुए अयोध्यापुरीको चल पड़े। जब पुरीमें पहुँचे तो वह सारी नगरी रामके वियोगसे रोती-सी दिखायी पड़ी ॥ ३७ ॥ अस्तु, कुश पुरीमें गये और बड़े उत्साहके साथ राजसिंहासनपर बैठे। इसके बाद अपने साथ आये हुए राजाओंका उन्होंने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तेऽपि नत्वा कुशं स्वं स्वं स्थलं जग्मुर्नृपोत्तमाः । करभारं ददुस्तस्मै तदाज्ञावशवर्तिनः ॥३९॥
मन्थरारजकौ द्वौ तौ दैवात्पुर्या बहिर्मृतौ । प्रापतुर्जन्म साकेते मृतानां न पुनर्भवः ॥४०॥
अथ रामोऽब्रवीत्सर्वान्वानरान् जाह्नवीतटे । मदर्थं भ्रमिताः सर्वे यूयं वानरसत्तमाः ॥४१॥

द्वापराग्रे पुनः सर्वे व्रजे गोपा भविष्यथ ।
युष्माभिः सहिताः प्रीत्या करिष्याम्यशनादिकम् ॥ ४२ ॥

तदाऽब्रवीत्स सौमित्रिं रामः प्रीत्या पुरःस्थितम् । महान् श्रमः कृतः पूर्वं सेवायां मम दण्डके ॥४३॥
भव त्वं द्वापरे ज्येष्ठः शुश्रूषां ते करोम्यहम् । ततस्तान्राघवः प्राह ऋक्षान्पौरान्कपीनपि ॥४४॥
सर्वानेव मया सार्धं प्रयातेति दयान्वितः । ततो ददौ कल्पवृक्षपारिजातौ सुराधिपम् ॥४५॥

ततस्तं पुष्पकं प्राह कुबेरं वह सादरम् ।
गच्छाद्यैव तथेत्युक्त्वा रामं नत्वा तु पुष्पकम् ॥ ४६ ॥

सीतां पृष्ट्वा ययौ शीघ्रं राघवेणातिमानितम् । ततः प्राह रघुश्रेष्ठश्चोर्मिलां मांडवीं तथा ॥४७॥
श्रुतकीर्तिं समाहूय वाल्मीकेश्च मुनेः पुरः । युष्माभिर्भर्तृदेहैश्च निजदेहादि वेगतः ॥४८॥
श्वोऽग्नौ दग्ध्वा स्वर्गलोकं गन्तव्यं मम वाक्यतः । तथेति राघवं प्रोचुस्तदा ताश्चोर्मिलादिकाः ॥४९॥
रामं नत्वा ययुः सर्वाः स्वं स्वं तद्वसनगृहम् । अथ रामोऽपि तां रात्रिं सीतया रुक्ममंचके ॥५०॥
ऋषिभिः शिवब्रह्माद्यास्तस्थुस्तत्रैव संगताः । सौमित्राद्याः पत्नीभिः शिश्यिरे परया मुदा ॥५१॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पूर्णकाण्डे
सर्वेषां विसर्जनं नाम पञ्चमः सर्गः ॥ ५ ॥

पूजन-आलिंगन करके विदा किया ॥ ३८ ॥ वे राजे भी कुशको प्रणाम करके अपनी-अपनी नगरीको चले गये और वहाँपर कुशकी आज्ञामें रहते हुए पूर्ववत् करभार देते रहे ॥ ३९ ॥ दैववश वह रामनिन्दक धोबी तथा दासी मन्थरा ये दोनों अयोध्यापुरीमें न मरकर अयोध्याके बाहर मरे । इसी लिए उन्हें फिर जन्म लेना पड़ा । वैसे तो अयोध्यामें जो लोग मरते हैं, उन्हें फिर माताके गर्भमें नहीं आना पड़ता ॥ ४० ॥ उधर सब लोगोंको विदा करके रामने सब वानरोंसे कहा—हे वानरश्रेष्ठगण ! तुम सबने मेरे लिए बड़ा कष्ट उठाया और मेरे साथ मारे-मारे फिरते रहे । आगे चलकर द्वापरमें तुम सब गोप होओगे । उस समय मैं तुम्हारे साथ भोजन तथा विविध प्रकारकी लीलायें करूँगा ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ इसके बाद रामने लक्ष्मणसे कहा कि उस समय तुमने दण्डकवनमें मेरी सेवा करते समय बड़ा कष्ट उठाया था । आगे द्वापर युगमें तुम मेरे ज्येष्ठ भ्राता बलराम होओगे और मैं स्वयं तुम्हारी सेवा करूँगा । इसके अनन्तर रामने उन भालुओं, वानरों तथा पुरवासियोंसे कहा कि तुम लोग मेरे साथ चलो । तत्पश्चात् रामने कल्पवृक्ष और परिजात ये दोनों वृक्ष इन्द्रको दे दिये । फिर पुष्पक विमानसे कहा कि तुम आज ही जाकर आदरपूर्वक कुबेरकी सवारीका काम करो । यह सुनकर पुष्पक राम तथा सीताको प्रणाम करके चल पड़ा । चलते समय भगवानने उसका भी अच्छी तरह आदर-सत्कार किया । वाल्मीकिके समक्ष रामने माण्डवी (भरतपत्नी), उर्मिला (लक्ष्मणकी स्त्री) तथा श्रुतकीर्ति (शत्रुघ्नकी पत्नी) से कहा—तुम सब अपने-अपने पतिके शरीरके साथ कल अपना शरीर चिताकी अग्निमें जलाकर स्वर्गलोक चली जाना । उर्मिला आदिने भगवान्की आज्ञा स्वीकार कर ली ॥ ४२–४९ ॥ वे रामको प्रणाम करके अपने-अपने तम्बुओंमें चली गयीं । इसके अनन्तर राम उस रात्रिमें सीताके साथ एक सुवर्णमय मञ्चपर सो गये । शिव-ब्रह्मा आदि देवता भी ऋषियोंके साथ वहाँ ही ठहरे रहे और लक्ष्मण आदि भी जाकर अपनी-अपनी स्त्रियोंके साथ सानन्द सोये ॥ ५० ॥ ५१ ॥ इति शतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पं० रामतेजपाण्डेयकृत 'ज्योत्स्ना' भाषाटीकासहिते पूर्णकाण्डे पञ्चमः सर्गः ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Kulkarni Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षष्ठः सर्गः

(रामका वैकुण्ठारोहण)

श्रीरामदास उवाच

अथ रामः समुत्थाय प्रभाते सीतया सह । अजमीढं समाहूय मंजुलं वाक्यमब्रवीत् ॥ १ ॥
अद्याहं सीतया स्वीयं पदं गच्छामि बन्धुभिः । वानरैः सकलैः पौरैस्त्वया शेषं तु यज्जलम् ॥ २ ॥
वस्त्रगृहादिकं सर्वं प्रेषणीयं कुशं प्रति । यच्चरं कीटकांतं तन्मया यास्यति वै दिवम् ॥ ३ ॥
अतस्त्वं तं कुशं गत्वा सर्वं वृत्तं निवेदय । करोतूत्तरकार्याणि कुशोऽस्माकं सविस्तरम् ॥ ४ ॥
मा करोतु कुशोऽस्माकं खेदं तं त्वं निवारय । इति रामवचः श्रुत्वा साश्रुनेत्रस्तथेति सः ॥ ५ ॥
अजमीढस्तदा प्राह ननाम रघुनायकम् । अथ रामः शनैः पौरैः स्नात्वा भागीरथीजले ॥ ६ ॥
कृत्वा नित्यविधिं पूर्वं हुत्वा वह्निं सविस्तरम् । ददौ दानान्यनेकानि गङ्गासैकतसंस्थितः ॥ ७ ॥
ततः प्रास्थानिकं कर्म चकार स यथाविधि । वह्निं विसर्जयामास वैकुण्ठं प्रति राघवः ॥ ८ ॥
तदा रामस्य पद्मा सा गता दक्षिणहस्ततः । मूर्तिरूपधरा वेदा वैकुण्ठमाययुस्तदा ॥ ९ ॥
त्रिपदा प्रणवेनैव श्रीरामास्याद्विनिर्गता । नत्वा रामं ययौ शान्तिः क्षमा मेधा धृतिर्दया ॥१०॥
तेजो बलं यशः शौर्यं ययौ सर्वं तदा पुरः । ततः पौरा वानराश्च सर्वे भागीरथीजले ॥११॥
स्नात्वा निरुध्य वायूंश्च निजदेहानि तत्यजुः । अथ रामो मुदा गङ्गां स्पृष्ट्वा दर्भासनोपरि ॥१२॥
दर्भपाणिः स्थितस्तूष्णीमुत्तराभिमुखः स्त्रिया । तावत्सर्वे ददृशुस्ते देवा विष्णुं पुरःस्थितम् ॥१३॥
चतुर्भुजं नीलकांतिं पीतकौशेयधारिणम् । कौस्तुभांकितहृद्देशं श्रीवत्सांकोपशोभितम् ॥१४॥
सीता बभूव सा लक्ष्मीर्विष्णोर्वामांकसंस्थिता । शेषो बभूव सौमित्रिः फणाभिरतिभासुरः ॥१५॥

श्रीरामदासने कहा—सवेरे रामचन्द्रजी सीताके साथ सोकर उठे तो अजमीढ़को बुलाकर मीठी बातोंमें समझाकर कहने लगे कि आज मैं सीता, बन्धुओं, समस्त वानरों और प्रजाजनोंके साथ अपने परमधामकी यात्रा करूँगा ॥ १ ॥ २ ॥ मेरे जितने भी तम्बू-कनात आदि वस्त्रगृह हैं, उन्हें कुशके पास अयोध्या भेज देना । बड़े जीवसे लेकर कीट पर्यन्त सब प्राणी मेरे साथ वैकुण्ठ जायँगे । मेरे चले जानेपर तुम कुशके पास चले जाना और मेरा सब समाचार कह सुनाना और यह भी कह देना कि कुश हमारी और्ध्वदैहिकी क्रियाओंको खूब अच्छी तरह सम्पन्न करे । यदि मेरे परमधाम जानेके कारण कुश किसी प्रकारका खेद करने लगे तो तुम उसे अच्छी तरह समझा देना । रामकी बात सुनकर अजमीढ़ने आँखोंमें आंसू भरकर उनकी आज्ञा स्वीकार की और भगवानको प्रणाम किया । इसके अनन्तर रामने सबके साथ गङ्गाजीमें स्नान किया, नित्यकृत्य किये, हवन किया और गङ्गातटपर स्थित ब्राह्मणोंको तरह-तरहके दान दिये ॥ ३-७ ॥ इसके बाद यात्रासे सम्बन्ध रखनेवाले जितने कर्म थे, वह सब किये । चलते समय हवनकी अग्निको वैकुण्ठलोक भेज दिया ॥ ८ ॥ उस समय रामरूपधारी विष्णुकी लक्ष्मी सात्त्विकी सीता रामके दक्षिण भागसे वैकुण्ठधामको चली गयी । उस समय सब वेद अपने मूर्तरूपसे वैकुण्ठलोकमें जा पहुँचे ॥ ९ ॥ रामके प्राणायाम करते ही शान्ति, क्षमा, धृति और दया आदि गुण चले गये ॥ १० ॥ उसी तरह तेज, बल, यश और शौर्य आदि भी कूच कर गये । इसके अनन्तर सब पुरवासियो तथा वानरोंने भी गङ्गाजीमें स्नान और प्राणायाम करके अपने शरीरका परित्याग कर दिया । इसके बाद सीताके साथ रामने गङ्गाजलका स्पर्श किया और कुशासनपर बैठे ॥ ११ ॥ १२ ॥ हाथमें कुशा लेकर वे उत्तरकी ओर मुख करके बैठे । उसी समय राम देवताओंके सम्मुख विष्णुभगवान्के रूपमें परिणत हो गये ॥ १३ ॥ उन भगवान्के चार भुजायें थीं । नीलकमलके समान श्याम शरीर था । वे अपने शरीरपर पीले वस्त्र धारण किये हुए थे । कौस्तुभमणिसे उनका हृदय सुशोभित हो रहा था और श्रीवत्स अपनी निखार अलग ही दिखा रहा था ॥ १४ ॥ गङ्गाजीके तटपर रामके वामांगमें बैठी हुई सीता लक्ष्मीके

CC0. In Public Domain.Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शङ्खो बभूव भरतः श्रीविष्णोः सव्यसत्करे । वामे करे बभूवाथ शत्रुघ्नश्च सुदर्शनम् ॥१६॥
देवेषु विविशुः सर्वे वानरास्ते क्षणात्तदा । चांडालकृमिकीटांता अयोध्यापुरवासिनः ॥१७॥
प्रापुस्ते दिव्यदेहानि विमाने संस्थिता बभुः । तदा निनेदुर्वाद्यानि देवानां गगनांगणे ॥१८॥
ववर्षुर्देवपत्न्यश्च पुष्पवृष्टिभिरादरात् । ननृतुर्वै ह्यप्सरसो जगुर्गन्धर्वकिन्नराः ॥१९॥
प्रणनाम तदा तार्क्ष्यः श्रीविष्णु रविभासुरम् । देहानि मुमुचुः सर्वे श्रीभिः सोमादिकाश्च ते ॥२०॥
पतिदेहानि चालिंग्य तदा ता उर्मिलादिकाः । देहान्यग्नौ जहुः सर्वा रम्ये भागीरथीतटे ॥२१॥
अथ ता देवपत्न्यश्च रत्नदीपैः सहस्रशः । विष्णुं नीराजयामासुर्लक्ष्मीयुक्तं महाभुजम् ॥२२॥
विष्णुस्ततोऽब्रवीद्वाक्यं वेधसं मंजुलं शनैः । अयोध्यावासिनः सर्वे तिर्यङ्मात्रादयः शुभाः ॥२३॥
एते समागता ब्रह्मन्नेषां स्थानं वदाधुना । तद्विष्णोर्वचनं श्रुत्वा तदा ब्रह्माऽब्रवीद्वचः ॥२४॥
मल्लोकादुपरिष्ठाच्च लोकान्सांतानिकाञ्छुभान् । एते यांतु जनाः सर्वे त्वद्दर्शनमहोज्ज्वलाः ॥२५॥

ततः प्राह पुनर्विष्णुरयोध्यायां मृताश्च ये ।
अग्रे तेऽपि समायांतु लोकान्सांतानिकाञ्छुभान् ॥२६॥

तथेति स विधिः प्राह महाविष्णुं मुदान्वितः । ततस्ते दिव्यदेहाश्च साकेतपुरवासिनः ॥२७॥
नानाविमानसंस्थाश्च दिव्यवस्त्रविभूषिताः । दिव्यालंकारसंयुक्ता ह्यप्सरोभिर्विलेपिताः ॥२८॥
नानासुगंधगंधाद्यैर्दिव्यचामरवीजिताः । विरेजुर्गगने चंद्रवदना रविभासुराः ॥२९॥
ततो ब्रह्मादयो देवाः प्रणेमुर्विष्णुमादरात् । तुष्टुवुर्विविधैः स्तोत्रैर्वेदघोषैर्मुनीश्वराः ॥३०॥
तदा तुष्टाव शंभुस्तं विष्णुं त्रैलोक्यपालकम् । वनमालां दधानं तं दिव्यचन्दनचर्चितम् ॥३१॥

रूपमें और लक्ष्मण फणोंसे सुशोभित शेष भगवान्के स्वरूपमें परिणत हो गये ॥ १५ ॥ भरतजो शंखके रूपमें परिवर्तित होकर विष्णुभगवान्के दाहिने हाथमें जा विराजे । शत्रुघ्नने विष्णुके सुदर्शनचक्र बनकर वाम भुजामें अड्डा जमा लिया ॥ १६ ॥ वहाँपर जितने वानर थे, वे सब क्षण भरमें अपने अंशरूपसे देवताओंके शरीरमे प्रविष्ट हो गये । चाण्डालसे लेकर कृमि-कीट पर्यन्त सभी अयोध्यानिवासी अपने-अपने शरीरको छोड़कर दिव्य देह धारण करके विमानोंपर सुशोभित होने लगे । उस समय गगनांगणमें देवताओंके विविध प्रकारके बाजे बज रहे थे ॥१७॥१८॥ देवांगनायें प्रेमपूर्वक कुसुमवर्षा कर रही थीं । अप्सरायें नाच रही थीं और गन्धर्वगण तरह-तरहके गायन गा रहे थे ॥ १९ ॥ उसी समय गरुड़ने आकर सूर्यसदृश देदीप्यमान भगवान्को दण्डवत् प्रणाम किया । इधर सोम आदि राजाओंने भो अपनी स्त्रियों समेत अपने-अपने शरीरको छोड़ दिया ॥२०॥ इन लोगोंके परम धाम चले जानेके बाद उर्मिला, माण्डवी तथा श्रुतकीर्तिने अपने-अपने पतिके शरीरका आलिंगन करके चितामें जलकर शरीर छोड़ दिया ॥ २१ ॥ उधर समस्त देवताओंकी स्त्रियोंने हजारों रत्नमय दीपक जलाकर लक्ष्मीके समेत विष्णुभगवान्की आरती उतारी ॥ २२ ॥ कुछ देर बाद विष्णुभगवान्ने ब्रह्मासे कहा कि मेरे साथ जो अयोध्याके सब पुरवासी तथा तिर्यग्योनि तकके प्राणी यहाँ आये हैं, इनके लिए कोई स्थान बतलाइए । विष्णुभगवान्की बात सुनकर ब्रह्माजी बोले कि आपके दर्शनसे ये पवित्र प्राणी मेरे लोकसे भी ऊपर एक सान्तानिक लोक है—वहाँ ही जाकर निवास करें ॥ २३-२५ ॥ इसके बाद विष्णुभगवान्ने फिर कहा कि इनके अतिरिक्त भी जो प्राणी अयोध्यामें शरीर त्याग करें, वे सब सान्तानिक लोक प्राप्त करें ॥२६ ॥ ब्रह्माने भगवान्की यह बात भी स्वीकार कर ली । इसके अनन्तर वे सब अयोध्यावासी दिव्य शरीर धारण करके नाना प्रकारके विमानोंपर जा बैठे । उस समय वे लोग अच्छे-अच्छे गहने-कपड़े पहने थे और कितनी ही सुन्दरी अप्सरायें उनके शरीरमें सुगन्ध मल रही थीं । उनपर दिव्य चमर चल रहे थे । सूर्यके समान देदीप्यमान तथा चन्द्रमुखी नारियाँ सब प्रकारकी सेवायें कर रही थीं ॥ २७-२९ ॥ तदनन्तर ब्रह्मा आदि देवताओंने विष्णुभगवान्को प्रणाम किया और बड़े-बड़े ऋषि वेदकी ऋचाओंसे भगवान्की स्तुति करने लगे ॥ ३० ॥ सब लोगोंके बाद श्रीशिवजी त्रैलोक्यपालक विष्णुभगवानकी स्तुति करने लगे । उस

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शंभुरुवाच

राघवं करुणाकरं भवनाशनं दुरितापहं माधवं खगगामिनं जलरूपिणं परमेश्वरम् ।
पालकं जनतारकं भवहारकं रिपुमारकं त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिण रघुनन्दनम् ॥३२॥
भूधवं वनमालिनं घनरूपिणं धरणीधरं श्रीहरिं त्रिगुणात्मकं तुलसीधवं मधुरस्वरम् ।
श्रीकरं शरणप्रदं मधुमारकं व्रजपालकं त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम् ॥३३॥
विट्ठलं मथुरास्थितं रजकांतकं गजमारकं सन्नुतं बकमारकं वृकघातकं तुरगार्दनम् ।
नन्दजं वसुदेवजं बलियज्ञगं सुरपालकं त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम् ॥३४॥
केशवं कपिवेष्टितं कपिमारकं मृगमर्दिनं सुंदरं द्विजपालकं दितिजार्दनं दनुजार्दनम् ।
बालकं खरमर्दिनं ऋषिपूजितं मुनिचिंतितं त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम् ॥३५॥
शंकरं जलशायिनं कुशबालकं रथवाहनं सरयूनतं प्रियपुष्पकं प्रियभूसुरं लवबालकम् ।
श्रीधरं मधुसूदनं भरताग्रजं गरुडध्वजं त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम् ॥३६॥
गोप्रियं गुरुपुत्रदं वदतां वरं करुणानिधिं भक्तपं जनतोषदं सुरपूजितं श्रुतिभिः स्तुतम् ।
भुक्तिदं जनमुक्तिदं जनरंजनं नृपनन्दनं त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिण रघुनन्दनम् ॥३७॥
चिद्घनं चिरजीविनं मणिमालिनं वरदोन्मुखं श्रीधरं धृतिदायकं बलवर्धनं गतिदायकम् ।
शांतिदं जनतारकं शरधारिणं गजगामिनं त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम् ॥३८॥
शार्ङ्गिणं कमलाननं कमलादृशं पदपङ्कजं श्यामलं रविभासुरं शशिसौख्यदं करुणार्णवम् ।

समय भगवान् वनमाला धारण किये थे और उनके शरीरमें दिव्य चन्दनका लेप किया हुआ था ॥ ३१ ॥ श्रीशिवजीने कहा–रघुवंशमें उत्पन्न, करुणाकर, संसारके आवागमनसे मुक्त करनेवाले, पापनाशकारी, लक्ष्मीके पति, जलरूपी परमेश्वर, सबके पालक, भक्तोंको तारनेवाले, भवबाधाके नाशक, शत्रुसंहारकारी, नररूपधारी हे जगदीश्वर रघुनन्दन ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥ ३२ ॥ पृथ्वीपति, वनमालाधारी, मधुनामक राक्षसको मारनेवाले, व्रजके पालक, नवीन नीरदके समान श्यामकाय, पृथ्वीकी रक्षा करनेवाले, सत्त्व, रज और तम इन तीनों गुणोंसे युक्त, तुलसीके पति, मीठे स्वरवाले, शोभाका विस्तार करनेवाले, नररूपधारी जगदीश्वर हे रघुनन्दन ! मैं आपका भजन करता हूँ ॥ ३३ ॥ विट्ठलरूपसे मथुरामें निवास करनेवाले, रजकसंहारी, गजान्तकारी, सज्जनोंसे संस्तुत, बकासुर, वृकासुर और केशीको मारनेवाले, नन्दसुवन, वसुदेवके पुत्र, वामनरूपसे बलिके यज्ञमें जानेवाले, देवताओंके पालक, नररूपधारी हे जगदीश्वर रघुनन्दन ! मैं आपका भजन करता हूँ ॥ ३४ ॥ केशव, बानरोंसे घिरे हुए, बालि वानरको मारनेवाले, मृगरूपधारी मारीचको मारनेवाले, सुन्दर, ब्राह्मणोंके रक्षक, राक्षसोंका संहार करनेवाले, सर्वदा बालरूपधारी, खरको मारनेवाले, ऋषियोंसे पूजित, मुनियों द्वारा चिन्तित और नररूपधारी हे जगदीश्वर रघुनन्दन ! मैं आपका भजन करता हूँ ॥ ३५ ॥ संसारका कल्याण करनेवाले, जिनके कुश जैसे पराक्रमी बालक हैं, रथ जिनकी सवारी है, सरयू स्वयं जिनको नमस्कार करती है, जिनको पुष्पक विमान विशेष प्रिय है, जो ब्राह्मणोंसे अतिशय प्रेम रखते हैं, लव नामका जिनका बालक है, जो लक्ष्मीकी रक्षा करते हैं, जिन्होंने मधुनामक दैत्यका संहार किया था, जो भरतके बड़े भ्राता हैं और जिनकी ध्वजामें गरुड़का चिह्न बना हुआ है, ऐसे नररूपधारी हे जगदीश रघुनन्दन ! हम आपका भजन करते हैं ॥ ३६ ॥ जिनको गौ विशेष प्रिय है, जो यमलोकसे गुरुपुत्रको लौटा लाये थे, जो वक्ताओंमें श्रेष्ठ हैं, जो करुणाके समुद्र हैं, जो सब तरहसे अपने भक्तोंकी रक्षा करते हैं, जो अपने भक्तोंको प्रसन्न रखते हैं, देवतागण जिनकी पूजा करते हैं, चारों वेद जिनकी स्तुति करते हैं, जो सब प्रकारके भोग प्रदान करते हैं और जो अपने भक्तको मुक्ति प्रदान करते हैं, महाराज दशरथके पुत्र हे जगदीश्वर रघुनन्दन ! मैं आपका भजन करता हूँ ॥ ३७ ॥ चिद्घनरूपधारी, चिरञ्जीवी, मणियोंकी माला धारण करनेवाले, वरदोन्मुख, श्रीधर, धैर्य प्रदान करनेवाले, गतिदायक, बलवर्धनकारी, शान्तिदाता, जनतारक, शरधारी, गजगामी, नररूप धारण करनेवाले हे जगदीश्वर रघुनन्दन ! मैं आपका भजन करता हूँ ॥ ३८ ॥ धनुष

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सत्पतिं नृपबालकं नृपवंदितं नृपतिप्रियं त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम् ॥३९॥
निर्गुणं सगुणात्मकं नृपमण्डनं मतिवर्द्धनमच्युतं पुरुषोत्तमं परमेष्ठिनं स्मितभाषिणम् ।
ईश्वरं हनुमन्नुतं कमलाधिपं जनसाक्षिणं त्वां भजे जगदीश्वरं नररूपिणं रघुनन्दनम् ॥४०॥
ईश्वरोक्तमेतदुत्तमादराच्छतनामकं यः पठेद्भुवि मानवस्तव भक्तिमांस्तपनोदये ।
त्वत्पदं निजबन्धुदारसुतैर्युतश्चिरमेत्य नो सोऽस्तु ते पदसेवने बहुतत्परो मम वाक्यतः ॥४१॥
इति स्तुत्वा महाविष्णुं प्रोवाच गिरिजापतिः । आरुहस्व रमानाथ गरुडोपरि वेगतः ॥४२॥
वैकुण्ठारोहणस्यायं कालो वाल्मीकिना कृतः । एकादश सहस्राश्च समास्त्वेकादशैव च ॥४३॥
तथैकादश मासाश्च दिनान्येकादशैव च । तथैकादश नाडीश्च पलान्येकादशैव च ॥४४॥
गतानि तेऽत्र भूम्यां हि जन्मादारभ्य राघव । वसन्तपञ्चमीनाम्नी तिथिश्चैत्रासिताढ्य हि ॥४५॥
पुण्येऽह्नि स्वपदं गन्तुं त्वरां कुरु रमेश्वर । तदा विहस्य श्रीविष्णुर्वाल्मीकिं मुनिपुङ्गवम् ॥४६॥
समालिंग्य मुनीन्पृष्ट्वा तस्थौ स गरुडोपरि । ध्वनत्सु देववाद्येषु स्तुवत्सु नारदादिषु ॥४७॥
पुष्पैर्वर्षत्सु देवेषु प्रनर्तत्स्वप्सरःसु च । नानाविमानजालैश्च सर्वत्र परिवेष्टितः ॥४८॥
ययौ विष्णुः स वैकुण्ठं लोकान्पश्यन्शनैः शनैः। वैकुण्ठे स्वपदे स्थित्वा विससर्ज शिवादिकान् ॥४९॥
तस्थौ लक्ष्म्याऽऽनन्दमयः परिपूर्णमनोरथः । खगेंद्रसेवितपदः शेषतल्पविभूषितः ॥५०॥
अयोध्यावासिनः सर्वे ययुः सांतानिक पदम् । ततस्ते मुनयः सर्वे ययुः स्वं स्वं स्थलं प्रति ॥५१॥
रामवाक्यात्सोऽजमीढः सांत्वयामास त कुशम् । स्वर्गारोहणविस्तारं कथयामास तं कुशम् ॥५२॥

धारण किये, कमलके समान मुखवाले, कमलकी भाँति नेत्रोंवाले, कमलके ही सरीखे चरणकमलवाले, श्याम वर्ण, सूर्यके समान देदीप्यमान, चन्द्रमाको सुख देनेवाले, करुणाके समुद्र, एक अच्छे प्रभु, राजाओंके रक्षक, राजाओंसे वन्दित, राजाओंके प्रिय और नररूपधारी हे जगदीश्वर रघुनन्दन ! मैं आपका भजन करता हूँ ॥ ३९ ॥ निर्गुण होते हुए भी सगुणरूपधारी, राजाओंके कुलभूषण, बुद्धिवर्द्धनकारी, परम पूजनीय, मुस्कराकर बोलनेवाले, जगत्‌के प्रभु, हनुमानजीसे नमस्कृत, भक्तोंके साक्षी, लक्ष्मीके पति और नररूपधारी हे जगदीश्वर रघुनन्दन ! मैं आपका भजन करता हूँ ॥ ४० ॥ इस प्रकार स्तुति करते हुए शिवजीने अन्तमें कहा कि प्रातःकाल सूर्योदयके समय जो कोई प्राणी मेरे कहे हुए इस शतनाम-स्तोत्रका पाठ करेगा, वह मेरे आशीर्वादसे अपने बन्धुओं तथा स्त्री-पुत्रादिकोंके साथ यहाँ आकर बहुत कालतक आपके चरणोंकी सेवाका सुयोग पायेगा ॥ ४१ ॥ इस प्रकार स्तुति करनेके पश्चात् शिवजीने कहा—हे रमानाथ ! आप शीघ्र गरुड़पर आरूढ़ हों ! क्योंकि वाल्मीकिजीने आपके वैकुण्ठारोहणार्थ यही समय अपने रामायणमें निर्धारित किया है। इस समय ग्यारह हजार ग्यारह वर्ष, ग्यारह महीना, ग्यारह दिन, ग्यारह नाड़ी तथा ग्यारह पल पूरे हो रहे हैं। आज चैत्र कृष्णपक्षकी पञ्चमी तिथि है ॥ ४२-४५ ॥ इस पवित्र दिवसको आप परमधाम जानेके लिए शीघ्रता करिए। उस समय प्रभु मुसकाये। उन्होंने मुनिपुङ्गव वाल्मीकि ऋषिको हृदयसे लगाया, ऋषियोंसे आज्ञा माँगी और गरुडके ऊपर सवार हो गये। तब देवताओंने विविध प्रकारके बाजे बजाये, नारद आदि महर्षियोंने स्तुति की, देवतागण भगवान्‌पर फूल बरसाने लगे और अप्सरायें नाचने लगीं ॥ ४६-४८ ॥ इस तरह गरुड़पर बैठकर भगवान् राम सब लोगोंके देखते-देखते वैकुण्ठलोकको चले गये। उस धाममें पहुँचकर वे अपने सिंहासनपर बैठे और शिव आदि देवताओंको विदा कर दिया। वे आनन्दमय महाप्रभु हर प्रकारसे परिपूर्ण मनोरथ होकर लक्ष्मीके साथ आनन्दपूर्वक वहीं रहने लगे। उस समय गरुड़ भगवानके चरणोंकी सेवा करते थे और वे विष्णु भगवान शेषकी शय्यापर सोते थे ॥ ४९ ॥ ५० ॥ वे सब अयोध्यावासी भगवान्‌के कथनानुसार सान्तानिक लोकमें जा बिराजे। इसके अनन्तर भगवान्‌का स्वर्गारोहण देखनेके लिए आये हुए ऋषि भी अपने-अपने आश्रमोंको चले गये ॥ ५१ ॥ रामचन्द्रजीके कथनानुसार हस्तिनापुरके राजा अजमीढ़ अयोध्यामें कुशके पास गये और भगवान्‌की परमधामयात्रा-सम्बन्धी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुशेन मानितः सोऽपि ययौ स्वीयं गजाह्वयम् । लब्ध्वा कुमुद्वतीं तस्यां कुशः पुत्रान्स निर्ममे ।।५३।।
एवं श्रीरघुनाथस्य स्वर्गारोहणकौतुकम् । ये शृण्वंति नरा भक्त्या तेऽपि स्वर्गं प्रयांति हि ।।५४।।
वैकुण्ठारोहणाध्यायमिमं नित्यं पठेत्तु यः । सोऽन्ते गच्छति वैकुण्ठं रामचन्द्रप्रसादतः ।।५५।।
इति श्रीशतकोटिरामचरितान्तर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पूर्णकांडे वैकुण्ठारोहणं नाम षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥

सप्तमः सर्गः

(सूर्यवंशवर्णन)

श्रीरामदास उवाच

एवं त्वया यथा पृष्टं स्वर्गारोहणमङ्गलम् । श्रीरामस्य मया चैतत्तवाग्रेऽद्य निवेदितम् ॥ १ ॥
किमन्यच्छ्रोतुमिच्छाऽस्ति तां त्वं वद वदाम्यहम् । एवं गुरोर्वचः श्रुत्वा विष्णुदासस्तमब्रवीत् ॥ २ ॥

विष्णुदास उवाच

कुशांतः सूर्यवंशोऽत्र गुरो पूर्वं त्वयेरितः । कुशाग्र श्रोतुमिच्छामि सूर्यवंशं सविस्तरम् ॥ ३ ॥

श्रीरामदास उवाच

विष्णोरारभ्य कथिता एकषष्टितमाः पुरा । एकषष्टिनृपा ह्यग्रे तान्वदामि सविस्तरम् ॥ ४ ॥
श्रीरामस्य कुशः पुत्रोऽतिथिः पुत्रः कुशस्य सः । निषधस्त्वतिथेः पुत्रो निषधस्यात्मजो नभः ॥ ५ ॥
नभाज्जातो पुंडरीकः क्षेमधन्वा तु तत्सुतः । देवानीकस्तत्सुतोऽभूद्देवानीकसुतो महान् ॥ ६ ॥
अहीनः प्राच्यते सद्भिः पार्यात्रस्तत्सुतः स्मृतः । पार्यात्रस्य बलः पुत्रः स्थलः पुत्रो बलस्य हि ॥ ७ ॥
स्थलस्य वज्रनाभस्तु खगणस्तस्य कीर्त्यते । खगणाद्विधृतिर्जातो विधृतेस्तनयः शुभः ॥ ८ ॥
जातो हिरण्यनाभस्तु तस्य पुष्पः प्रकीर्त्यते । पुष्पात्स ध्रुवसंधिस्तु ध्रुवसंधेः सुदर्शनः ॥ ९ ॥
सुदर्शनादग्निवर्णस्तस्माच्छीघ्रः प्रकीर्त्यते । शीघ्राज्जाता मरुः पुत्रा मनोश्च प्रश्रुतः सुतः ।।१०।।
प्रश्रुतस्य च संधिर्हि संधेः पुत्रस्तु मर्षणः । मर्षणस्य महस्वांश्च विश्ववाहश्च तत्सुतः ।।११।।

सब बातें बतलायीं और समझा दिया कि आप किसी प्रकारका शोक न करें ॥ ५२ ॥ कुशने भी अजमीढ़का भरपूर आदर-सत्कार किया । कई दिनों अयोध्यामें रहकर वे हस्तिनापुरीको चले गये । कुछ दिनों बाद कुशको कुमुद्वती नामकी एक दूसरी भार्या प्राप्त हुई । उससे कुशके बहुतसे पुत्र हुए ॥ ५३ ॥ इस प्रकार भगवान्‌के स्वर्गारोहण-वार्ताको जो लोग भक्तिपूर्वक सुनते हैं, वे भी स्वर्गलोक प्राप्त करते हैं ॥ ५४ ॥ जो प्राणी वैकुण्ठारोहणके इस सर्गका नित्य पाठ करता है, वह रामचन्द्रजीकी कृपासे अन्तमें वैकुण्ठ धामको प्राप्त करता है ॥ ५५ ॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितान्तर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पं० रामतेजपाण्डेयकृत'ज्योत्स्ना'भाषाटीकासहिते पूर्णकाण्डे षष्ठः सर्गः ॥ ६ ॥

श्रीरामदासने कहा—हे शिष्य ! तुमने जिस तरह हमसे भगवान्‌का स्वर्गारोहण-वृत्तांत पूछा, वह मैंने कह सुनाया । अब तुम क्या सुनना चाहते हो सो कहो । वह भी मैं बतलाऊँगा । इस तरह गुरुकी बात सुनकर विष्णुदास कहने लगे—हे गुरुवर ! आपने कुशतक सूर्यवंशका वर्णन किया, सो मैंने सुना । अब यह जानना चाहता हूँ कि कुशके आगे कौन-कौन राजे हुए । यह हमें विस्तारपूर्वक बतलाइए ॥ १–३ ॥ श्रीरामदास बोले—हे शिष्य ! विष्णुभगवान्‌से लेकर एकसठ राजाओंका चरित्र मैंने पहले सुनाया है । उनके बाद जो एकसठ राजे और हुए हैं, उन्हें मैं विस्तारपूर्वक बतलाता हूं ॥ ४ ॥ श्रीरामचन्द्रजीके पुत्र कुश, कुशके पुत्र अतिथि, अतिथिके निषध, निषधके नभ, ॥ ५ ॥ नभके पुण्डरीक, पुण्डरीकके क्षेमधन्वा, क्षेमधन्वाके देवानीक, देवानीकके अहीन, अहीनके पार्यात्र, पार्यात्रके बल, बलके पुत्र स्थल ॥ ६ ॥ ७ ॥ स्थलके वज्रनाभ, वज्रनाभके खगण, खगणके पुत्र विधृति, विधृतिके हिरण्यनाभ, हिरण्यनाभके पुष्प, पुष्पके ध्रुवसंधि, ध्रुवसंधिके सुदर्शन, ॥ ८ ॥ ९ ॥ सुदर्शनके अग्निवर्ण, अग्निवर्णके पुत्र शीघ्र, शीघ्रके मरु, मरुके पुत्र प्रश्रुत,

CC0. In Public Domain. Kurukshetra Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तस्मात्प्रसेनजित्प्रोक्तस्तस्माज्जातस्तु तक्षकः । बृहद्बलस्तक्षकाच्च तस्माज्जातो बृहद्रणः ॥१२॥
तस्मादुरुक्रियः प्रोक्तो वत्सवृद्धस्तु तत्सुतः । वत्सवृद्धस्य व्योमस्तु व्योमाद्भानुः प्रकीर्त्यते ॥१३॥
भानोः पुत्रो दिवाकस्तु सहदेवश्च तत्सुतः । सहदेवात्मजो वीरो वीरस्य तनयः शुभः ॥१४॥
बृहदश्व इति ख्यातस्तस्य पुत्रस्तु भानुमान् । भानुमतः प्रतीकाशः सुप्रतीकश्च तत्सुतः ॥१५॥
सुप्रतीकस्य पुत्रोऽभून्मरुदेव इति स्मृतः । मरुदेवात्सुनक्षत्रः सुनक्षत्राच्च पुष्करः ॥१६॥
पुष्करस्यांतरिक्षश्च सुतपा अंतरिक्षजः । सुतपातनयो मित्रो मित्रजित्तत्सुतः शुभः ॥१७॥
बृहद्राज इति ख्यातस्तस्य बर्हिः स्मृतो बुधैः । बर्हेः कृतंजयः पुत्रस्तस्य पुत्रो रणंजयः ॥१८॥
रणजयात्संजयस्तु संजयाच्छाक्य उच्यते । शाक्यपुत्रस्तु शुद्धोदः शुद्धोदाल्लांगलः स्मृतः ॥१९॥
प्रसेनजिल्लांगलस्य तत्पुत्रः क्षुद्रकः स्मृतः । क्षुद्रकाद्रणकः प्रोक्तो रणकात्सुरथः स्मृतः ॥२०॥
सुरथात्तनयो जातस्तनयस्य सुतो महान् । नाम्ना सुमित्रः परमः पूर्णो वंशस्ततः परम् ॥२१॥
पूर्वमुक्तो मरुरिति नाम्ना यो नृपतिर्मया । कलापग्राममाश्रित्य हिमाद्रौ बद्रिकाश्रमे ॥२२॥
स तपश्चिरकालं हि करोत्यत्र समाधिमान् । कृते युगे पुनः प्राप्ते सूर्यवंशं करिष्यति ॥२३॥
एवं मया समाख्यातः सूर्यवंशो मनोरमः । विष्णोरारभ्य कथिता एकषष्टितमा मया ॥२४॥
एकषष्टिनृपाश्चाग्रे मध्ये रामो विराजते । त्रयोविंशोत्तरशताश्चैवं विष्णोर्मयोदिताः ॥२५॥
एवं यथा त्वया पृष्टं शिष्य वंशानुकीर्तनम् । तन्मया कथितं सर्वं श्रवणात्पुण्यवर्द्धनम् ॥२६॥

विष्णुदास उवाच

गुरो मया श्रुतं कस्यचिन्मुनेर्मुखतः पुरा । रामायणं सविस्तारं तच्चेदं नैव भासते ॥२७॥
तस्मादत्रांतरं प्रोक्तं त्वया सर्वत्र मां गुरो । संदेहोऽनेन मे जातस्तं त्वं छेत्तुमिहार्हसि ॥२८॥

श्रीरामदास उवाच

पुनः पुनः कल्पभेदाज्जाताः श्रीराघवस्य च । अवताराः कोटिशोऽत्र तेषु भेदः क्वचित्क्वचित् ॥२९॥

॥ १० ॥ प्रश्रुतके संधि, संधिके पुत्र मर्षण, मर्षणके महस्वान, महस्वान्के विश्ववाह ॥ ११ ॥ विश्ववाहके प्रसेनजित्, प्रसेनजित् केतक्षक, तक्षकके बृहद्रण, बृहद्रणके उरुक्रिय, उरुक्रियके वत्सवृद्ध, वत्सवृद्धके व्योम, व्योमके भानु ॥ १२ ॥ १३ ॥ भानुके पुत्र दिवाक, दिवाकके सहदेव, सहदेवके वीर, वीरके पुत्र बृहदश्व, बृहदश्वके भानुमान्, भानुमान्के प्रतीकाश, प्रतीकाशके पुत्र सुप्रतीक ॥ १४ ॥ १५ ॥ सुप्रतीकके मरुदेव, मरुदेवके सुनक्षत्र, सुनक्षत्रके पुष्कर, ॥ १६ ॥ पुष्करके अन्तरिक्ष, अन्तरिक्षके सुतपा, सुतपाके पुत्र मित्र, मित्रके मित्रजित् ॥ १७ ॥ मित्रजित्के बृहद्राज, बृहद्राजके बर्हि, बर्हिके कृतंजय, कृतंजयके पुत्र रणंजय, ॥ १८ ॥ रणंजयके संजय, संजयके शाक्य, शाक्यके शुद्धोद, शुद्धोदके लाङ्गल ॥ १९ ॥ लांगलके पुत्र प्रसेनजित् प्रसेनजित्के क्षुद्रक, क्षुद्रकके रणक, रणकके सुरथ ॥ २० ॥ सुरथके तनय और तनयके पुत्र सुमित्र हुए। बस, यहीं ही तक चलकर सूर्यवंश पूर्ण हो जाता है ॥ २१ ॥ पूर्वमें हम मरु नामक राजाका नाम गिना आये हैं। वे हिमालयपर बद्रिकाआश्रममें तप कर रहे हैं। सत्ययुग आनेपर वे फिर सूर्यवंशका विस्तार करेंगे ॥ २२ ॥ २३ ॥ इस तरह मैंने विष्णुभगवान्से लेकर एकसठ राजाओं तक सूर्यवंशका वर्णन किया ॥ २४ ॥ एकसठ राजाओंके मध्यमें भगवान् रामचन्द्रजी विराजमान हैं और उनके आगेवाले एकसठको लेकर कुल एक सौ तेईस राजे हुए ॥२५ ॥ इस तरह हे शिष्य ! मैंने तुम्हें सूर्यवंशका विवरण कह सुनाया। इसके सुननेसे पुण्यकी वृद्धि होती है ॥ २६ ॥ विष्णुदासने कहा–हे गुरो ! मैंने किसी मुनिसे सुना था कि रामायण इससे भी विस्तृत है, किन्तु पूरी रामायण इस संसारमें विद्यमान नहीं है। फिर आपने जो रामायण सुनायी है, वह तो सब रामायणोंसे भिन्न है। यह एक प्रकारका सन्देह मेरे हृदयमें उत्पन्न होता है। कृपा करके आप इसका निवारण करिए ॥ २७ ॥ २८ ॥ श्रीरामदासने कहा कि कल्पभेदसे रामके कितने ही अवतार हुए हैं और

CC0. In Public Domain. Vinikam Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृतोऽस्ति राघवेणैव न सर्वे सदृशाः कृताः । रामायणान्यपि तथा पुरा वाल्मीकिनैव हि ॥३०॥
अनेकान्यंतरेणैव कीर्तितानि सविस्तरात् । शतकोटिमिता तेषां सर्वेषां गणना कृता ॥३१॥
तस्मात्त्वया न संदेहः कार्यः शिष्यात्र बुद्धिमन् । यन्मया कथितं ते हि तत्तथ्यं विद्धि नान्यथा ॥३२॥
भागाद्भरतखंडांतर्गताद्रामायणात्पुरा । नारदादिपुराणानि व्यासेनात्र कृतानि हि ॥३३॥
तेषु मत्कथितं चेदं सम्यग्विस्तारितं द्विज । तव जातो यथा शिष्य संदेहोऽत्र कथांतरात् ॥३४॥
भविष्यति तथाऽन्येषामग्रे यदि कदा क्वचित । नारदादिपुराणेषु दर्शनीयं हि तैर्जनैः ॥३५॥
दृष्ट्वा मदुक्तं सर्वेषु पुराणादिषु पंडितैः । त्यक्तव्याः स्वीयसंदेहाः सत्यं ज्ञेयं मयेरितम् ॥३६॥

इति शतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानंदरामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये पूर्णकाण्डे सूर्यवंशवर्णनं नाम सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥

अष्टमः सर्गः

(आनन्दरामायणकी सर्गानुक्रमणिका)

श्रीविष्णुदास उवाच

गुरोऽधुना वदस्व त्वं यन्मया पृच्छ्यते तव । अनुक्रमणिकासर्गं तथा पाठादिभिः फलम् ॥ १ ॥
कांडसंख्यां सर्गसंख्यां श्लोकसंख्यां सविस्तराम् । उद्यापनं ग्रन्थदानफलं वै शकुनेक्षणम् ॥ २ ॥
अनुष्ठानविधानं च श्रोतुं कालविनिर्णयम् । कांडानां च पृथक् संख्यां सर्वं त्वं वक्तुमर्हसि ॥ ३ ॥

श्रीरामदास उवाच

अनुक्रमणिकासर्गः प्रोच्यतेऽयं मयाऽधुना । यस्याः संश्रवणात्प्रोक्तं सर्वग्रंथफलं शुभम् ॥ ४ ॥
सर्गेऽत्र प्रथमे प्रोक्तं कौसल्यायाः स्वयंवरम् । रामादीनां सुजन्मानि द्वितीये कीर्तितानि हि ॥ ५ ॥
सीतास्वयंवरं प्रोक्तं तृतीये मिथिलापुरि । वृंदाशापादिकथनं चतुर्थे मुद्गलेन हि ॥ ६ ॥

उन अवतारोंमें कुछ न कुछ भेद पड़ ही गया है । यद्यपि रामकी लीलायें प्रत्येक रामायणमें वर्णित हैं, किन्तु उन सबमें कुछ न कुछ भेद है । स्वयं वाल्मीकिजीने जो शतकोटि श्लोकात्मक रामायण बनायी है, उसमें भी अन्तर विद्यमान हैं । इस कारण हे शिष्य ! तुम किसी प्रकारका सन्देह न करके मैंने जोकुछ कहा है, उसे सच मानो ॥ २९-३२ ॥ भरतखण्डके अन्तर्गत विद्यमान रामायणके भागके ही आधारपर व्यासजीने नारदादि विविध पुराणोंकी रचना की है । उसी खण्डके सहारे मैंने भी इस सविस्तर आनन्द-रामायणका वर्णन किया है । जिस तरह आज तुम्हें मेरी यह कथा सुनकर सन्देह उत्पन्न हुआ है, उसी तरह यदि आगे चलकर और किसी श्रोता-वक्ताको सन्देह हो तो उसे चाहिए कि उन नारद आदि पुराणोंको देखकर सन्देह निवृत्त कर ले ॥ ३३-३५ ॥ पण्डितोंको भी उचित है कि सब पुराणोंको देखें और उनमें मेरी कही बातें देखकर अपना सन्देह मिटा लें और समझ ले कि मैं जो कुछ कहता हूँ, वे बातें सच हैं या नहीं ॥३६॥
इति श्रीशतकोटिरामचरितान्तर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पं० रामतेजपाण्डेयकृत'ज्योत्स्ना'भाषा-टीकासहिते पूर्णकाण्डे सप्तमः सर्गः ॥ ७ ॥

विष्णुदासने कहा—हे गुरो ! अब आप हमें इस रामायणकी सर्गानुक्रमणिका तथा इसके पाठका फल बताइए ॥ १ ॥ साथ ही इसकी काण्डसंख्या, सर्गसंख्या और श्लोकसंख्या आदि भी विस्तारपूर्वक कहिए । इसका उद्यापन, ग्रन्थके दानका फल, शकुनदर्शनविधान, अनुष्ठानविधि, इसके श्रवणका समय और काण्डकी संख्या आदि भी कहिए ॥ २ ॥ ३ ॥ श्रीरामदासने कहा—अब मैं तुम्हें इस रामायणकी सर्गानुक्रमणिका बताता हूँ । जिसके श्रवणमात्रसे समस्त रामायणके श्रवणका फल मिल जाता है ॥ ४ ॥ सारकाण्डके पहले सर्गमें कौसल्याका स्वयंवर, दूसरेमें राम आदिका जन्म, तीसरे सर्गमें जनकपुरमें सीताका स्वयंवर, चौथे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दशरथपूर्वजन्म कैकेय्याश्चापि पंचमे । वनप्रयाणं रामस्य प्रोक्तं षष्ठे सविस्तरम् ॥ ७ ॥
विराधखगमारीचवधादिसप्तमेऽकथि । किष्किंधायां वालिघातो राघवेणाष्टमे कृतः ॥ ८ ॥
नवमे जानकीशुद्धिर्लंका दग्धाहनूमता । दशमे सेतुमाहात्म्यं काशिविश्वेश्वरागमः ॥ ९ ॥
एकादशे रावणादिवधाः प्रोक्ताश्च राघवात् । सीतया स्वपुरी गत्वा द्वादशेऽभून्नृपो विभुः ॥१०॥
त्रयोदशे राघवस्य विक्रमश्च हनूमतः । समाप्तं सारकांडं हि यात्राकांडमुदीर्यते ॥११॥
वाल्मीकेः प्रथमे सर्गे श्लोकोत्पत्तिः प्रकीर्तिता । रामायणविभागोऽत्र द्वितीये समुदाहृतः ॥१२॥
तृतीये सीतया रामो यात्रार्थं प्रार्थितो मुदा । चतुर्थे रामचंद्रस्य प्रस्थानं जाह्नवीं प्रति ।१३॥
पंचमे मुनिवाक्येन यात्रां गंतुं विनिश्चयः । षष्ठे प्रोक्ता पूर्वदेशतीर्थयात्रा सविस्तरा ॥१४॥
प्रोक्ता दक्षिणतीर्थानां यात्रा रामस्य सप्तमे । तीर्थाटनं पश्चिमायामष्टमे राघवस्य च ॥१५॥
यात्रोत्तरप्रदेशस्य रामस्य नवमेऽकथि । यात्राकाण्डंसमाप्तं तु यागकाण्डमुदीर्यते ॥१६॥
सर्गेऽत्र प्रथमे प्राह यज्ञोपकरणं गुरुः । द्वितीये रामचन्द्रस्य यागारंभोऽत्र वर्णितः ॥१७॥
पृथ्वीप्रदक्षिणा प्रोक्ता तृतीयेऽध्वरवाजिनः । कुम्भोदरस्य रामस्य संवादोऽत्र चतुर्थके ॥१८॥
पञ्चमे रामनाम्नां वै ह्यष्टोत्तरशतं शुभम् । षष्ठेऽह्निकं हि सर्वेषां वाजिमेधे प्रकीर्तितम् ॥१९॥
छत्रजारोपविधानं च सप्तमे समुदाहृतम् । अष्टमेऽवभृथस्नानं राघवस्यात्र वर्णितम् ॥२०॥
नवमे वाजिमेधस्य समाप्तिः कीर्तिताऽत्र सा । यागकाण्डं समाप्तं हि विलासाख्यमुदीर्यते ॥२१॥
प्रथमे रघुवीरस्य स्तवराजोऽत्र कीर्तितः । द्वितीये रतिशालाया जानक्याश्चापि वर्णनम् ॥२२॥
तृतीये राघवेणोक्तं देहरामायणं स्त्रियै । दिनचर्याभूषणानि जानक्याश्च चतुर्थके ॥२३॥
जलयंत्रगता क्रीडा पञ्चमे शेषमाह्निकम् । द्विजस्य पत्न्यै प्रासादे षष्ठेऽलंकारमण्डनम् ॥२४॥

में मुद्गल ऋषिका मिलना तथा वृन्दाशाप आदि वर्णित हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥ पाँचवें सर्गमें दशरथ और कैकेयीके जन्मका वृत्तांत है। छठें सर्गमें रामका वनगमन और सातवेंमें विराध-जटायु-मारीच आदिका वध तथा आठवें सर्गमें किष्किन्धा पर्वतपर बालिवध वर्णित है ॥ ७ ॥ ८ ॥ नवें सर्गमें सीताकी खोज और लङ्कादहन, दसवें सर्गमें सेतुमाहात्म्य तथा काशी-विश्वनाथके आगमनका वर्णन है ॥ ९ ॥ एकादश सर्गमें रामके द्वारा रावण आदिका वध तथा बारहवें सर्गमें सीताके साथ रामके अयोध्या लौटने और राज्याभिषेकका वर्णन है ॥ १० ॥ तेरहवें सर्गमें राम और हनुमान्‌जीके पराक्रमका वर्णन है। बस, यहाँ ही सारकाण्ड समाप्त हो जाता है ॥ ११ ॥ अब यात्राकाण्ड कहते हैं। इसके पहले सर्गमें वालमीकि द्वारा श्लोककी उत्पत्ति, दूसरे सर्गमें रामायणका विभाजन वर्णित है ॥ १२ ॥ तीसरे सर्गमें सीता द्वारा यात्राकी प्रार्थना और चतुर्थ सर्गमें जाह्नवीकी ओर रामकी यात्राका वर्णन है ॥ १३ ॥ पाँचवें सर्गमें कुम्भोदर मुनिकी सलाहसे यात्राका सविस्तर वर्णन है। छठें सर्गमें पूर्व देशकी यात्राका वर्णन है ॥ १४ ॥ सातवें सर्गमें दक्षिण भारतके तीर्थोंकी यात्रा और आठवें सर्गमें पश्चिमी प्रदेशके सब तीर्थोंकी यात्राका वर्णन है ॥ १५ ॥ नवें सर्गमें उत्तर प्रदेशके तीर्थोंकी यात्राका वर्णन है। बस, यात्राकाण्ड यहीं समाप्त हो जाता है। अब यागकाण्डके विषय बताते हैं ॥ १६ ॥ इसके पहले सर्गमें यज्ञोंकी सामग्रियोंका सविस्तर वर्णन है। दूसरे सर्गमें रामचन्द्रजीके द्वारा यागारम्भ, तीसरे सर्गमें यज्ञीय अश्वकी पृथ्वीप्रदक्षिणा, चौथे सर्गमें राम और कुम्भोदर मुनिका संवाद है ॥ १७ ॥ १८ ॥ पाँचवें सर्गमें रामका अष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र है। छठें सर्गमें अश्वमेध यज्ञमें की जानेवाली रामकी दिनचर्याका वर्णन है ॥ १९ ॥ सातवें सर्गमें छत्रजारोपणविधान, आठवेंमें अवभृथस्नान और नवें सर्गमें अश्वमेध यज्ञकी समाप्ति वर्णित है ॥ २० ॥ बस, यहाँ यागकाण्ड समाप्त हो जाता है। अब विलासकाण्ड प्रारम्भ होता है ॥ २१ ॥ इसके प्रथम सर्गमें रामस्तवराज और दूसरे सर्गमें जानकीजीकी रतिशालाका वर्णन है ॥ २२ ॥ तीसरे सर्गमें सीताको रामने देहरामायण सुनायी है। चौथे सर्गमें सीताकी दिनचर्याका वर्णन है ॥ २३ ॥ पाँचवें सर्गमें जलयंत्रकी क्रीडायें और आह्निक कृत्यका विवेचन है। छठें सर्गमें ब्राह्मणपत्नीके लिए सीता द्वारा अलङ्कार-दानका वर्णन है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मूर्तीनां सप्तमे दानं देवस्त्रीणां वरास्तथा । गुणवत्या पिंगलाया वरदानमथाष्टमे ॥२५॥
कुरुक्षेत्रस्य यात्रायां नवमे जानकीजयः । विलासाख्यं समाप्तं हि जन्मकांडमुदीर्यते ॥२६॥
आरामे दोहदक्रीडा सीतायाः प्रथमेऽकथि । द्वितीये विविधाः क्रीडाः सीमंतोन्नयनोत्सवः ॥२७॥
रजकस्योदितं श्रुत्वा सीतात्यागस्तृतीयके । जन्मकर्म चतुर्थेऽत्र कुशस्याथ लवस्य च ॥२८॥
सर्गेऽत्र पञ्चमे प्रोक्ता रामरक्षा सुखावहा । षष्ठे लवस्य कमलहरणे जय ईरितः ॥२९॥
युद्धादिकौतुकं प्रोक्तं पुत्रयोः सप्तमे विभोः । सीतादिव्यं च तल्लाभोऽष्टमे प्रोक्तोऽत्र मंडपे ॥३०॥
जन्मोपनयनादीनि बालानां नवमेऽकथि । जन्मकाण्डं समाप्तं हि विवाहाख्यमुदीर्यते ॥३१॥
स्वयंवरार्थं गमनं रामस्य प्रथमेऽकथि । स्वयंवरं चंपिकाया द्वितीये समुदाहृतम् ॥३२॥
स्वयंवरं सुमत्याश्च तृतीये परिकीर्तितम् । कुशस्याथ लवस्यापि विवाहौ द्वौ चतुर्थके ॥३३॥
गन्धर्वनागकन्यानां मोचनं पञ्चमेऽकथि । षष्ठे तासां विवाहानां निश्चयः समुदाहृतः ॥३४॥
विवाहा द्वादशे प्रोक्ताः सर्वासां सप्तमेऽत्र हि । अष्टमे यूपकेतोश्च वर्णितोऽत्र पराक्रमः ॥३५॥
प्रोक्तो मदनसुन्दर्या विवाहो नवमे महान् । पूर्णं विवाहकाण्डं च राज्यकाण्डमुदीर्यते ॥३६॥
रामनामसहस्रं च सर्गे प्राथमिकेऽकथि । द्वितीयेऽत्र समानीतौ रामेण सुरपादपौ ॥३७॥
रामकृष्णोपासकयोः संवादश्च तृतीयके । शतस्त्रीणां च निद्रायां वरदानं तथा पुनः ॥३८॥
रामविश्लेषविरहः सीतायाः पंचमेऽकथि । मूलकासुरघातश्च षष्ठे राज्यानि वै पृथक् ॥३९॥
जयो भरतखंडस्य रामेण सप्तमे कृतः । जम्बूद्वीपजयः प्रोक्तोऽष्टमे रामस्य विस्तरात् ॥४०॥
षड्द्वीपानां जयः प्रोक्तो नवमे राघवस्य च । यतिशूद्रगृध्रशिक्षा रामेण दशमे कृता ॥४१॥
चतुःस्त्रीणां वरदानं रामेणैकादशे कृतम् । स्त्रीषोडशसहस्राणां द्वादशेऽत्र वरार्पणम् ॥४२॥
अश्वत्थहसितं हास्यमुक्तेराज्ञा त्रयोदशे । चतुर्दशे वाल्मीकिना स्वजन्मात्रयमीरितम् ॥४३॥

॥ २४ ॥ सप्तम सर्गमें मूर्तियोंका दान और देवस्त्रियोंके वरदानका विधान है। अष्टम सर्गमें गुणवती और पिंगलाके वरदानका वर्णन है ॥ २५ ॥ नवम सर्गमें कुरुक्षेत्रकी यात्रामें जानकीविजयका वर्णन है । बस, यहाँ ही विलासकांड समाप्त हो जाता है ॥ २६ ॥ अब यहाँसे जन्मकांडका वर्णन करते हैं—पहले सर्गमें दोहदक्रीडा तथा दूसरे सर्गमें विविध प्रकारकी क्रीड़ाओं और सीमन्तोन्नयन संस्कारका विधान है ॥ २७ ॥ तृतीय सर्गमें सीतात्याग तथा चौथे सर्गमें कुश-लवका जन्म-कर्म वर्णित है । पाँचवें सर्गमें रामरक्षास्तोत्रका विधान है। छठें सर्गमें लवका कमलहरण और उनकी विजय वर्णित है ॥ २८ ॥ २९ ॥ सप्तम सर्गमें युद्धादिके कौतुकका विधान है और अष्टम सर्गमें सीताकी शपथका वर्णन है ॥ ३० ॥ नवम सर्गमें बालकोंके जन्म और उपनयनका विधान है । बस, जन्मकाण्ड यहाँ ही समाप्त हो जाता है। अब यहाँसे विवाहकाण्ड प्रारम्भ होता है ॥ ३१ ॥ इसके प्रथम सर्गमें रामके गमनकी वार्ता है । दूसरे सर्गमें चम्पिकाके विवाहका वृत्तान्त है । तीसरे सर्गमें सुमतिके विवाहका वर्णन है। चौथे सर्गमें कुश और लवके विवाहकी बातें हैं ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ पञ्चम सर्गमें गन्धर्वों तथा नागोंकी कन्याओंके छुड़ानेका हाल है । षष्ठ सर्गमें इन लोगोंके विवाहकी बात पक्की हो जाती है ॥ ३४ ॥ सप्तम सर्गमें सबके विवाहका वर्णन तथा अष्टम सर्गमें यूपकेतुके पराक्रमका वर्णन है ॥ ३५ ॥ नवम सर्गमें मदनसुन्दरीके विवाहका वृत्तान्त है। बस, विवाहकांड यहाँ ही समाप्त हो जाता है। अब राज्यकांड चलता है ॥ ३६ ॥ राज्यकांडके प्रथमसर्गमें रामसहस्रनाम तथा दूसरे सर्गमें रामके द्वारा स्वर्गसे कल्पवृक्ष और पारिजात नामक वृक्षोंके लानेकी बातें हैं ॥ ३७ ॥ तीसरे सर्गमें रामकृष्णके उपासकोंका सम्वाद, चौथे सर्गमें निद्राके लिए वरदान, पाँचवें सर्गमें सीतारामका वियोग और मूलकासुरका वध, छठें सर्गमें राज्यकार्यका वर्णन है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ सातवें सर्गमें रामके द्वारा भरतखण्डकी विजय, आठवें सर्गमें जम्बूद्वीपविजय, नवें सर्गमें रामके अन्य छः द्वीपोंको जीतनेका वृत्तांत है । दसवें सर्गमें संन्यासी, शूद्र तथा गृध्रकी शिक्षाका वर्णन है ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ग्यारहवें सर्गमें रामके

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पंचदशे रामराज्यवर्णनं विस्तरात्कृतम् । वर्णिता राजनीतिः श्रीराघवेणात्र षोडशे ॥४४॥
सप्तदशेऽत्र कथितं कुशकन्यास्वयंवरम् । अष्टादशे रामनाथपुरं दत्तं द्विजन्मनाम् ॥४५॥
एकोनविंशे रामस्य दिनचर्येरिता शुभा । राज्ञां विंशेऽवतारे तु श्रेष्ठः प्रोक्तस्त्वयं महान् ॥४६॥
एकविंशे राघवेण दास्यै दत्तो वरो मुदा । सीतया तुलसीपत्रं द्वाविंशे संधितं शुभम् ॥४७॥
त्रयोविंशे स्मृताऽऽनन्दरामायणफलश्रुतिः । यमशिक्षा चतुर्विंशे धर्मशिक्षा च भूतले ॥४८॥
राज्यकांडं समाप्तं हि मनोहरमुदीर्यते । सर्गेऽत्र प्रथमे प्रोक्तं लघुरामायणं शुभम् ॥४९॥
नागराणां च मातॄणामुपदेशं द्वितीयके । रामपूजोपासनादिविस्तारश्च तृतीयके ॥५०॥
रामतोभद्रविस्तारश्चतुर्थे समुदीरितः । रामलिंगतोभद्राणां भेदाः प्रोक्ताश्च पंचमे ॥५१॥
नवमीव्रतविस्तारः षष्ठे प्रोक्ता च तत्कथा । श्रीरामनाम्नां लक्षस्योद्यापनादीनि सप्तमे ॥५२॥
वेदादीनां हि सर्वेषामष्टमे फलमीरितम् । सार्द्धमासद्वयी पूजा कथिता नवमे विभोः ॥५३॥
दशमे चैत्रमासस्य महिमा समुदीरितः । एकादशे मधुस्नानात्सर्वेषां गतिरीरिता ॥५४॥
अद्वैतं दर्शितं राज्ञा द्वादशे स्त्रीकदम्बकम् । वायुपुत्रस्य रामस्य कवचे द्वे त्रयोदशे ॥५५॥
सीतायाः कवचादीनि प्रोक्तान्यत्र चतुर्दशे । पंचदशे कवचानि तद्बन्धूनां स्मृतानि हि ॥५६॥
व्रतं हनुमतः प्रोक्तं पताकाख्यं हि षोडशे । प्रोक्तं सप्तदशे साररामायणमनुत्तमम् ॥५७॥
अष्टादशे शरसेतोः खंडनं च हनूमता । जातं मनोहरं काण्डं पूर्णकाण्डमथोच्यते ॥५८॥
वाल्मीकिना सोमवंशविस्तारः प्रथमेऽकथि । रामचन्द्रस्य प्रस्थानं द्वितीये हस्तिनापुरम् ॥५९॥
सूर्यसोमवंशजयोर्युद्धं प्रोक्तं तृतीयके । सोमसूर्यवंशजयोर्मैत्रिकी च चतुर्थके ॥६०॥
कुशादीनां राघवेण पञ्चमेऽत्र विसर्जनम् । वैकुंठारोहणं षष्ठे गङ्गायां राघवस्य च ॥६१॥
सप्तमे सूर्यवंशीयनृपाणां वर्णनं कृतम् । अनुक्रमणिकासर्गः प्रोक्तोऽयमष्टमो महान् ॥६२॥

द्वारा चार स्त्रियोंकी वरदानप्राप्ति, बारहवें सर्गमें सोलह स्त्रियोंके वरदान पानेका वृत्तांत, तेरहवें सर्गमें पीपलके वृक्षकी हँसी, चौदहवेंमें वालमीकिके तीन जन्मका वृत्तान्त है ॥४२॥४३॥ पन्द्रहवें सर्गमे रामके राज्यका सविस्तर वर्णन और सोलहवें सर्गमें रामकी कही राजनीतिकी चर्चा है ॥ ४४ ॥ सत्रहवें सर्गमें कुशकी कन्याका स्वयम्वर, अठारहवें सर्गमें ब्राह्मणोंके लिए रामनाथपुरके राज्यका दान ॥४५॥ उन्नीसवें सर्गमें रामकी दिनचर्या और बीसवें सर्गमें सब अवतारोंमें रामावतारकी श्रेष्ठता कही गयी है ॥ ४६ ॥ इक्कीसवें सर्गमें दासीके लिये रामका वरदान, बाईसवें सर्गमें सीता द्वारा टूटे तुलसीपत्रको पुनः जोड़नेकी कथा है । तेईसवें सर्गमें आनन्दरामायणका श्रवणफल, चौबीसवें सर्गमें यमको शिक्षा एवं धर्मशिक्षाका वर्णन है ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ बस, राज्यकांड यहाँ ही समाप्त हो जाता है । अब मनोहरकांड प्रारम्भ होता है । इसके पहले सर्गमें लघुरामायण, दूसरे सर्गमें नगरवासियों तथा माताओंके लिए उपदेशदान, तीसरे सर्गमें रामपूजा और उपासनाका सविस्तर वर्णन है ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ चौथे सर्गमें रामतोभद्रका विस्तार, पाँचवें सर्गमें रामलिंगतोभद्रका विस्तार, छठें सर्गमें नवमीव्रतका विस्तार, सातवें सर्गमें लक्ष रामनामजपका उद्यापन है ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ आठवें सर्गमें वेदादिके सुननेका फल और नवें सर्गमें ढाई महीने तक रामके पूजनका विधान है ॥ ५३ ॥ दसवें सर्गमें चैत्रमासमें पूजन करनेकी महिमा, ग्यारहवें सर्गमें चैत्रस्नानसे सबको सद्गति पानेका उपाय और बारहवें सर्गमें रामने बहुतसो स्त्रियोंको अद्वैत पदकी बातें बतलायी हैं । तेरहवें सर्गमें राम तथा हनुमान्जीका कवच और चौदहवें सर्गमें सीताके कवच आदिका वर्णन है । पन्द्रहवें सर्गमें रामके भ्राताओंके कवच आदिका वर्णन है ॥ ५४-५६ ॥ सोलहवें सर्गमें हनुमान्जीका पताकारोपणव्रत है । सत्रहवें सर्गमें साररामायण कहा गया है । अठारहवें सर्गमें हनुमान्जीके द्वारा अर्जुनके बनाये शरसेतुका खंडन वर्णित है । बस, मनोहरकांड यहाँ ही समाप्त हो जाता है । अब पूर्णकांडके विषय गिनाते हैं ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ पूर्णकांडके प्रथम सर्गमें सोमवंशी राजाओंकी वंशावली, दूसरे सर्गमें रामचन्द्रजी-की हस्तिनापुरके लिए यात्रा ॥ ५९ ॥ तोसरे सर्गमें सूर्य और सोमवंशी राजाओंका युद्ध और चौथे सर्गमें सोम-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ग्रंथश्रुतिफलादीनि नवमे कीर्तितानि हि । नवसर्गं पूर्णकाण्डं सम्पूर्णं नवमं त्विदम् ॥६३॥
अनुक्रमणिका चेयं मया शिष्य प्रवर्णिता । अस्याः श्रवणमात्रेण रामायणश्रुतेः फलम् ॥६४॥
रामायणपुस्तकस्य नित्यं कार्यं प्रपूजनम् । विशेषं पूजनस्यापि शृणु शिष्य वदामि ते ॥६५॥
सारकांडं विभोः स्थाने लक्ष्मणीये द्वितीयकम् । नवायतनरीत्येत्थं शेषाणि स्थापयेत् क्रमात् ॥६६॥
सप्त कांडानि विधिवत्तेषां पूजनमाचरेत् । अथवा राज्यकांडस्य पूर्वार्धं रामसत्स्थले ॥६७॥
राज्यकांडस्योत्तरार्धं सीतास्थाने निवेशयेत् । लक्ष्मणीये सारकांडं शेषाण्यग्रे क्रमेण तु ॥६८॥
एवं संस्थाप्य कांडानि तेषां पूजनमाचरेत् । नवायतनपूजायाः फलमेतेन कीर्तितम् ॥६९॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पूर्णकाण्डे
अनुक्रमणिकावर्णनं नाम अष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

नवमः सर्गः

(ग्रन्थकी फलश्रुति)

श्रीरामचन्द्र उवाच

सारं यात्रा च यागाख्यं विलासाख्यं तु जन्मकम् । विवाहाख्यं हि राज्याख्यं श्रीमनोहरपूर्णके ॥१॥
कांडान्यनुक्रमेणैवानन्दरामायणे नव । त्रयोदश सारकांडे सर्गा वाल्मीकिनेरिताः ॥२॥
यात्राकांडे नव ज्ञेया यागकांडेऽपि वै नव । नव ज्ञेया विलासाख्ये जन्मकांडेऽपि वै नव ॥३॥
नव ज्ञेया विवाहाख्ये चतुर्विंशाश्च राज्यके । मनोहराख्ये ज्ञातव्याः सर्गा अष्टादशात्र वै ॥४॥
पूर्णकांडे नव ज्ञेयाः सर्गाः पापहरा नृणाम् । एवं नवोत्तरशतं १०९ सर्गा ज्ञेयाः शुभावहा ॥५॥

वंशी और सूर्यवंशी राजाओंकी मित्रताका वर्णन है ॥ ६० ॥ पाँचवें सर्गमें रामचन्द्रजीके द्वारा कुश आदिके विसर्जनकी कथा है । छठें सर्गमें गङ्गाजीके तटपर रामकी परमधामयात्राका वर्णन है ॥ ६१ ॥ सातवें सर्गमें सूर्यवंशी राजाओंका वर्णन है और आठवें सर्गमें आनन्दरामायणकी अनुक्रमणिका बतलायी गयी है ॥ ६२ ॥ नवें सर्गमें आनन्दरामायणके श्रवणका फल आदि वर्णित है । बस, पूर्णकांड यहीं समाप्त हो जाता है । हे शिष्य ! इस प्रकार मैंने तुमको समस्त आनन्दरामायणकी अनुक्रमणिका बता दी । इस अनुक्रमणिकामात्रके सुननेसे समस्त रामायण सुननेका फल प्राप्त हो जाता है ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ भक्तोंको चाहिए कि नित्य इस रामायणका पूजन करें । अब इसकी पूजामें जो विशेषतायें हैं उन्हें बतलाता हूँ, सुनो ॥ ६५ ॥ सारकांडको भगवान् रामचन्द्रजी, दूसरे कांडको लक्ष्मण तथा तीसरे कांडको सीता समझकर स्थापित करे । इस तरह सात कांडोंमें क्रमशः नवायतनकी स्थापना करके पूजन करे अथवा राज्यकांडके पूर्वार्धभागको रामके स्थानमें तथा उत्तरार्धको सीताके स्थानमें स्थापित करके पूजन करना चाहिए और सारकांडको लक्ष्मणकी जगहपर स्थापित करके पूजन करे । इसी तरह शेष कांडोंको क्रमशः भरत आदिके स्थानमें स्थापित करके पूजन करना चाहिए । इस तरह इस रामायणकी पूजा करनेसे रामनवायतन-पूजनका फल प्राप्त होता है ॥ ६६–६९ ॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पं० रामतेजपाण्डेयकृत-'ज्योत्स्ना'भाषाटीकासहिते पूर्णकाण्डेऽष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

श्रीरामदासने कहा–हे शिष्य ! सार, यात्रा, याग, विलास, जन्म, विवाह, राज्य, मनोहर तथा पूर्णकाण्ड ये ही इस रामायणके नौ काण्ड हैं । सारकाण्डमें वाल्मीकिजीने तेरह सर्ग, यात्राकांडमें नौ सर्ग, जन्मकांडमें नौ सर्ग, विवाहकांडमें नौ सर्ग, राज्यकांडमें चौबीस सर्ग, मनोहरकांडमें अठारह सर्ग और पूर्णकांडमें पापोंको हरण करनेवाले कुल नौ सर्ग हैं । इस तरह इस आनन्दरामायणमें कुल मिलाकर एक सौ नौ (१०९) सर्ग हैं ॥ १–५ ॥

CC0. In Public Domain. Sarayu Trust Foundation Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सारकांडे पंचविंशच्छतं श्लोकाः सत्रिंशकाः । यात्राकाण्डे सप्तशतं पंचत्रिंशोत्तरं स्मृताः ॥ ६ ॥
यागकांडे षट्शतं च पंचविंशोत्तरं शुभाः । विलासाख्ये षट्शतं च साष्टसप्तति संस्मृताः ॥ ७ ॥
जन्मकाण्डे ह्यष्टशताः सद्विश्लोकाः प्रकीर्तिताः । विवाहाख्ये पचशतं कीर्तिताः सत्र्यशीतयः ॥ ८ ॥
सद्वाविंशा राज्यकाण्डे सुषड्विंशच्छतं स्मृताः । एकत्रिंशच्छतं श्लोकाः प्रोक्ताः कांडे मनोहरे ॥ ९ ॥
पूर्णकांडे पंचशतं सप्तसप्ततिमिश्रिताः । आनन्दरामचरिते सहस्राणि हि द्वादश ॥१०॥
द्वे शते च द्विपंचाशच्छ्लोका ज्ञेया मनीषिभिः । एवं शिष्य मया प्रोक्तं यथा पृष्टं त्वया पुरा ॥११॥
रामस्य तोषचरितं श्रवणात्पातकापहम् । पूर्णकांडमिदं शेयं श्रवणात्पुण्यवर्धनम् ॥१२॥
सारकांडश्रवादेव संसारान्मुच्यते नरः । यात्राकांडेन यात्राणां लभ्यते मानवैः फलम् ॥१३॥
यागकांडेन यज्ञानां लभ्यते फलमुत्तमम् । विलासकाण्डश्रवणादप्सरोभिर्विमोदते ॥१४॥
जन्मकांडेन प्राप्नोति नरः पुत्रादिसन्ततिम् । विवाहकाण्डश्रवणाद्रम्या स्त्री लभ्यते भुवि ॥१५॥
राज्यकाण्डेन राज्यं हि मानवैर्भुवि लभ्यते । काण्डं मनोहरं श्रुत्वा लभ्यते मानसेप्सितम् ॥१६॥
पूर्णकाण्डश्रवादेव विष्णोः पूर्णपदं लभेत् । सर्वं विस्तरतः श्रुत्वाऽऽनन्दरामायणं त्विदम् ॥१७॥
सच्चिदानन्दरूपे स लीनो भवति मानवः । रामायणं नरैः श्रुत्वा कार्यमुद्यापनं नरैः ॥१८॥
रामायणे श्रुते दद्याद्रथं हेममयं सुधीः । चतुर्भिर्वाजिभिर्युक्तं तथा क्षौमपताकया ॥१९॥
यंत्रैश्चैव समायुक्तं किंकिणीनादनादितम् । संपादतेऽस्य सम्यग्वै धेनु दद्यात्पयस्विनीम् ॥२०॥
ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाच्छतमष्टोत्तरं सुधीः । एवं कृते विधाने तु महाकाव्यं फलप्रदम् ॥२१॥
रामायणं भवेन्नूनं नात्र कार्या विचारणा । यस्मिन्रामस्य संस्थानं रामायणमथोच्यते ॥२२॥
नरः प्रातः समुत्थायानन्दरामायण पठेत् । यः स कामानवाप्नोति सकलान् दिवि दुर्लभान् ॥२३॥

सारकांडमें २५३० श्लोक, यात्राकांडमें ७३५ श्लोक, यागकांडमें ६२५ श्लोक, विलासकांडमें ६७८ श्लोक, जन्मकांडमें ८०२ श्लोक, विवाहकांडमें ५६३ श्लोक ॥ ५–८ ॥ राज्यकांडमें २६०२ श्लोक, मनोहरकांडमें ३१०० श्लोक और पूर्णकाण्डमें ५७७ श्लोक हैं । इस आनन्दरामायणमें कुल मिलाकर १२३५२ श्लोक हैं ॥ ९ ॥ हे शिष्य ! तुमने हमसे जैसे पूछा, मैंने रामचन्द्रजीको प्रसन्न करने और पापोंको नष्ट करनेवाले रामचरित्रको कह सुनाया । यह पूर्णकाण्ड पुण्यको बढ़ाता है ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ सारकाण्डके सुननेसे प्राणी इस संसारसे मुक्त हो जाता है । यात्राकाण्डका श्रवण करनेसे प्राणी सब तीर्थोंका यात्राका पुण्य प्राप्त करता है ॥ १३ ॥ यागकाण्डके सुननेसे प्राणी यज्ञोंके करनेका फल पाता है और विलासकाण्डके सुननेसे स्वर्गकी अप्सराओंके साथ आनन्द करता है ॥ १४ ॥ जन्मकाण्डका श्रवण करनेसे प्राणी संतति पाता है और विवाहकांड सुननेसे सुन्दर स्त्री मिलती है । ॥ १५ ॥ राज्यकांडके सुननेसे संसारका राज्य प्राप्त होता है, मनोहरकांडको सुननेसे अपनी इच्छित कामना पूर्ण होती है और इस पूर्णकांडको सुननेसे प्राणी साक्षात् विष्णुभगवान्का पूर्णपद पाता है । जो प्राणी समस्त आनन्दरामायण सुन लेता है ॥ १६ ॥ १७ ॥ वह सच्चिदानन्दस्वरूप भगवान्में लीन हो जाता है । जो लोग यह रामायण सुनें, उन्हें इसका उद्यापन भी करना चाहिए ॥ १८ ॥ रामायण सुन लेनेके बाद श्रोता सुनानेवालेको एक ऐसा स्वर्णरथ दे, जिसमें चार घाड़े जुते हों और ऊपर रेशमी पताका फहरा रही हो ॥ १९ ॥ उसमें विविध प्रकारके यन्त्र लगे हों और किंकिण्यादिकी मीठी ध्वनि निकल रही हो । इसके बाद एक दुवार गौ दे ॥ २० ॥ इसके पश्चात् १०८ ब्राह्मणोंको भोजन कराये । ऐसा करनेपर यह महाकाव्य पूर्ण फलदायी होता है । इसमें किसी प्रकारका संदेह न करना चाहिए । जिसमें भगवान्का निवास हो, उसे "रामायण" कहते हैं ॥ २१ ॥ २२ ॥ जो प्राणी सबेरे उठकर इस आनन्दरामायणका पाठ करता है तो देवताओंको भी दुर्लभ उसकी कामनायें पूर्ण होती हैं ॥ २३ ॥ चैत्र शुक्ल नवमीको रामजन्मके अवसर-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चैत्रमासे सिते पक्षे नवम्यां रामजन्मनि। शतमाषसुवर्णेन वायुपुत्रं विधाय च ॥२४॥
एकविंशति माषैर्वा यथाशक्त्याऽथवा नरैः। वायुपुत्रं संविधायानन्दरामायणं त्विदम् ॥२५॥
मौल्यद्वारा लिखित्वान्यैर्लिखित्वा वा स्वहस्ततः। तत्पुनश्चित्ररंगाद्यैर्भूषितं सुविशोधितम् ॥२६॥
वेष्टितं पट्टतूलाद्यैस्ततस्तत्पुस्तकं शुभम्। स्कन्धे श्रीमारुते रूपं पूजितं दक्षिणान्वितम् ॥२७॥
मध्याह्ने ब्राह्मणं पूज्य नानाशास्त्रविशारदम्। तस्मै देयं पुस्तकं तद्वायुपुत्रसमन्वितम् ॥२८॥
एवं यः कुरुते दान तस्य पुण्यं वदाम्यहम्। कोटिभारसुवर्णस्य कुरुक्षेत्रे रविग्रहे ॥२९॥
दानेन पुण्यं यत्प्रोक्तं तस्मादेतच्छताधिकम्। अक्षराण्यत्र यावन्ति संति ह्यानन्दसंज्ञके ॥३०॥
तावद्युगसहस्राणि वैकुण्ठे मोदते नरः। सप्तजन्म भवेद्विप्रस्ततोऽयं वेदपारगः ॥३१॥
रम्यं पवित्रमानन्ददायकं च मनोहरम्। आनन्दसंज्ञकं रामचरितं पुण्यवर्द्धनम् ॥३२॥
रामायणमिदं येऽत्र भक्त्या शृण्वंति मानवाः। पुत्रैः पौत्रैः सुहृद्भिश्च न वियोगं लभन्ति ते ॥३३॥
रामायणमिदं येऽत्र भक्त्या शृण्वंति मानवाः। तेषां स्त्रीभिर्वियोगोऽत्र न कदापि हि जायते ॥३४॥
आनन्दसंज्ञकं पुण्यं याः शृण्वन्त्यत्र वै स्त्रियः। स्वभर्तृभिर्वियोगं ता न गच्छन्ति यथा रमा ॥३५॥
ग्रामं देशान्तरं तीर्थं ये गताश्च चिरं नराः। तेषामागमनार्थं हि पठनीयमिदं सदा ॥३६॥
येषां भावीनि कार्याणि लब्धुं त्वरयते मनः। आनन्दसंज्ञकं तैस्तु पठनीयं प्रयत्नतः ॥३७॥
प्रथमे दिवसे काण्डमेकमेव पठेच्छुभम्। प्रथमं च द्वितीयं च द्वितीये दिवसे पठेत् ॥३८॥
एवं क्रमेण कांडानां वृद्धिः कार्या दिने दिने। नव काण्डानि नवमे दिवसे सम्पठेन्नरः ॥३९॥
अष्ट कांडानि दशमे क्षयस्त्वेकेन वै क्रमात्। सप्तदशदिनैर्ज्ञेयमनुष्ठानमिदं महत् ॥४०॥
अथवा क्रमेण कांडानि प्रथमं प्रथमे पठेत्। द्वितीयं च द्वितीयेऽह्नि नवमं नवमे दिने ॥४१॥
दशमं दशमे प्रोक्तं क्षयः कार्यः क्रमेण हि। सप्तदश दिनैरेतदनुष्ठानं सुखावहम् ॥४२॥

पर सौ मासे हनुमान्जीकी मूर्ति बनवाकर, उसके अभावमें इक्कीस मासे अथवा जैसा अपनी शक्ति हो, उसके अनुसार मारुतिकी मूर्ति बनवानी चाहिए। इसके अनन्तर लिखाई देकर या अपने हाथसे यह ग्रन्थ लिखकर इसमें विविध प्रकारके चित्र बनाये और अच्छी तरह संशोधन करे। फिर दक्षिणाके साथ इस रामायणको रेशमी कपड़ेके टुकड़ेमें बाँधकर हनुमान्जीके काँधेपर रक्खे ॥२४–२७॥ फिर दोपहरके समय इसकी कथा कहनेवाले विविध शास्त्रोंके ज्ञाता ब्राह्मणकी पूजा करे। उसे अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाये और वह हनुमान्जीकी प्रतिमा तथा पुस्तक उस ब्राह्मणको दान दे दे ॥ २८ ॥ इस तरह दान करनेका जो फल होता है, वह मैं तुमको बतलाता हूँ। सूर्यग्रहण लगनेपर कुरुक्षेत्रमें एक करोड़ भार सुवर्णदान करनेसे जो फल प्राप्त होता है, उससे सैकड़ों-गुना अधिक फल इस प्रकार आनन्दरामायणका दान करनेसे प्राप्त होता है। ऐसा करनेपर इस आनन्दरामायणमें जितने अक्षर हैं, उतने हजार युग तक प्राणी वैकुण्ठ लोकमें आनन्द करता है। इसके बाद सात जन्म तक विप्रके घरमें उसका जन्म होता है और इसके बाद वह एक वेदपारगामी ब्राह्मण होता है ॥ २९–३१ ॥ यह आनन्दरामायण पवित्र, रम्य, मनोहर एवं पुण्यवर्द्धक है। जो लोग इसका श्रवण करते हैं, वे अपने पुत्र पौत्र तथा मित्रोंसे कभी भी वियुक्त नहीं होते ॥ ३२ ॥-३३ ॥ जो इस रामायणको भक्तिपूर्वक सुनते हैं, वे अपनी स्त्रियोंसे कभी भी वियुक्त नहीं होते। जो स्त्रियाँ इस रामायणका श्रवण करती हैं, वे लक्ष्मीकी तरह सुखी रहती हुई कभी भी अपने अपने पतिसे वियुक्त नहीं होतीं ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ यदि किसीके घरवाले किसी गाँव, देशान्तर अथवा तीर्थयात्राको गये हों तो उन्हें कुशलपूर्वक लौटानेके लिए इस आनन्दरामायणका पाठ करना चाहिए ॥ ३६ ॥ जिनको अपने किसी भावी कार्यकी विशेष चिन्ता हो और उसे शीघ्र पूर्ण करना चाहते हों तो वे प्रयत्नपूर्वक इस आनन्दरामायणका पाठ करें ॥ ३७ ॥ पहले रोज केवल एक कांड, दूसरे रोज पहला और दूसरा इन दो कांडोंका पाठ करे। तीसरे दिन पहला, दूसरा और तीसरा इन तीनों काण्डोंको, इस क्रमसे बढ़ाता हुआ नवें रोज नवों काण्डोंका पाठ करे ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ फिर आठवें रोज आठ कांड, सातवें दिन

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथवा पृथक् काण्डेषु सर्गवृद्धिक्षयः क्रमात् । एवमेकदिनन्यूनसप्तमासैश्चरेद्व्रतम् ॥४३॥
अथवा प्रथमे सर्वस्त्वेक एव पठेन्नरः । द्वौ सर्गौ च द्वितीयेऽह्नि वृद्धिस्त्वेवं क्रमेण हि ॥४४॥
नवोत्तरशते प्राप्ते दिने कृत्स्नं त्विदं पठेत् । पुनः क्षयोऽनुक्रमतस्त्वेवं सप्तदिनोत्तरैः ॥४५॥
सप्तमासैरनुष्ठानं ज्ञेयं कार्यैकसाधनम् । अथवा प्रथमे चाह्नि सर्गं प्राथमिकं पठेत् ॥४६॥
द्वितीयेऽह्नि द्वितीयश्च तृतीयेऽह्नि तृतीयकम् । नवोत्तरशते प्राप्ते दिने च चरमं पठेत् ॥४७॥
दशोत्तरशते प्राप्ते ह्यष्टोत्तरशताभिधम् । पठेत्सर्गं क्रमेणैव शिष्य सप्तदिनोत्तरैः ॥४८॥
सप्तमासैरनुष्ठानं ज्ञेयं साधारणं नृणाम् । पञ्चानुष्ठानभेदाश्च मयैवं परिकीर्तिताः ॥४९॥
अनुष्ठानसमाप्तौ हि होमः कार्यो यथाविधि । पृथक् श्लोकं समुच्चार्य स्वाहांतं पायसैः फलैः ॥५०॥
नवान्नेनाथवा कार्यो होमो द्विजवरैः सह । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चादनुष्ठानदिनैर्मितान् ॥५१॥
एतत्प्रातः समुत्थायानन्दरामायणं शुभम् । ये पठन्ति नरा भक्त्या ते सुखं प्राप्नुवन्ति हि ॥५२॥
द्वादश्यामपि चैतद्वै पठनीयं प्रयत्नतः । पारायणं नवदिनैः कार्यमस्य सुखावहम् ॥५३॥
कांडं सर्गोऽथवा श्लोकस्त्वानन्दाख्यस्य प्रत्यहम् । न नराः कीर्तयंत्यत्र तेषां जन्म निरर्थकम् ॥५४॥
पुत्रार्थं रतिशालायां शृणोति पुरुषः स्त्रिया । निशायां शयनारूढोऽपुत्री पुत्रमवाप्नुयात् ॥५५॥
नवराशिषु व्रीहीणां ध्यात्वा कार्यं तु विन्यसेत् । पूगीफलानि चत्वारि पूर्वेण कांडमुच्यते ॥५६॥
द्वितीयेन हि सर्गस्तु तृतीयेन फलेन हि । दशमोऽस्य च विज्ञेयश्चतुर्थेन फलेन च ॥५७॥
श्लोको ज्ञेयः पूर्वराशेः सर्वेषां गणनेरिता । सर्वत्रांत्येन श्लोकेन विपरीतं फलं स्मृतम् ॥५८॥
एवं सर्वैर्दर्शनीयः शकुनश्च शुभोऽशुभः । एवं शिष्य त्वया यद्यत्पृष्टं तत्तन्मयोदितम् ॥५९॥

सात काण्ड, छठें दिन छ काण्ड इस क्रमसे घटाता हुआ सत्रह दिनमें यह अनुष्ठान पूर्ण करे। वैसा न कर सके तो पहले रोज पहला, दूसरे दिन दूसरा, तीसरे दिन तीसरा, इस क्रमसे नौ रोजमें नौ काण्ड समाप्त करे। फिर दसवें रोज आठवाँ काण्ड, ग्यारहवें रोज सातवाँ काण्ड, इस क्रमसे घटाता हुआ सत्रह दिनोंमें यह अनुष्ठान पूर्ण करे ॥ ४०-४२ ॥ अथवा प्रत्येक कांडमें सर्गवृद्धिके क्रमसे पाठ करता हुआ सात महीनोंमें अनुष्ठान पूर्ण करे ॥ ४३ ॥ ऐसा भी न कर सके तो पहले रोज पहला सर्ग, दूसरे दिन दूसरा सर्ग, तीसरे दिन तीसरा सर्ग, इस क्रमसे एक सौ नौ दिनोंमें पूर्ण करके फिर उसी क्रमसे घटाये। इस अनुष्ठानमें भी सात ही महीनेका समय लगता है। इस अनुष्ठानको करनेसे एक कार्यकी सिद्धि हो सकती है। अथवा पहले रोज पहला सर्ग, दूसरे दिन दूसरा, तीसरे दिन तीसरा, इस क्रमसे पाठ करता हुआ एक सौ नवें दिन अन्तिम सर्गका पाठ करे ॥ ४४-४७ ॥ फिर एक सौ दसवें दिन एक सौ आठवाँ सर्ग, एक सौ ग्यारहवें दिन एक सौ सातवाँ सर्ग, इस क्रमसे पाठ करता हुआ सात महीनेमें इसे समाप्त करे। इस तरह मैंने अनुष्ठानके पाँच भेद बताये। अनुष्ठान समाप्त हो जानेपर विधिवत् हवन करना चाहिए। होम करते समय ब्राह्मणोंके साथ बैठकर आनन्दरामायणके एक-एक श्लोकका उच्चारण करता हुआ खीर, फल अथवा नये अन्नसे हवन करें। हवन हो जानेपर जितने दिनोंका अनुष्ठान किया हो, उतने ब्राह्मणोंको भोजन कराये ॥ ४८-५१ ॥ जो लोग सबेरे उठकर इस रामायणका पाठ करते हैं, वे सदा सुखी रहते हैं। द्वादशीको तो अवश्य इसका पाठ करना चाहिए। नौ दिनोंमें इसका सुखावह पारायण पूर्ण करना चाहिए ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ जो लोग इस रामायणके एक काण्ड, एक सर्ग अथवा एक श्लोकका भी पाठ नहीं करते, उनका जन्म निरर्थक है ॥ ५४ ॥ जो मनुष्य अपनी स्त्रीके साथ रतिशालामें पुत्रप्राप्तिके लिए इस रामायणका श्रवण करता है, वह यदि पुत्रविहीन हो तो अवश्य पुत्र प्राप्त करता है ॥ ५५ ॥ अब प्रश्नकी रीति बताते हैं। अन्नकी नौ राशियें बनाकर अपने कार्यका ध्यान करे। इससे बाद चारों दिशाओंमें चार पूगीफल (सुपारी) रक्खे। पहली सुपाड़ीमें कांड, दूसरीमें सर्ग, तीसरीमें दशक तथा चौथी सुपाड़ीमें श्लोकका स्थापन करे। पूर्वकी राशिसे सबकी गणना करनी चाहिए। सब जगह जो अन्तिम श्लोक निकले, उससे विपरीत फल होता है ॥ ५६-५८ ॥ इस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आनन्दरामायणमेतदुत्तमं नवोत्तरं सर्गगतं मयेरितम् ।
कांडानि यस्मिन्नव कीर्तितानि ते हे विष्णुदासाघहरं मनोहरम् ॥६०॥
दिने दिने पापचयान्प्रकुर्वन्नरः पठेत् श्लोकमपीह भक्त्या ।
विमुक्तसर्वापचयः प्रयाति रामस्य सालोक्यमनन्यलभ्यम् ॥६१॥
आनन्दरामायणमेतदुत्तमं ये रामदासस्य मुखेन कीर्तितम् ।
श्रीराघवेणैव जनाघनाशनं नानाचरित्रैर्वरकौतुकैर्युतम् ॥६२॥
धन्यः स वाल्मीकिमुनिः कवीश्वरो रामायणं यै शतकोटिसंमितम् ।
कृतं पुरा येन सविस्तरं शुभं यस्माच्च सारं कथितं मया तव ॥६३॥
आनन्दरामायणमेतदुत्तमं श्रीजानकीक्रीडनकौतुकैर्युतम् ।
शृण्वन्ति गायन्ति वदन्ति वाऽपरान्कुर्वन्ति परायणमादराच्च ये ॥६४॥
लभंति पुत्रानतिबुद्धिमत्तरान्स्त्रीश्चापि पौत्रान्परमान्मनोहरान् ।
धनानि धान्यानि पशूंश्च मानवाः श्रीरामचन्द्रस्य पदं प्रयांति ते ॥६५॥
आनन्दसंज्ञं पठतश्च नित्यं श्रोतुश्च भक्त्या लिखितुश्च रामः ।
अतिप्रसन्नश्च सदा समीपे सीतासमेतः श्रियमातनोति ॥६६॥
आनन्दरामायणजाह्नवीयं पापापहंत्री मलिनस्य जंतोः ।
आनन्दरामायणकामधेनुस्त्वियं जनानामतिकामदोग्ध्री ॥६७॥
रामायणं जनमनोहरमादिकाव्यं ब्रह्मादिभिः सुरवरैरपि संस्तुतं च ।
श्रद्धान्वितः पठति शृणुयात्स नित्यं विष्णोः प्रयाति सदनं स विशुद्धदेहः ॥६८॥
नवोत्तरशतैः सर्गै रामकीर्तनमालिकाम् । कृत्वा कण्ठे सुखं तिष्ठ शिष्येमां त्वं मयोदिताम् ॥६९॥

श्रीशिव उवाच

आनन्दरामचरितमिदं स्वीयगुरोर्मुखात् । श्रुत्वा स विष्णुदासस्तं ननामाच्र्य पुनः पुनः ॥७०॥

प्रकार लोगोंको चाहिए कि शुभाशुभ फल जानना हो तो इस शकुनसे जान लें। हे शिष्य ! तुमने हमसे जो कुछ पूछा, वह मैंने बतलाया ॥ ५९ ॥ इस तरह हमने तुमको एक सौ नौ सर्गोंवाली यह उत्तम रामायण सुनायी। इसमें समस्त पापोंको हरनेवाले नौ कांड कहे गये हैं ॥ ६० ॥ दिनों दिन पाप करनेवाला मनुष्य भी यदि इस रामायणके एक श्लोकका भी पाठ करता है तो उसके सब पाप नष्ट हो जाते हैं और वह रामके चरणोंकी सालोक्य मुक्ति प्राप्त करता है ॥ ६१ ॥ इस आनन्दरामायणको श्रीरामदासने सुनाया है, जिसमें रामचन्द्रजी-की अनेक कौतुकमयी कथायें वर्णित हैं ॥ ६२ ॥ कवीश्वर वाल्मीकि ऋषि धन्य हैं कि जिन्होंने सौ करोड़ श्लोंकोमें विस्तारपूर्वक रामचरितका वर्णन किया है। उसीका सारांश मैंने तुम्हें सुनाया है ॥ ६३ ॥ जो लोग श्रीसीताजीकी क्रीडाओंसे युक्त इस आनन्दरामायणका सादर श्रवण और गायन करते अथवा औरोंको सुनाते हैं, वे बड़े बुद्धिमान् लोग पुत्र, स्त्री, विशाल वैभव, अन्न तथा उत्तम पशुओंको प्राप्त करते हैं और अन्तमें रामचन्द्रजीके चरणोंको प्राप्त होते हैं ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ जो प्राणी नित्य इस आनन्दरामायणका पाठ करते, सुनते अथवा लिखते हैं। उनपर रामचन्द्र परम प्रसन्न होकर सीताके साथ उनके हृदयमें विराजमान रहते हुए सब तरहसे उनका कल्याण करते हैं ॥ ६६ ॥ यह आनन्दरामायणरूपिणी गङ्गा पापियोंके समस्त पाप हरती है और आनन्दरामायणरूपिणी यह कामधेनु भक्तोंकी सब कामना पूर्ण करती है ॥ ६७ ॥ यह आनन्दरामायण अति मनोहर और ब्रह्मादि देवताओंसे भी संस्तुत है। जो श्रद्धापूर्वक इसका पाठ करते हैं, वे लोग विशुद्धकाय होकर अन्तमें विष्णुभगवान्के लोकको पाते हैं। हे शिष्य ! एक सौ नौ सर्गोंवाली इस रामकीर्त्तनरूपिणी मालाको धारण करके तुम जहां चाहो, सुखसे रहो ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ श्रीशिवजी बोले—अपने गुरु श्रीरामदासके मुखसे इस

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रामदासः स्वशिष्यायानंदरामायणं प्रिये । एवमुक्त्वा मुनिः संध्यां कर्तुं गोदां गमिष्यति ॥७१॥
एवं देवि तवाग्रेऽद्य मयाऽपि परिकीर्तितम् । आनन्दरामचरितं श्रवणात्पुण्यवर्द्धनम् ॥७२॥
रामकीर्तनमालायां मेरुस्थाने त्वयं महान् । सर्गो मया ते कथितः श्रवणान्मंगलप्रदः ॥७३॥

श्रीपार्वत्युवाच

यदा वाल्मीकिना देव कृतं रामायणं वरम् । तदा क्व रामदासः स संवादोऽस्मिस्त्वयाऽकथि ॥७४॥
क्व तदा विष्णुदासोऽपि संशयो मेऽत्र जायते ।

श्रीशिव उवाच

त्रिकालया ज्ञानदृष्ट्या मुनिनाऽत्र कथांतरे ॥७५॥
उभयोर्भाविसंवादः सोऽपि पूर्वं प्रवर्णितः । यथा रामस्य चरितं रामात्पूर्वं प्रवर्णितम् ॥७६॥
संदेहोऽत्र त्वया नैव कार्यः पर्वतकन्यके । रामदासमुखेनैतद्राघवेणैव वर्णितम् ॥७७॥
आनन्दरामायणमादरेण श्रीरामचन्द्रेण मुनेर्मुखेन ।
तद्रामदासस्य मुदैव चोक्तं भक्तिप्रदं मुक्तिदमेतदत्र ॥७८॥
आनन्दरामायणमादरेण पुत्रे प्रजाते पठनीयमेतत् ।
विवाहकाले व्रतबन्धकाले श्राद्धे पठेत्पर्वणि मंगले च ॥७९॥
आनन्दरामायणमादरेण कारागृहस्थस्य विमुक्तये च ।
उत्पातशांत्यै भयनाशनाय प्रभोः कृपार्थं पठनीयमादरात् ॥८०॥
आनन्दरामायणमादरेण श्रृणोति वा श्रावयते च भक्त्या ।
स स्वीयकामानखिलानवाप्य वैकुंठलोकं खलु गच्छति स्वैः ॥८१॥
आनन्दरामायणतोऽधिकानि न संति तीर्थानि हरेः स्थलानि ।
क्षेत्राणि दानान्यपि पुण्यदानि तथा पुराणान्यथ कीर्तितानि ॥८२॥

प्रकार आनन्दरामायणको सुननेके बाद विष्णुदासने इस ग्रन्थका पूजन करके बारम्बार प्रणाम किया ॥७०॥ हे प्रिये ! रामदास अपने शिष्यको यह आनन्दरामायण सुनाकर सन्ध्या करनेके लिए गोदावरीके तटपर चले गये ॥ ७१ ॥ हे देवि ! जिस तरह रामदासने अपने शिष्यको यह आनन्दरामायण सुनायी थी। उसी तरह मैंने भी पुण्यवर्द्धक इस उत्तम रामचरित्रका वर्णन कर दिया है ॥ ७२ ॥ रामके गुणोंका गान करनेवाली अनेक ग्रंथमालायें हैं। उनमें यह आनन्दरामायण सुमेरुके समान विराजमान है। इस रामायणमें भी जो सर्गोंकी माला है, उसमें यह सर्ग सुमेरुकी तरह है। इसका श्रवण करनेसे सर्वथा मङ्गल होता है ॥ ७३ ॥ श्रीपार्वतीजीने कहा—हे देव ! जब श्रीवाल्मीकिजीने यह रामायण बनायी थी, तब रामदास और विष्णुदास कहाँ थे ? जिनका संवाद आपने मुझे सुनाया। यह मेरे हृदयमें एक महान् संदेह उत्पन्न हो गया है। श्रीशिवजी बोले—हे पार्वती ! वाल्मीकिजीने अपनी त्रिकालदर्शिनी दृष्टिसे इस भावी संवादको पहले ही जान लिया था। इसी कारण संवाद होनेके पहले ही उसका वर्णन कर दिया। जैसे उन्होंने रामजन्मसे पहले रामायण लिख दी थी। हे पर्वतकन्यके ! तुम इस विषयमें किसी प्रकारका संदेह न करो। रामदासके मुखसे साक्षात् रामचन्द्रजीने स्वयं इस चरित्रका वर्णन किया है। उन मुनिके मुखसे स्वयं रामचन्द्रजीने आदरपूर्वक इस रामायणको कहा है। इसीलिए यह इस संसारमें भुक्ति और मुक्ति देनेवाली वस्तु बन गयी है ॥ ७४-७८ ॥ लोगोंको चाहिए कि पुत्र होनेपर, विवाहमें, यज्ञोपवीतमें, श्राद्धमें तथा किसी मङ्गलमय कार्यके समय आनन्दरामायणका पाठ अवश्य करें ॥ ७९ ॥ यदि कोई मनुष्य कारागारमें हो और उसे छुड़ानेकी आवश्यकता आ पड़े अथवा किसी उत्पात तथा भयको शांत करना हो अथवा भगवान्‌की कृपा प्राप्त करनी हो तो आदरपूर्वक इसका पाठ करना चाहिए ॥ ८० ॥ जो मनुष्य आनन्दरामायणका आदरपूर्वक पाठ करते या सुनते-सुनाते हैं, वे अपनी समस्त कामनायें पूर्ण करके अन्तमें वैकुण्ठलोकको जाते हैं ॥ ८१ ॥ आनन्दरामायणसे बढ़कर तीर्थ, भगवन्मन्दिर, क्षेत्र, दान तथा पुराण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आनन्दरामायणमेतदुत्तमं प्रोक्तं मया ते गिरिजे सविस्तरम् ।
त्वं चिंतयस्वाघहरं निरन्तरं मनोहरं लप्स्यसि राघवे मतिम् ॥८३॥

आदौ हत्वा दशास्यं द्विजवचनगुरुत्वेन यात्राश्च यज्ञान्
कृत्वा भुक्त्वातिभोगानवनितलविशंतीं गृहीत्वाऽथ सीताम् ।
लब्ध्वा नानास्नुषास्तास्त्ववनितलगतान्पार्थिवादींश्च जित्वा
कृत्वा नानोपदेशान् गजपुरनिकटे स्वीयलोकं जगाम ॥८४॥

वामे भूमिसुता पुरस्तु हनुमान्पृष्ठे सुमित्रासुतः
शत्रुघ्नो भरतश्च पार्श्वदलयोर्वायव्यकोणादिषु ।
सुग्रीवश्च विभीषणश्च युवराट् तारासुतो जाम्बवान्
मध्ये नीलसरोजकोमलरुचिं रामं भजे श्यामलम् ॥८५॥

आनन्दरामायणहारकोपमं ये पूर्णकाण्डं चरमं नरोत्तमाः ।
पठंति शृण्वंति हरेः परं पदं गच्छंति पूर्णेप्सितमालभंति ते ॥८६॥

आनन्दरामायणमेतदुत्तमं जप्यं पवित्रं श्रवणीयमादरात् ।
यन्मङ्गलानामपि मङ्गलप्रदं स्मरामि नित्यं प्रणमामि सादरम् ॥८७॥

इति श्रीशतकोटिरामचरितांतर्गते श्रीमदानन्दरामायणे वाल्मीकीये पूर्णकाण्डे उमामहेश्वरसंवादे तथा रामदासविष्णुदाससंवादे ग्रंथफलश्रुतिर्नाम नवमः सर्गः ॥ ९ ॥

आदिका श्रवण, इनमेंसे एक भी नहीं है ॥ ८२ ॥ हे गिरिजे ! मैंने विस्तारपूर्वक यह उत्तम आनन्दरामायण तुम्हें सुना दिया। तुम इस पापापहारी चरित्रका निरन्तर मनन किया करो। ऐसा करनेसे तुम्हें सुन्दर भगवद्भक्ति प्राप्त होगी और तुम्हारी बुद्धि रामकी ओर दौड़ पड़ेगी ॥ ८३ ॥ रामने पहले रावणका वध किया। फिर ब्राह्मणके वचनका सम्मान करते हुए तीर्थोंकी यात्रायें कीं और बहुतसे यज्ञ किये। फिर विविध प्रकारके भोगोंका भोग करके पातालमें जाती हुई सीताको उबारा। तदनन्तर पृथ्वीतलके अनेक राजाओंको जीतकर बहुत-सी पतोहुएँ लाये। तत्पश्चात् लोगोंको विविध प्रकारका उपदेश देकर वे हस्तिनापुरीके समीप गंगातटसे अपने परम धामको चले गये ॥ ८४ ॥ जिन रामचन्द्रजीके वाम भागमें सीता, आगे हनुमान्‌जी, पीछे लक्ष्मण, शत्रुघ्न तथा भरत, दायें-बायें एवं वायव्य आदि कोणोंमें सुग्रीव, विभीषण, अङ्गद तथा जाम्बवान् विराजमान हैं। उन सबके मध्यमें नीलकमलकी नाईं सुशोभित श्यामवर्ण श्रीरामचन्द्रजीका मैं भजन करता हूँ ॥ ८५ ॥ जो लोग हारकी भाँति सुन्दर इस अन्तिम पूर्णकाण्डका पाठ करते या सुनते है, वे परम पदको प्राप्त होते हैं और उनकी सब कामनायें पूर्ण हो जाती हैं ॥ ८६ ॥ लोगोंको चाहिए कि इस पवित्र आनन्दरामायणका आदरपूर्वक कीर्तन तथा श्रवण किया करें। क्योंकि यह मङ्गलका भी मङ्गलदाता है। इसी कारण मैं तो नित्य इसका आदरपूर्वक स्मरण और नमन करता हूँ ॥ ८७ ॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितान्तर्गते श्रीमदानन्दरामायणे गोण्डामण्डलान्तर्गतसिसई (टिकरिया) ग्रामनिवासि पं० रामदत्तात्मज पं० रामतेजपाण्डेयकृत'ज्योत्स्ना' भाषाटीकासहिते पूर्णकाण्डे नवमः सर्गः ॥ ९ ॥

॥ इति पूर्णकाण्डं सम्पूर्णम् ॥ ९ ॥

पं० [illegible] दत्त शास्त्री
जहांगीराबाद २०२२६४
बुलन्दशहर (उ० प्र०)

श्रीरामचन्द्रार्पणमस्तु

समाप्तोऽयं ग्रन्थः

श्री हीरालाल द्वारा सत्यशिव प्रेस, दारानगर वाराणसीमें मुद्रित ।
CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection